राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत युवा जागरण का अग्रदूत RNI no. UPHIN45193/24/1/2014

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय

मासिक

वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in, ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com

वर्ष-३, अंक-९ नवी मुंबई जून २०१७ विक्रमी सं. २०७४ युगाब्द ५११७ पृष्ठ-३२ निःशुल्क

देश के सबसे लंबे पुल का उद्घाटन, जिस पर टैंक भी गुजर सकते हैं

गुवाहाटी। प्रधानमंत्री मोदी ने २६ मई को असम और अरुणाचल प्रदेश के बीच ब्रह्मपुत्र नदी पर तैयार ढोला-सादिया पुल का उद्घाटन किया. रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण इस पुल का निर्माण कार्य देरी से पूरा हुआ, लेकिन यह अरुणाचल प्रदेश के साथ सम्पर्क में मील का पत्थर सिद्ध होगा. इस पुल का नाम असम के महान् संगीतकार भूपेन हजारिका के नाम पर रखा गया है।

इस पुल की लंबाई ९.१५ किलोमीटर और चौड़ाई १२.९ मीटर है. इसके दोनों ओर बने सम्पर्क सड़कों को मिलाकर इस परियोजना की कुल लंबाई २८.५ किलोमीटर है. यह ब्रह्मपुत्र नदी से निकलने वाली लोहित नदी पर बना है जो असम के ढोला और अरुणाचल प्रदेश के सादिया को जोड़ता है.

पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) के तहत बने इस पुल का निर्माण २०११ में शुरू किया गया जिस

पर २,०५६ करोड़ रुपये की लागत आई है. इसका निर्माण नवयुग इंजीनियरिंग कंपनी लिमिटेड ने किया है.

यह पुल पूर्वोत्तर के इलाके में सम्पर्क की बड़ी समस्या को हल करेगा. अबतक दोनों प्रदेशों को जोड़ने के लिए केवल नावों का सहारा था जो केवल दिन में चलती थीं और बाढ़ के समय आवागमन बंद हो जाता था. इस पुल से असम के रुपाई में एनएच-३७ और अरुणाचल प्रदेश के एनएच-५२ के बीच की दूरी १६५ किलोमीटर कम हो जाएगी, जबकि यात्रा का समय वर्तमान के छह घंटे की बजाय एक घंटे हो जाएगा. एक अनुमान के अनुसार इस पुल से प्रति दिन १० लाख रुपए के पेट्रोल और डीजल की बचत होगी.

अरुणाचल प्रदेश के सीमांत क्षेत्रों की रणनीतिक जरूरतों की दृष्टि से भी यह पुल अहम है क्योंकि प्रदेश में कई जलविद्युत परियोजनाएं चल रही हैं.

भूकंप को लेकर संवेदनशील पूर्वोत्तर इलाके को देखते हुए हर ५० मीटर पर बने कुल १८२ पिलर को भूकंपरोधी बनाया गया है. ढोला-सादिया पुल ६० टन वजन तक के टैंक का भार सह सकता है.

इस पुल को बनाने में इम्पोर्टेड हाइड्रोलिक का इस्तेमाल किया गया है. पुल के पूरा होने के लिए दिसम्बर २०१५ की समय सीमा थी लेकिन यह परियोजना २०१७ में पूरी हो पाई. ■

प्रधानमंत्री मोदी के 'मन की बात' : योग दिवस और पर्यावरण दिवस पर रहा जोर

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने २८ मई को अपने 'मन की बात' कार्यक्रम की ३२वीं कड़ी में कई मुद्दों पर देश की जनता के सामने अपनी बात रखी। मुस्लिमों को रमजान की शुभकामनाएं देते हुए मोदी ने कहा कि भारत को इस बात पर गर्व है कि यहां सभी संप्रदाय के लोग रहते हैं। प्रधानमंत्री ने लोगों से अपील की कि वे ५ जून को विश्व पर्यावरण दिवस के माध्यम से प्रकृति से जुड़ें। मोदी ने २१ जून को तीसरे योग दिवस पर एक परिवार की तीन पीढ़ियों द्वारा योग करने की तस्वीरें शेयर करने के लिए कहा।

प्रधानमंत्री ने बताया कि देश के ४००० शहरों में अब ठोस और तरल कूड़े के लिए दो तरह के कूड़ेदान रखे जाएंगे। इसके अलावा अपनी सरकार के ३ साल पूरे होने के मौके पर प्रधानमंत्री मोदी ने उन सभी लोगों का धन्यवाद दिया जिन्होंने सर्वे के माध्यम से सरकार के कामकाज की विवेचना की।

प्रधानमंत्री के संबोधन की बड़ी बातें

मैं एक बार अंडमान गया था उस सेलुलर जेल को देखने जहां सावरकर कैद थे। आज वीर सावरकर की जयंती है। सेलुलर जेल को काला पानी क्यों कहा जाता था, यह वहां जाकर ही पता चलता है। वह हमारी आजादी के संघर्ष का तीर्थ स्थान है। आने वाली पीढ़ी को इस संघर्ष के बारे में बताया जाना चाहिए।

वर्सोवा बीच को कई हफ्तों की मेहनत के बाद साफ और सुंदर बना दिया गया है। जम्मू-कश्मीर के रिहायशी ब्लॉक खुले में शौच से मुक्त हुए हैं। सभी नागरिकों को बधाई देता हूं। महिलाओं ने इस आंदोलन को लीड किया। मशाल यात्राएं निकालीं।

सरकार के तीन साल पूरे हुए हैं। ३ साल का लेखा-जोखा चल रहा है। कई सर्वे हुए हैं। सरकार को हर कसौटी पर कसा गया है। मैं इन सारी प्रक्रियाओं को अच्छा संकेत मानता हूं। सब की बातों का महत्व है। ■

जल्दी संभव होंगे रेल से चारधाम के दर्शन, अंतिम सर्वे १३ मई से

देहरादून। हिंदुओं की उत्तराखंड के चार धामों की तीर्थ यात्रा को सरल बनाने के लिए प्रधानमंत्री की महत्वाकांक्षी परियोजना का प्लान जल्दी ही तैयार होगा. रेल मंत्रालय ने सूचना देते हुए कहा कि उत्तराखंड में चार धाम रेलवे संपर्क के लिए ब्राड-गेज एकल ट्रैक का अन्तिम सर्वेक्षण १३ मई से शुरू होगा, जो लगभग एक वर्ष तक चलेगा। रेल मंत्री सुरेश प्रभु ने उत्तराखंड में बद्रीनाथ में इस परियोजना की आधारशिला रखी. रेल मंत्रालय ने कहा कि यह परियोजना रेल विकास निगम लिमिटेड के अन्तर्गत है, जो मंत्रालय के अन्तर्गत एक सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है.

इस चार धाम परियोजना की अनुमानित लागत ४३,२९२ करोड़ रुपये आएगी. इस परियोजना में प्रसिद्ध हिंदू तीर्थ स्थानों बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री एवं यमुनोत्री को देहरादून व कर्णप्रयाग से ३२७ किमी रेलमार्ग से जोड़ा जाएगा.

आरईसी के सर्वेक्षण में २१ नये स्टेशनों, ६१ सुरंगों और ५९ पुलों की सिफारिश की गयी है. सुरंगों की कुल लंबाई २७९ किलोमीटर होगी. इस समय चार धामों के सबसे निकट के रेलवे स्टेशन डोईवाला, ऋषिकेश और कर्णप्रयाग हैं. ■

प्रधानमंत्री मोदी द्वारा पतंजलि अनुसंधान संस्थान का उद्घाटन

देहरादून। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तीन मई को आयुर्वेदिक दवाओं के क्लीनिकल परीक्षण और आधुनिक पैकेजिंग के लिए बनाये गये बाबा रामदेव के पतंजलि योगपीठ के एक शोध संस्थान का उद्घाटन किया और कहा कि यह समग्र स्वास्थ्य देखभाल की ओर एक बड़ा कदम है जो भारत के पारंपरिक उपचार पद्धति की व्यापक स्वीकार्यता का मार्ग प्रशस्त करेगा।

हरिद्वार में इस अनुसंधान संस्थान का उद्घाटन करने के बाद अपने संबोधन में मोदी ने कहा, 'यदि आयुर्वेदिक दवाओं की आधुनिक तरीकों से पैकेजिंग की जाये, तो दुनिया उन्हें तुरंत स्वीकार कर लेगी। मैं समझता हूं कि क्लीनिकल परीक्षण और आयुर्वेदिक दवाओं की पैकेजिंग के लिये आधुनिकतम प्रयोगशाला से लैस उच्च तकनीक वाले शोध संस्थान की स्थापना कर उस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। देश की पारंपरिक चिकित्सा पद्धति और कल्याणकारी विधाओं जैसे योग आदि के लिये आजादी से पहले या बाद में बहुत ज्यादा काम नहीं किये जाने पर खेद व्यक्त करते हुए मोदी ने योग गुरू को इस प्रकार के संस्थान की स्थापना कर देश के पारंपरिक स्वास्थ्य देखभाल पद्धति की महान सेवा करने तथा दुनिया के हर घर में योग को ले जाकर उसे एक आंदोलन में बदलने के लिए बधाई दी। मोदी ने कहा कि आजादी से पहले हमारी पारंपरिक दवा और स्वास्थ्य देखभाल पद्धति के जवाहरात को जानबूझकर छिपाकर रखा गया क्योंकि हम गुलाम देश थे।

इस अवसर प्रधानमंत्री ने योग गुरू के करीबी आचार्य बालकृष्ण द्वारा पिछले दस सालों में संकलित किये गये विश्वकोश 'वर्ल्ड हर्बल इनसाइक्लोपीडिया' का भी विमोचन किया। इस विश्वकोश में देश में पायी जाने वाली सत्तर हजार से भी ज्यादा जड़ी-बूटियों के नमूने हैं। मोदी ने रामदेव और उनके सहयोगी की योग और आयुर्वेद के प्रति अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता फैलाने के लिये सराहना भी की।

पतंजलि योगपीठ ने देश को स्वच्छ, मजबूत और एकजुट बनाने के लिये मोदी द्वारा किये जा रहे अनथक प्रयासों के लिये उन्हें राष्ट्रऋषि की उपाधि भी दी। ■

सार्क देशों को भारत की भेंट : दक्षिण एशिया संचार उपग्रह

श्री हरिकोटा। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने ५ मई को सफलतापूर्वक दक्षिण एशिया संचार उपग्रह का प्रक्षेपण किया जिसका पूरी तरह वित्त पोषण भारत कर रहा है और इसे दक्षिण एशिया के पड़ोसी देशों के लिए 'अमूल्य उपहार' बताया जा रहा है जो क्षेत्र के देशों को संचार और आपदा के समय में सहयोग देगा. इसे आंध्र प्रदेश के श्री हरिकोटा में स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र के दूसरे लांच पैड से प्रक्षेपित किया गया. इस सैटेलाइट के लान्च से दक्षिण एशियाई देशों के बीच संपर्क को बढ़ावा मिलेगा.

जीसैट-९ को भारत की ओर से उसके दक्षिण एशियाई पड़ोसी देशों के लिए उपहार माना जा रहा है. भारत, श्रीलंका, भूटान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल और मालदीव इस प्रोजेक्ट का हिस्सा हैं. पाकिस्तान का अपना अंतरिक्ष कार्यक्रम है इसलिए वह इस प्रोजेक्ट का भाग नहीं बना है.

इसरो द्वारा निर्मित संचार उपग्रह जीसैट-९ को ५० मीटर लंबे स्वदेशी क्रायोजेनिक इंजन वाले जीएसएलवी से प्रक्षेपित किया गया है. प्रक्षेपण की सफलता की घोषणा करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ट्वीट किया, 'दक्षिण एशियाई उपग्रह का सफल प्रक्षेपण ऐतिहासिक क्षण है. इससे समझौते के नये आयाम खुलेंगे. इससे दक्षिण एशिया और हमारे क्षेत्र को काफी लाभ मिलेगा.' उन्होंने कई ट्वीट कर सार्क देशों के नेताओं को भी बधाई दी. ■

कार्टून

वक्त वक्त की बात -- मनोज कुरील

देशभर के १०० पार्कों को योग पार्क घोषित करने की योजना

नई दिल्ली। विशाल योग दिवस समारोहों के लिए तैयारी शुरू करते हुए सरकार ने देश भर में १०० पार्कों को विशेष रूप से योग सम्बंधी गतिविधियों के लिए समर्पित करने की योजना बनायी है.

उत्तरप्रदेश की राजधानी लखनऊ इस साल २१ जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के मुख्य कार्यक्रम की मेजबानी करेगा जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हिस्सा लेंगे.

विशाल समारोह में भारतीय मिशनों के अपने देशों में गतिविधि समन्वित करने के साथ करीब १५० देशों के साथ भागीदारी की उम्मीद है. पेरिस में एफिल टावर, लंदन में ट्राफल्गर स्कवायर और न्यूयार्क में सेंट्रल पार्क जैसे स्थलों पर योग दिवस मनाया जाएगा.

आयुष राज्य मंत्री श्रीपद यसो नाइक ने कहा, 'यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि दुनिया ने योग के क्षेत्र में भारत की श्रेष्ठता मानी है. ■

सुभाषित

साधुभ्यस्ते निर्वर्तन्ते पुत्राः मित्राणि बान्धवाः।
ये च तैः सह गन्तारस्तद्धर्मात्सुकृतं कुलम्।। (चाणक्य नीति)

अर्थ- जिन साधुओं से पुत्र, मित्र तथा बन्धु अपना सम्बन्ध समाप्त कर लेते हैं उन्हीं साधुओं की संगति से अनेक कुल व जन धार्मिक होकर पुण्यभागी बन जाते हैं।

पद्यार्थ- पुत्र मित्र अरु बंधुगण, दें साधु को छोड़।
उसी साधु के संग ते, सुधरें कई करोड़।। (आचार्य स्वदेश)

सम्पादकीय

तीन वर्ष की सुहानी यात्रा

२६ मई को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की केन्द्रीय सरकार ने अपने कार्यकाल के तीन वर्ष पूरे कर लिये और अब चौथे वर्ष में पदार्पण किया है। जैसा कि स्वाभाविक है, पक्ष और विपक्ष सभी इस अवसर पर उनके कार्य का मूल्यांकन कर रहे हैं। जहाँ एक ओर सरकार ने अपनी उपलब्धियों के दावे किये हैं, वहीं दूसरी ओर विपक्ष के अनुसार सरकार ने तीन साल में कुछ किया ही नहीं। आश्चर्य यह है कि ऐसी आलोचना करने वालों में वे लालू प्रसाद यादव और अखिलेश यादव भी शामिल हैं जिनका अपने-अपने प्रदेशों में कार्यकाल केवल भ्रष्टाचार और गुंडागिर्दी के लिए एक दुःस्वप्न की तरह याद किया जाता है।

हम यह नहीं कह रहे हैं कि मोदी जी ने तीन वर्ष में देश की समस्याओं को हल कर दिया है और देशवासियों के वे अच्छे दिन आ गये हैं जिनकी घोषणा वे तथा अन्य भाजपा नेता अपने चुनावी भाषणों में किया करते थे। लेकिन इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि उन्होंने देश की अधिकांश समस्याओं को जड़-मूल से समाप्त करने की ओर सुदृढ़ पग बढ़ाये हैं।

हमारे देश की दो मुख्य समस्यायें भ्रष्टाचार और बेरोजगारी रही हैं। इनमें से मोदी सरकार को उच्च स्तर पर भ्रष्टाचार मिटाने में अभूतपूर्व सफलता मिली है। उनके तीन वर्ष के कार्यकाल में भ्रष्टाचार का एक भी मामला नहीं हुआ है। जबकि उनसे पहले की सरकारें भ्रष्टाचार और लाखों करोंड रुपयों के घोटालों के कारण बदनाम थीं। एक निष्पक्ष विचारक ने लिखा भी है कि सरकार को भ्रष्टाचार से मुक्त रखना भी कोई छोटी उपलब्धि नहीं है। इससे कम से कम यह तो पक्का हुआ है कि सरकार के पास जो भी आर्थिक संसाधन हैं वे समस्त जनता की सेवा और विकास कार्यों में ही लगेंगे, उनसे किसी नेता या परिवार या पार्टी का कोष नहीं भरेगा।

बेरोजगारी को दूर करने की दिशा में भी सरकार ने बहुत ठोस कार्य किया है। यह नहीं कि सरकारी नौकरियों की संख्या बढ़ गयी हो। वास्तव में यह संख्या कम हुई है क्योंकि बहुत से सरकारी कर्मचारी अवकाश प्राप्त कर चुके हैं और उनके स्थानों पर नई भर्तियाँ नहीं हुई हैं। लेकिन सरकार ने मुद्रा योजना जैसी अनेक योजनाएं चलाकर और स्टार्ट-अप इंडिया/मेक इन इंडिया के अभियान चलाकर यह तो सुनिश्चित किया ही है कि उनसे बड़ी संख्या में बेरोजगारों को स्वरोजगार प्राप्त होगा। हालांकि इन योजनाओं के ठोस परिणाम आने अभी बाकी हैं, लेकिन अभी तक जो हुआ है वह भी कम नहीं।

फिर भी कुछ समस्यायें ऐसी हैं जिनको हल करने की दिशा में बहुत कुछ किया जाना बाकी है। मुख्यतः आतंकवाद, नक्सलवाद, और कश्मीर ऐसी समस्यायें हैं जिनसे भारत की जनता बहुत क्षुब्ध है। यह तो नहीं कहा जा सकता कि इनको हल करने में सरकार विफल रही है, लेकिन यह सत्य है कि जितना किया जाना था उतना नहीं हो पाया है। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि नरेन्द्र मोदी जी के सुदृढ़ और दूरदर्शी नेतृत्व में देश इन समस्याओं को भी हल करके रहेगा। देश का विश्वास मोदी जी में आज भी कम नहीं हुआ है। इसका पता उन अनेक सर्वेक्षणों से चल रहा है जिनसे मोदी जी की लोकप्रियता बने रहने के निष्कर्ष निकले हैं। जन मानस में मोदी जी के प्रति विश्वास बने रहना भी अपने आप में एक अभूतपूर्व उपलब्धि है।

-- विजय कुमार सिंघल

आपके पत्र

हमेशा की तरह अच्छा अंक। **-- अंजु गुप्ता**

बेहतरीन अंक, सुंदर समायोजन। **-- सुवर्णा परतानी**

बहुत ही सुंदर संस्करण लाजवाब कृतियाँ सभी रचनाकारों को बधाई और जय विजय टीम को हृदय से साधुवाद! **-- नीरज अवस्थी**

जय विजय का नवीन अंक अति सराहनीय है। सभी रचनाकारों की रचनाएं उत्तम हैं। यह पत्रिका विजय भैया के संरक्षण में दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति कर रही है और करती रहेगी। सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई! **-- निशा गुप्ता**

जय विजय पत्रिका का नवीन अंक शानदार है एंव सभी रचनाकारों की रचनाएं बेहतरीन हैं, सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई! **-- जय कृष्ण चांडक**

प्रतिमाह की तरह इस अंक में भी सुंदर प्रकाशन के साथ-साथ गुणीजनों की रचनाओं को पढ़कर कलम को बहुत ही प्रेरणा मिली, सभी को हार्दिक बधाई! **-- महातम मिश्र**

आपकी गुणवत्तापूर्ण पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। अपनी जीवन संध्या में पत्रिका से प्राप्त जानकारी शिक्षण संस्थाओं में बच्चों को समय कैरियर जीवन मूल्य प्रबंधन पर वार्ता देते समय उपयोगी होती हैं। कृतज्ञ हूँ। **-- दिलीप भाटिया**

निवेदन है कि पत्रिका में रचनाओं की गुणवत्ता का ध्यान रखते हुए ही उन्हें प्रकाशित किया जाए। स्तरहीन रचनाओं के प्रकाशन से बचा जाए। स्तरहीन रचनाएं जब प्रकाशित होंगी तो श्रेष्ठ रचनाकार पत्रिका के स्तर को देखकर प्रकाशन के लिए रचनायें भेजना कम पसन्द करेंगे। अनेक ऐसी रचनायें पत्रिका में प्रकाशित हैं जिनमें व्याकरण, मात्रिक जैसे गम्भीर दोष हैं। ग़ज़लों में तो बहर का गम्भीर दोष बहुत मात्रा में है। कृपया पत्रिका के स्तर पर ध्यान देने का कष्ट करें। **-- नवीन मणि त्रिपाठी**

मेरा तो कोई लेख ही नहीं आया मई के अंक में और कई लेखक एवं कवियों के दो-दो लेख आये हैं। **-- पंकज 'प्रखर'**

बहुत बढ़िया प्रयास! बहुत सारे पहचाने रचनाकारों को देखकर आनंद दुगुना हो गया, मेरी रचना को भी स्थान देने का शुक्रिया! **-- अर्चना ठाकुर**

शानदार अंक की सुंदर प्रस्तुति! **-- डा डी एम मिश्र**

पत्रिका पढ़ना अच्छा लग रहा है. पत्रिका में निरंतर निखार आता जा रहा है, साथ ही रचनाओं के चुनाव में आपकी मेहनत तारीफ योग्य है! **-- लीला तिवानी**

शानदार अंक। हार्दिक बधाई। **-- राजकुमार धर द्विवेदी, डॉ कमलेश**

सदा की तरह बहुत ही सुंदर अंक साहित्य की निस्वार्थ सेवा करने के लिए आपको नमन एव बहुत बहुत शुभकामनाएं विजय भाई! **-- प्रिया वच्छानी**

मई अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। **-- इन्द्रप्रस्थ विश्व संवाद केन्द्र, उत्तम सिंह व्यग्र, वेदान्त विप्लव, अरुण निषाद**

हमारी रचना को स्थान देने के लिए आभार। **-- श्याम स्नेही, अनुराग कुमार, अनिल कुमार सोनी, विनय कुमार तिवारी, राजीव चौधरी, प्रीति श्रीवास्तव, नवीन कुमार जैन, डॉ रमा द्विवेदी, शुभा शुक्ला मिश्रा 'अधर'**

(सभी कृपालु पत्र-लेखकों का हार्दिक आभार! - सम्पादक)

उपवास

भरत मल्होत्रा

बहुत दिनों से एक संदेश रोज कहीं ना कहीं से आता है कि 'अगर उपवास करने से भगवान खुश होते तो इस दुनिया में बहुत दिनों तक खाली पेट रहनेवाला भिखारी सबसे सुखी इन्सान होता, उपवास अन्न का नहीं विचारों का करें'। पहली ही ष्टि में बहुत प्रभावित करने वाला संदेश लगता है सामाजिक सरोकारों से सराबोर लेकिन क्या वाकई में ऐसा है? मैं सोचता हूँ कि मन के साथ अन्न का उपवास भी अति आवश्यक है। पहली बात तो भूखा रहने में और उपवास करने में जमीन-आसमान जितना अंतर है। आदमी मजबूरी में भूखा

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

निर्भया को मिला न्याय

जवाहर लाल सिंह

निर्भया कांड पर दोषियों की अपील पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट के जज बहुत कठोर दिखे। उन्होंने एक मत से इस अपील को रद्द कर दिया।

सुप्रीम कोर्ट ने १६ दिसंबर २०१२ को दिल्ली में निर्भया के साथ हुए गैंगरेप के चारों आरोपियों की फांसी की सजा को बनाये रखा है। अपने लम्बे फैसले में कोर्ट ने वे १० आधार बताए जिनके कारण चारों दोषियों को फांसी की सजा दी गई। कोर्ट ने बहुत तीखी टिप्पणी कर इस घटना को देश में सदमे की सुनामी बताया। वहीं दोषियों को राक्षसी दरिंदों से कम नहीं बताया।

निर्भया केस पर सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणियाँ- चारों आरोपियों ने निर्भया के साथ जिस तरह का बर्बरता पूर्ण व्यवहार किया उससे सिद्ध होता है कि यह अपने तरह की अनोखी घटना है। यह मामला रेयरेस्ट आफ रेयर है। केस की मांग थी कि न्यायपालिका समाज के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत करे। इस मामले में कोई रियायत नहीं दी जा सकती। निर्भया कांड सदमे की सुनामी थी। जिस तरह से अपराध हुआ है वह एक अलग दुनिया की कहानी लगती है। दोषियों ने हिंसा, सेक्स की भूख की वजह से अपराध किया। वारदात को क्रूर और राक्षसी तरीके से अंजाम दिया गया। उम्र, बच्चे, बूढ़े मां-बाप ये कारक अपराधियों को राहत की कसौटी नहीं हैं। इस अपराध ने समाज की सामूहिक चेतना को हिला दिया। पीड़िता का मृत्यु पूर्व बयान संदेह से परे है।

अदालत ने विवेकानंद का उल्लेख करते हुए कहा कि देश के विकास को मापने का सबसे अच्छा थर्मामीटर यह है कि हम महिलाओं के साथ कैसे पेश आते हैं।

तीन जजों की बेंच में से एक जज भानुमति का फैसला शेष दो जजों से अलग है। जस्टिस भानुमति, जिनका फैसला अन्य जजों से अलग रहा, उन्होंने कहा कि हमारे यहां एजुकेशन सिस्टम ऐसा होना चाहिए जिससे कि बच्चे महिलाओं के साथ कैसा व्यवहार करना है यह सीख सकें। जस्टिस भानुमति ने स्वामी विवेकानंद का एक कथन देते हुए कहा कि कैसे परंपराएं ज्ञान और शिक्षा के साथ मिलकर समाज में महिलाओं को न्याय दिलाने का काम करती हैं।

२०१२ में जब यह मामला सामने आया तब देशभर में इस मामले को लेकर जबरदस्त गुस्सा फूट पड़ा था. विदेशों में भी इस बलात्कार कांड को लेकर निंदा हुई थी. इस मामले में दोषियों की फांसी की सजा पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले का सभी को इंतजार था. सुप्रीम कोर्ट का फैसला आते ही सोशल मीडिया पर प्रतिक्रियाओं की बाढ़ आ गई.

ट्विटर पर लोग इस फैसले का स्वागत कर रहे हैं, कई लोगों का कहना है कि अब निर्भया को न्याय मिला है. दीक्षा वर्मा ने लिखा है कि कभी कभी लोकतंत्र को सख्त और दयाहीन होना चाहिए, नहीं तो अपराधियों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती जाएगी. सोनम महाजन ने लिखा है, 'निर्भया के बलात्कारी को फांसी की सजा मिलनी चाहिए थी, इससे कम कोई सजा नहीं हो सकती थी. और उन सभी में वह कथित नाबालिग मोहम्मद अफरोज भी शामिल है.'

तहसीन पूनावाला लिखते हैं, 'निर्भयाकांड के बाद आज भी कई महिलाओं का बलात्कार हो रहा है, उनका शोषण हो रहा और न्याय नहीं दिया जा रहा. मुझे उम्मीद है कि आज हम उन सभी तक पहुंच पा रहे हैं.'

अभिषेक सिंह ने लिखा है कि फांसी ही एक ऐसा तरीका है जिससे रेप रोके जा सकते हैं. पुरुषों को महिलाओं के साथ कुछ भी करने से पहले मौत का डर होना चाहिए. वहीं सिद्धी माथुर लिखती हैं कि निर्भया को न्याय मिला लेकिन आधा. सुप्रीम कोर्ट को उस क्रूर नाबालिग मोहम्मद अफरोज को भी सजा देनी चाहिए.

किशोर भट्ट लिखते हैं कि नाबालिग को भी फांसी देनी चाहिए. अगर वो इतना बड़ा था कि रेप कर सके तो सजा भी काट सकता है. वहीं कवि कुमार विश्वास ने लिखा है, 'बहन निर्भया हम शर्मिंदा हैं कि हम सबके रहते ऐसा हुआ. ईश्वर तुम्हारी आत्मा को संतोष दे कि निर्मम गुनाहगारों को आखिर सजा मिली.'

'जिन लोगों ने मेरे साथ ये गंदा काम किया है उन्हें छोड़ना मत!' ये वाक्य डीसीपी साउथ छाया शर्मा को निर्भया ने तब कहे थे जब छाया उससे पहली बार सफदरजंग अस्पताल में मिलने गई थीं. छाया ने मीडिया से बात करते हुए कहा, 'दिल्ली पुलिस ने जो सबूत पेश किए हैं वो एकदम ठोस हैं।' सप्रीम कोर्ट के तीन जजों ने फैसला देते हुए कहा, 'इन सभी आरोपियों को सजा निर्भया के कारण ही मिली है. वह अपने बयान पर निरंतर कायम रही!'

छाया को आज भी वो दिन याद है जब वह २३ साल की निर्भया से पहली बार मिली थी, 'उसकी हालत बहुत खराब थी. उससे बोला नहीं जा रहा था लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी।'. निर्भया ने पहला अपना बयान अस्पताल के डॉक्टर को दिया, फिर एसडीएम और फिर जज के सामने. तीनों बार वह अपने बयान पर कायम रही. उसने ऐसी छोटी-छोटी बातें अपने बयान में बोली जो अन्त में पुलिस के लिए बहुत अहम साबित हुईं. निर्भया की मौत के पहले के इन बयानों को डाइंग डिक्लेरेशन माना गया. निर्भया की मौत इस हादसे के १३ दिन बाद सिंगापुर में हुई थी.

अपराध होने के १८ घंटों के अंदर पहले आरोपी बस ड्राइवर रामसिंह को गिरफ्तार किया गया। उससे पूछताछ के बाद सभी आरोपी गिरफ्तार कर लिए गए. आज जब सप्रीम कोर्ट ने पुलिस की जांच पर मुहर लगाते हुए आरोपियों को सजा सुनाई, तब जो पुलिस वाले इस तफ्तीश से जुड़े थे उनके चेहरों से परेशानी कुछ समय के लिए गायब हो गई. सब अपनी की हुई तफतीश पर फक्र करने लगे. 'हमने इस मामले में आरोप पत्र सिर्फ १८ दिन में कोर्ट में पेश किया था. वो आरोप पत्र इतना पक्का था कि तीन अदालतों ने उसको सही ठहराया. अगर उसमें कोई खामी होती तो सुप्रीम कोर्ट आज हमें ही टांग देती.'

इसमें कोई दो राय नहीं कि लगभग साढ़े चार सालों बाद आखिरी फैसला सुप्रीम कोर्ट से आ गया, जिसका सबको बेसब्री से इन्तजार था. लेकिन तब से अब तक पूरे देश में लाखों घटनाएँ हो चुकी हैं जिनमे औसतन सिर्फ १० प्रतिशत को ही सजा मिल पाती है वह भी काफी जद्दोजहद के बाद. काफी घटनाएँ तो ऐसे माहौल में घटित हो जाती हैं जिनकी रिपोर्टिंग तक नहीं होती. तीन साल तक की बच्ची से लेकर वृद्धा तक के साथ ऐसे हादसे होते रहते हैं और समाज सुधरने का नाम नहीं ले रहा. एक तो वातावरण ही इतना विषाक्त हो गया कि हम सभी आध्यात्म और सात्विकता से दूर भागते चले जा रहे हैं. दूसरा स्त्रियों के प्रति पुरुषवादी सोच शुरू से हावी रहा है. विधाता ने स्त्रियों को शारीरिक रूप से कमजोर बनाया है और थोड़ी वे मन से भी कमजोर होती हैं जिसका कारण हमारा सामाजिक पारिवारिक वातावरण है.

कुछ तो करना होगा ताकि ऐसे आपराधिक घटनाएँ घटें ही नहीं. हमारे बुद्धिजीवी, मनीषी, ऋषि, योगी, नीतिनिर्धारक, विधिवेत्ता, सामाजिक कार्यकर्ता, नेता सभी को मिलकर इस पर गंभीर रूप से विचार करने की आवश्यकता है. केवल नारे और भाषणबाजी से तो कुछ होता जाता नहीं है. धरातल पर काम होने चाहिए. उत्तर प्रदेश के योगी जी ने एंटी-रोमियो स्क्वाड के ही जरिये कुछ कदम उठाया तो है जिससे काफी लड़कियां और महिलाएं राहत महसूस कर रही हैं. सभी राज्य सरकारों को ऐसे कदम उठाने चाहिए और शराब आदि नशा पर तो प्रतिबन्ध लगाने ही चाहिए क्योंकि ज्यादातर अपराध शराब के नशे में होते हैं.

हमें न्यायाधीशों, पुलिसकर्मियों, डॉक्टरों और वकीलों के प्रति सम्मान व्यक्त करना चाहिए, जिन्होंने निर्भया को न्याय दिलाने में अपनी जान लगा दी. ■

हायकु

किसान

१. किरणें आई/खेतों को यूँ जगाए/जैसे हो माई
२. सूरज जागा/पेड़ पौधे मुस्काए/खिलखिलाए
३. झुलसा खेत/उड़ गई चिरैया/दाना न पानी
४. दुआ माँगता/थका हारा किसान
नभ ताकता
५. जादुई रूप/चहूँ ओर बिखरा
आँखों में भरो
६. आसमाँ रोया/खेतिहर किसान
संग में रोए

-- डॉ जेन्नी शबनम

मनु की छवि चमकाएगा संघ

डॉ विवेक आर्य

हिंदी समाचार पत्र नवभारत टाइम्स के दिल्ली संस्करण में दिनांक ६ मई २०१७ को यह समाचार छपा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से सम्बंधित एक संगठन 'संस्कार भारती' के अमीर चंद द्वारा मनुवाद के सम्बन्ध में प्रचलित भ्रांतियों के निवारण करने का संकल्प लिया गया है। हम उनके इस निर्णय का स्वागत करते हैं। मनुस्मृति के सम्बन्ध में प्रचलित सभी भ्रांतियों का निवारण करने के लिए स्वामी दयानन्द के दृष्टिकोण को समझना अत्यंत आवश्यक है।

स्वामी दयानन्द एवं आर्यसमाज का मनुस्मृति के सम्बन्ध में सम्बंधित दृष्टिकोण-

१. मनुस्मृति सृष्टि के प्रथम आदि राजा मनु द्वारा रचित प्रथम संविधान है।

२. स्वामी दयानन्द आधुनिक भारत के प्रथम ऐसे विचारक हैं जिन्होंने यह सिद्ध किया कि वर्तमान में उपलब्ध मनुस्मृति मनु की मूल कृति नहीं है। उसमें बड़े पैमाने पर मिलावट हुई है। यही मिलावट मनुस्मृति के सम्बन्ध में प्रचलित भ्रांतियों का मूल कारण है।

३. मनुस्मृति पर सबसे बड़ा आक्षेप जातिवाद को समर्थन देने का लगता है। जबकि सत्य यह है कि मनुस्मृति जातिवाद की नहीं अपितु वर्ण व्यवस्था की समर्थक है। वर्ण का निर्धारण शिक्षा की समाप्त होने के पश्चात निर्धारित होता था न कि जन्म के आधार पर होता था। मनु के अनुसार एक ब्राह्मण का पुत्र अगर गुणों से रहित होगा तो शूद्र कहलायेगा और अगर एक शूद्र का पुत्र ब्राह्मण गुणों वाला होगा तो ब्राह्मण कहलायेगा। यही व्यवस्था प्राचीन काल में प्रचलित थी। प्रमाण रूप में मनुस्मृति ९/३३५ श्लोक देखिये। शरीर और मन से शुद्ध-पवित्र रहने वाला, उत्कृष्ट लोगों के सानिध्य में रहने वाला, मधुरभाषी, अहंकार से रहित, अपने से उत्कृष्ट वर्ण वालों की सेवा करने वाला शूद्र भी उत्तम ब्रह्म जन्म और द्विज वर्ण को प्राप्त कर लेता है।

४. मनुस्मृति पर दूसरा बड़ा आक्षेप नारी जाति को निम्न दर्शाने का लगता है। सत्य यह है कि मनुस्मृति नारी जाति को पुरुष के बराबर नहीं अपितु उससे श्रेष्ठ मानती है। संसार की किसी भी धर्म पुस्तक में नारी के विषय में ऐसा विधान नहीं है। प्रमाण रूप में मनुस्मृति ३/५६ श्लोक देखिये। जिस समाज या परिवार में स्त्रियों का आदर सम्मान होता है, वहां देवता अर्थात् दिव्यगुण और सुख-समृद्धि निवास करते हैं और जहां इनका आदर सम्मान नहीं होता, वहां अनादर करने वालों के सभी काम निष्फल हो जाते हैं भले ही वे कितना ही श्रेष्ठ कर्म कर लें, उन्हें अत्यंत दुखों का सामना करना पड़ता है।

५. मनुस्मृति पर तीसरा आक्षेप यह है कि मनुस्मृति पशु हिंसा की समर्थक है। यह भी एक भ्रान्ति है। मनुस्मृति ५/१५ का प्रमाण देखिए। अनुमति देने वाला, शस्त्र से मरे हुए जीव के अंगों के टुकड़े-टुकड़े करने वाला, मारने वाला, खरीदने वाला, बेचने वाला, पकाने वाला, परोसने या लाने वाला और खाने वाला यह सभी जीव वध में घातक हिंसक होते हैं।

६. मनुस्मृति हमें धर्म-अधर्म, पंच महायज्ञ, चतुर्थ आश्रम व्यवस्था, समाज व्यवस्था के विषय में मार्गदर्शन करता है। इसलिए वह आज भी प्रासंगिक है।

७. वर्तमान मनुस्मृति में २६८५ श्लोकों में से १४७१ श्लोक मिलावटी और १२१४ श्लोक ही मौलिक हैं। यही मिलावटी श्लोक मनु स्मृति के विषय में भ्रांतियों का कारण है। इसलिए इन मिलावटी श्लोकों को हटाकर सत्य श्लोकों को स्वीकार कीजिये। डॉ भीम राव अम्बेडकर द्वारा मिलावट किये हुए १४७१ श्लोकों में से ८८ प्रतिशत श्लोकों का प्रयोग अपने लेखन में हुआ है। इससे यही सिद्ध होता है कि डॉ अम्बेडकर की मनुस्मृति के विषय में मान्यताएं मिलावटी और अशुद्ध मनुस्मृति पर आधारित हैं।

८. आर्यसमाज के विद्वान् डॉ सुरेंदर कुमार द्वारा मनुस्मृति के विशुद्ध स्वरूप का भाष्य करके इस कार्य को जनकल्याण के उद्देश्य से प्रकाशित किया गया है। हमारे देश के सभी बुद्धिजीवियों को निष्पक्ष होकर उसे स्वीकार करना चाहिए।

मनुवाद, ब्राह्मणवाद चिल्लाने से कुछ नहीं होगा। बुद्धिपूर्वक यत्न करने में ही सभी का हित है। ■

पथरी की समस्या और समाधान

विजय कुमार सिंघल

आजकल पथरी की समस्या आम हो चली है। पथरी प्रायः दो जगह होती है- गुर्दे (किडनी) में या पित्ताशय (गाल ब्लैडर) में। गुर्दे की पथरी की बड़ी वजह खान-पान की गलत आदतें होती हैं। जब नमक एवं अन्य खनिज पदार्थ जो हमारे मूत्र में होते हैं एक दूसरे के सम्पर्क में आकर और पानी की कमी से मूत्र गाढ़ा हो जाता है तो किडनी के अन्दर छोटे-छोटे पत्थर जैसे कठोर कण बन जाते हैं जिन्हें पथरी के रूप में जाना जाता है। यह अलग-अलग आकार की हो सकती हैं। कुछ पथरी रेत के दानों की तरह छोटे आकार की होती हैं, तो कुछ बड़े दानों के आकार की।

आम तौर पर छोटी-मोटी पथरी मूत्र के माध्यम से शरीर से निकल जाती हैं, लेकिन जो बड़े आकार की होती हैं, वे बाहर नहीं निकल पातीं और मूत्र बाहर निकालने में भी बाधा डालती हैं। इससे बहुत दर्द उत्पन्न होता है। गुर्दे की पथरी का दर्द कभी-कभी सहन करना भी कठिन हो जाता है। इसमें पेशाब करने में बहुत कठिनाई होती है और कई बार पेशाब रुक जाता है।

पित्त की थैली (गाल ब्लैडर) पेट के दायें ऊपरी भाग में लिवर के ऊपर चिपकी होती है। गॉल ब्लैडर में पथरी बनने से बहुत भयंकर पीड़ा होती है। पित्ताशय की पथरी दो प्रकार से बन सकती है- १. कोलेस्ट्रोल से या २. पिगमेंट से। अस्सी प्रतिशत मामलों में पित्त की पथरी कोलेस्ट्रॉल से बनती है।

पथरी किसी भी उम्र में हो सकती है। आम तौर पर यह रोग ३० से ६० वर्ष तक की उम्र में होता है। महिलाओं में यह रोग पुरुषों की तुलना में कम होता है। बच्चों और वृद्धों में प्रायः मूत्राशय की पथरी अधिक बनती है जबकि वयस्कों में अधिकतर गुर्दो और मूत्रनली में पथरी बनती है।

यदि पथरी का समय पर इलाज न किया जाये, तो इसका रक्तचाप और हृदय पर बुरा प्रभाव पड़ता है। लिवर के खराब होने का खतरा भी बढ़ जाता है। इसलिए पथरी होने पर लापरवाही न करें और इसका सही इलाज करें, ताकि भविष्य में पथरी न बन सके।

पथरी के आयुर्वेदिक उपचार

१. पथरी होने पर एपल साइडर विनिगर (सेब का सिरका) दो चम्मच और एक चम्मच शहद को एक कप गर्म पानी में मिलाकर दिन में दो तीन बार लें। इससे खुलकर पेशाब होता है और यह पथरी को जल्दी ही गलाकर बाहर निकाल देता है। १५-२० दिनों में ही पथरी से छुटकारा मिल जाता है।

२. नारियल का पानी पीने से पथरी में बहुत लाभ होता है। इसलिए पथरी होने पर नारियल पानी प्रतिदिन पीना चाहिए।

३. करेले का रस पथरी में रामबाण की तरह काम करता है। इसमें मैग्नीशियम और फॉस्फोरस नामक तत्व होते हैं, जो पथरी बनने से रोकते हैं। पथरी होने पर दो चम्मच करेले का रस सुबह-शाम पीना चाहिए। इससे पथरी टूटकर पेशाब के साथ बाहर निकल जाती है।

४. आँवला पथरी में बहुत लाभ करता है। नित्य प्रातः आँवले का चूर्ण मूली के साथ खाने पर मूत्राशय की पथरी निकल जाती है।

५. पथरी में पत्थरचट्टा के पत्ते अत्यंत लाभदायक हैं। पथरी होने पर सुबह-शाम पत्थरचट्टा के ४-५ पत्ते साफ करके चबा-चबाकर खायें या इनका रस निकालकर पियें। इससे किसी भी तरह की पथरी गलकर निकल जाती है। इसके पत्तों का काढ़ा बनाकर भी लिया जा सकता है।

६. पथरी होने पर ७ दिन तक सुबह एक गिलास

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

आज यादों को करीने से सजाया जाए
इन दीवारों को कोई किस्सा सुनाया जाए
इश्क कैसे बनाता है किसी बुत को खुदा
ये करिश्मा भी आज करके दिखाया जाए
तीरगी गम की लगती है जानलेवा मुझे
और कुछ नहीं तो दिल को जलाया जाए
मार डाले ना कहीं लफ्जों को ये तिश्नालबी
तुम्हीं पे लिख के शेर तुमको सुनाया जाए
दोस्त समझा था जिन्हें वो तो दुश्मन निकले
दुश्मनों को ही चलो दोस्त बनाया जाए
दिन तो बीत गया सारा दुनियादारी में
शाम ढलने लगी मैखाने में जाया जाए

-- भरत मल्होत्रा

जीवन में खुशहाली रखना, कभी नहीं बदहाली रखना
भले ही मौसम हो रूखा सा, पर अधरों पर लाली रखना
आतंकी सब मिट जाएंगे, पर जयकारा काली रखना
कोई हो बदजात भले ही, कभी न लब पर गाली रखना
वतन इसे रखना संभालकर, मन में हरदम माली रखना
दुर्गुण बह जाएं सारे ही, ऐसी ही बस नाली रखना
जो औरों का पेट भर सके, ऐसी घर पर थाली रखना
जो बुराई पर कर दे हमला ऐसा साथ मवाली रखना
हो सीमा या देश के भीतर हरदम ही रखवाली रखना
'शरद' लिखा हो जिस पर इंसां कानों में वह बाली रखना

-- प्रो. शरद नारायण खरे

जिन हाथों ने पाला-पोसा उनको ही डँस लेते हैं
धरती मां ने दूध पिलाकर, नाग कई ये पाले हैं
अपने सीने से चिपकाए रक्खा जिनको जननी ने
उन गद्दारों ने मां की छाती-छलनी कर डाले हैं
जिस थाली में खाते हैं, झट छेद उसी में करते हैं
नमकहरामी है फितरत, ये नहीं सुधरने वाले हैं
घूम रहे हैं गली-गली खूंखार लुटेरे अस्मत के
पत्थर की बस्ती के इंसां भी, पत्थर-दिल वाले हैं
रोज धमाके, आगजनी, सारी ख़ल्क़ित हलकान हुई
गला काटते भाई का ही, आफत के परकाले हैं
ऊपर वाला भी हैराँ है, माथा थामे बैठा है
कैसे हैवानों को उसके हाथों ने गढ़ डाले हैं
रोज मिसाइल-प्रक्षेपण, घनघोर प्रदूषण फैल रहा
भीषण गर्मी से धरती के पर्वत गलने वाले हैं
'भान' क़हर बरसायेगा, ये धरती ही मिट जायेगी
पूछो इनसे, तब भी क्या ये जिन्दा रहने वाले हैं

-- उदय भान पाण्डेय 'भान'

कब चाहते हैं पूजो भगवान की तरह से
इंसान हैं तो चाहो इंसान की तरह से
अखबार हम नहीं हैं जो पढ़ के फेंक दोगे
हमको पढ़ो हमेशा दीवान की तरह से
आँधी के तेवरों की चिंता नहीं है हमको
रखते हैं हम भी तेवर तूफान की तरह से
उसने कहा था हमसे जो काम कर ही देते
लेकिन कहा था उसने फरमान की तरह से
प्यासे को पानी देना है अच्छी बात लेकिन
पानी उसे न दें हम अहसान की तरह से
सम्मान कोई किसको अच्छा नहीं लगेगा
सम्मान पर मिले तो सम्मान की तरह से
पैसे के हों न हों हम पर बात के धनी हैं
धनवान से भी मिलते धनवान की तरह से
कविता ने बाँध दी है पैरों में दौड़ ऐसी
घर आते लौट जाते मेहमान की तरह से

-- डॉ. कमलेश द्विवेदी

इस माहौल में गजलें कहना कितना मुश्किल है
हर पल तिल-तिल जलते रहना कितना मुश्किल है
जिसने पार किया हो दरिया चीर के धारा को
उसके लिए मुर्दे सा बहना कितना मुश्किल है
लोग लिबास बदलते होंगे लेकिन सोचो तो
खुद्दारी के घर का ढहना कितना मुश्किल है
जिसने जीवन भर औरों के दर्द को बाँटा हो
उसके लिए अपना सुख गहना कितना मुश्किल है
'शान्त' खुशी से जी लूँ मैं उससे गर बातें हों
सन्नाटे के शोर को सहना कितना मुश्किल है

-- देवकी नन्दन 'शान्त'

वो अश्क भरा चश्म, समुन्दर न हुआ था
उस दीद से दिल भरा, पर तर न हुआ था
तू दोस्त बना मेरा चुराकर न हुआ था
संसार कहे कुछ भी सितमगर न हुआ था
वर्षों से नहीं हम मिले, यह एक फसाना
खिंचाव कभी कुछ कहीं जर्जर न हुआ था
हर बार नयन से गिरे आँसू, मिले जब हम
वो अश्रु हमारा कभी गौहर न हुआ था
दुनिया ने किया जुल्म, निखारा सभी सद्गुण
हम भी बने मजबूत, सिकंदर न हुआ था
वो गर्म निगाहें तेरी, कहती थी फसाने
शोला जगा जब दिल में, अवसर न हुआ था
वो सुरमई आखें बड़ी, औ' गाल में कृष तिल
सब याद है मुझको, कभी कमतर न हुआ था

-- कालीपद 'प्रसाद'

नजर फेर ली है खफा हो गया हूँ
बिछुड़कर किसी से जुदा हो गया हूँ
मैं किससे करूँ बेवफाई का शिकवा
कि खुद रूठकर बेवफा हो गया हूँ
बहुत उसने चाहा बहुत उसने पूजा
मुहब्बत का मैं देवता हो गया हूँ
बसायी थी जिसने दिलों में मुहब्बत
उसी के लिए क्यों बुरा हो गया हूँ
मेरा नाम क्यों तेरे लब पर भी आये
अब मैं अपना नहीं दूसरा हो गया हूँ
'मदन' सुनाऊँ किसे अब किस्सा ए गम
मुहब्बत में मिटकर फना हो गया हूँ

-- मदन मोहन सक्सेना

परिंदों को दाना खिलाते हैं लोग
मुंडेर पर कागा बुलाते हैं लोग
घरौंदे काँव कचकच सजाते नहीं
नट नटी नौटंकी नचाते हैं लोग
जश्ने जरूरत में जंगल जुगाली
दिवाली में दीया जलाते हैं लोग
अपने दरों पर झालरें लगाकर
परदों पे परदा लगाते हैं लोग
निस्बत नशा सुर्ख नैना आभारी
दिखावे में बोतल हिलाते हैं लोग
दूरी कब होती खुले आशियाँ में
दिवार की दूरी निभाते हैं लोग
बहारों से गौतम गिला है सबको
गुलाब को काँटे दिखाते हैं लोग

-- महातम मिश्र गौतम गोरखपुरी

दौड़ आएगी पुकारो, जिन्दगी
राह में तेरी हजारों, जिन्दगी
ख्वाब मेरे आसमां पर जा बसे
अब उन्हें नीचे उतारो, जिन्दगी
आईने सी साफ है ये मान लो
अब जरा-सी तुम संवारो, जिन्दगी
दर्द है ये औ' खुशी जैसी भी है
जैसी है हंसकर गुजारो, जिन्दगी
इश्क हो या दोस्ती के नाम पर
तुमपे है, जीतो कि हारो, जिन्दगी
लौटकर आएगा 'जय' फिर से यहां
रास्ता उसका निहारो जिन्दगी

-- जयकृष्ण चांडक 'जय'

मुझे अंगार में रहने की आदत हो गयी है
किसी के प्यार में रहने की आदत हो गयी है
फलक पर हूँ जमीं पर मैं उतर सकता नहीं हूँ
मुझे अखबार में रहने की आदत हो गयी है
जरूरत पर बिका था मैं हकीकत है मगर अब
उसी बाजार में रहने की आदत हो गयी है
हुआ है खास जबसे वो जमाने से कटा यूँ
उसे दो चार में रहने की आदत हो गयी है
उसे सम्बन्ध-नाते प्यार कारोबार ही लगते
जिसे व्यापार में रहने की आदत हो गयी है

-- प्रवीण श्रीवास्तव 'प्रसून'

(तीसरी किस्त)

मेवे वाला

मनोज कुमार शिव

यशोधा ने एक बाजू बढ़ाकर बिरजू को गले लगा लिया और सामने वाली पहाड़ी पर स्थित कुल देवता के मंदिर को निहारने लगी। मानो जैसे पूछ रही हो कि देवा क्या इस मासूम की मन्नत को पूरा कर देगा तू? क्या कोई चमत्कार कर सकता है? मंदिर के ठीक ऊपर आसमान में पंछी उड़ रहे थे। नीला आकाश बहुत सुंदर दिखाई दे रहा था। धूप गांव के हर घर में दस्तक देने लगी थी। सारा गांव हरकत में आ चुका था। गांव की औरतें अपने-अपने डंगरों की सेवा करने में लग गई थी। बच्चे विद्यालय जाने की तैयारियां करने लगे थे।

यशोधा को बिरजू के रूप में एक भावनात्मक सहारा मिल गया था। वह उसे अपने बेटे के रूप में मान चुकी थी। बिरजू भी यशोधा को न केवल अम्मा कहता बल्कि दिल से मानता भी था। यशोधा बिरजू की हर हरकत में मंगलू को देखती थी। उसका ख्याल रखती थी, हालांकि उसे भी पता था कि बिरजू उसका अपना बेटा नहीं है, वह तो महज कुछ महीने बाद उसे छोड़कर चला जाएगा। फिर क्यों इतनी भावनात्मक हुई जा रही है? आखिर यह मोह ममता कैसी जिसका कोई आधार ही नहीं? अब तो गांव की औरतें भी बातें बनाने लगी थी, कहती फिरती थी कि एक अजनबी पर इतना विश्वास करना ठीक नहीं। माना कि बेटे जैसा है पर है तो गैर की औलाद ही ना!'

खेतों से लौटते वक्त यशोदा को गोमती ने कहा कि 'यशोधे! है कौन ये लड़का जिसको इतना मानती है तू? इन फेरी वालों का क्या भरोसा कब हाथ साफ कर जाए? और तेरे पास तो कपड़े-गहने भी बहुत हैं घर पर, क्या पता कब उसका दिमाग फिर जाए?' यशोदा चुप रही, कुछ नहीं बोली। एक मन तो कर रहा था कि सुना दे उसे खरी-खरी, मगर एक अच्छी पड़ोसन होने के नाते सब सह गई। उसका एक मन कहता कि लोग सही तो कह रहे हैं। बिरजू तो कुछ ही दिन उसके पास है फिर तो वह चला जाएगा अपने घर, अपने प्रदेश, फिर इतना लगाव क्यों? मगर दूसरे ही पल उसका दिल उसे बिरजू पर ममता की घनी छांव करने से नहीं रोक पाता। बेचारी यशोधा कशमकश में जी रहे थी।

सर्दियां खत्म होने की कगार पर थीं। पहाड़ों पर बर्फ अब कम ही दिखने लगी थी। सर्दियों का अंत मतलब बिरजू का वापस अपने घर लौट जाना। 'अम्मा! इन सर्दियों में मैंने तेरह हजार के मेवे बेचे। अच्छी कमाई हो गई।' बिरजू ने पैसे यशोधा को दिखाते हुए कहा। 'अरे वाह बिरजू, खूब मेहनत करता है बे तू, अच्छी रकम लेकर जाएगा अपने घर इस बार!' यशोधा की बातों में हल्की सी निराशा भी थी।

'पता अम्मा! तुम्हारे दिए हुए ऊनी दस्तानों और स्वेटर ने मेरी बहुत मदद की। तभी तो ठंड में इतनी बिक्री हुई।' बिरजू थोड़े उत्साह के साथ बोला, जिसमें यशोधा के प्रति कृतज्ञता साफ झलक रही थी। 'अम्मा गोलू ने १० हजार और गोलू ने ११ हजार के मेवे बेचे। गोलू कह रहा था कि वह अपनी मां के लिए साड़ी, छोटी बहन के लिए किताबें और अपने बापू के लिए कुर्ता ले जाएगा और पिंकू अपने छोटे भाई के लिए बल्ला, मां के लिए चप्पल ले जा रहा है। दोनों बहुत खुश हैं।'

'हम्म्म्म!' यशोधा बिरजू की भावनाओं को समझ गई थी। एक लड़का जिसका कोई परिवार है ही नहीं, किस पर अपना पैसा खर्च करे? किसके साथ अपनी खुशियां मनाए? किसे अपना दर्द सुनाए? यशोधा बिरजू के दर्द को महसूस कर रही थी।

बिरजू के वापस जाने के दिन पास आने लगे थे। यशोधा ने बिरजू से बात करना कम कर दिया था। उसे वह चाय भी कभी-कभार बनाकर देती। न बिरजू की किसी काम में मदद मांगती। न शाम को उसके पास दिन भर की बातें सुनाती। प्यार का भूखा बिरजू यशोधा में आए इस बदलाव को भांप गया था- 'अम्मा! क्या हुआ है तुझे? अब तू पहले जैसे क्यों नहीं रही? ना मुझसे बात करती है? ना मुझे प्यार करती है? मुझसे कोई गलती हो गई है क्या? बता मुझे अम्मा!'

'चुप कर तू, ज्यादा चपड़ चपड़ करता रहता है, अपने काम से काम रख, ज्यादा बात करना जरूरी है क्या? क्यों करूं मैं तुझे प्यार?' यशोधा गुस्से में बोल गई जिसमें उसकी विवशता साफ नजर आ रही थी। 'यह तू क्या कह रही है? क्या मैं तेरा बेटा नहीं हूं? तूने खुद ही तो कहा था ना।' 'हां हां नहीं है तू मेरा बेटा, तू नहीं है मेरा मंगलू, मेरा मंगलू तो...' 'बस अम्मा! बस, अब और न बोल, मुझ अनाथ को तूने इतना प्यार दिया। वह भी कम नहीं। आखिर क्यों देगी तू मुझे प्यार? मैं तो पराई औलाद हूँ ना, पर तूने जितना भी प्यार मुझे दिया मैं उसे जिंदगी भर नहीं भूलूंगा।'

यशोधा ने बिरजू की ओर पीठ कर ली थी। न जाने कैसे उसने खुद को इतना कठोर बना दिया था। कैसे वो इतना कुछ कह गई। उसकी आंखें समंदर हो चुकी थीं। मन ही मन बिरजू से कह रही थी कि मुझे माफ कर दे बिरजू, माफ कर दे मेरे बच्चे! मैंने जो कुछ भी कहा सब झूठ है। मैं तुझ से बहुत प्यार करती हूं। कितना कुछ कह गई तुझे, मुझे माफ कर दे।

बिरजू का गला भी भर आया था। 'अम्मा, मैं कल जा रहा हूं, पिंकू और गोलू मेरा सामान बस अड्डे तक पहुंचा देंगे। फिर हम तीनों शाम की बस से चले जाएंगे।'

'क्या? तू जा रहा है?' यशोधा ने आंसू पोंछकर बिरजू की तरफ मुड़ते हुए कहा। 'हाँ, अभी कुछ सामान बांधना है।' यशोधा भारी मन से बिरजू का सामान बंधवाने में उसकी मदद करने लगी। उसका ममता भरा दिल तो कह रहा था कि 'बिरजू रुक जा बेटा, मत जा, रुक जा मेरे पास, अपनी अम्मा के पास, वहां किसके पास रहेगा? कौन तेरा ख्याल रखेगा? किसको मां कहेगा तू? रुक जा मेरे बेटे मेरे पास!' मगर उसके हाथ सामान बांधने में लगे थे।

बिरजू यशोधा की तरफ देख रहा था, मानो मन ही मन कह रहा हो कि 'अम्मा मुझे रोक ले, मुझे नहीं जाना तुझे छोड़कर, मुझे तेरे साथ रहना है तेरा बेटा बनकर।' मगर बिरजू अपनी इस ख्वाहिश को यशोधा के सामने शब्द रूप नहीं दे पाया। सोचता रहा कि कहीं अम्मा मुझे गलत ना समझ बैठे और मुझ फेरीवाले की औकात ही क्या है? कहां पूरे गांव परगने में अम्मा की इतनी इज्जत-सम्मान और कहां मैं? लोग, इनके नाते रिश्तेदार क्या सोचेंगे? क्या कहेंगे कि एक अनजान को अपने घर में पनाह देकर परिवार का सदस्य ही बना लिया! कितना कुछ सुनना पड़ेगा बेचारी अम्मा को मेरी वजह से। नहीं, नहीं मेरी वजह से भोली अम्मा को कोई कुछ कहे, मुझे मंजूर नहीं।

शाम होने को थी। यशोधा गाय को दुहने के लिए गौशाला में गई। बिरजू ने अम्मा की रसोई से मिट्टी का घड़ा उठाया और पानी लाने चौराहे के पास वाले हैंडपंप के पास चला गया। आज उसकी चाल बिलकुल धीमी थी। हर एक नजारे को बड़े गौर से देख रहा था मानो जैसे हर दृश्य को अपनी आंखों में सदा के लिए समेटकर रख लेना चाहता हो। प्रधान के घर के साथ वाले छोटे मंदिर के पास पहुंचकर थोड़ी देर रुका रहा, देव पिंडियों को निहारा, सर झुकाकर नमन किया और आगे बढ़ गया। थोड़ा आगे जाकर दोराहे पर फिर रुका, जहाँ से वह अम्मा के साथ घासणी की तरफ घास पत्तियां लाने जाया करता था। हर एक चीज जैसे उससे निवेदन कर रही हो कि बिरजू मत जा, यहीं का होकर रह जा। ख्यालों में आकंठ डूबे बिरजू ने कब पानी से घड़ा भरा, कब घर पहुंच गया, पता ही नहीं चला।

अम्मा रसोईघर में आ चुकी थी। बिरजू ने घड़ा कंधे से उतारकर फर्श पर एक कोने में त्रिड़े पर रख दिया। 'बिरजूवा आ बैठ, बिन्ना ले बैठने को!' यशोदा ने खजूर के बिन्ने को बिरजू की तरफ सरकाते हुए कहा। बिरजू बैठ गया। 'आज रात का खाना यहीं खा लेना बिरजू, मैं तेरे लिए सिडडू बना रही हूँ, फिर तो तू चला जाएगा अपने घर।' सिडू का नाम सुनकर भी बिरजू का उत्साह ठंडा रहा। वरना वह तो अम्मा के हाथों बनी हर चीज की बड़ी तारीफ करता, बड़े चाव से खाता। मगर आज एकदम चुप रहा।

खाना खाकर बिरजू अपने कमरे में आ गया। सारी चीजों को बांध चुका है यह सुनिश्चित कर रहा था, ताकि सुबह जल्दी ही निकल सके। आराम करने के लिए खाट पर लेटा तो था, मगर आज नींद कहीं गायब थी, वरना उसे तो लेटते ही गहरी नींद आ जाया करती थी।

(अगले अंक में समाप्त)

पृष्ठ २४ की पहेलियों के उत्तर-

(१) फुटबॉल (२) नाली (३) छड़ (४) चश्मा (५) परछाईं

आदि शंकराचार्य के महान कार्य

मनमोहन कुमार आर्य

दि. १० मई को आदि शंकराचार्य की जयन्ती मानी जाती है। भले ही इस जन्म तिथि का कोई प्रमाण न हो, लेकिन वर्ष में एक दिन महापुरुषों को याद कर लिया जाता है, यह अच्छी परम्परा है। हम भी आज अपने समय की महान हस्ती आदि शंकराचार्य के महान कार्यों को स्मरण कर अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहते हैं। यदि वे न हुए होते तो वैदिक धर्म व संस्कृति का जो स्वरूप आज हमारे सामने है, वह कदापि न होता। अनुमान है कि संसार में नास्तिकता का साम्राज्य होता। हमारे सभी वेदादि ग्रन्थ नष्ट हो जाते या कर दिये जाते और अहिंसा पर आधारित नास्तिक मत व मतों को भी विदेशी मत हिंसा आदि के प्रयोग द्वारा निगल जाते। इतिहास इस बात का प्रमाण है। इस दृष्टि से हमें आदि शंकराचार्य के नास्तिक मतों पर प्रहार व शास्त्रार्थ का महत्व विदित होता है। हम उनकी ज्ञान, योग्यता व कार्य की सराहना करते हैं और उनको स्मरण कर उनको नमन करते हैं।

आदि शंकराचार्य का जन्म केरल प्रदेश के कलाडी गांव में आज से लगभग २५२६ वर्ष पूर्व सन् ५०६ ईसापूर्व में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। अल्पायु में ही आपके पिता का देहान्त हो गया था। आपका पालन पोषण आपकी माता ने किया। हमें लगता है कि उन दिनों ब्राह्मणों का एकमात्र कार्य वेद आदि शास्त्रों का अध्ययन करना ही होता था। गुरु से अध्ययन करते हुए संवाद, वार्तालाप व विवेच्य विषयों पर परस्पर व दूसरों से शास्त्रार्थ हुआ करते थे। इससे बौद्धिक योग्यता बढ़ने के कारण सत्य के ज्ञान व निर्णय में सहायता मिलती थी। आदि शंकराचार्य की मृत्यु ३२ वर्ष की आयु में सन् ४७७ ईसापूर्व में हुई। तीव्र बुद्धि के धनी शंकराचार्य ने अपना शास्त्रीय अध्ययन अल्प समय में ही पूरा कर लिया था।

आदि शंकराचार्य के समय देश में बौद्धमत व जैनमत का विशेष प्रभाव था। इन मतों व इनके आचार्यों ने वैदिक धर्म का त्याग कर दिया था। कारण था वैदिक धर्म में अज्ञानता व अन्धविश्वास आदि का समावेश एवं यज्ञों में पशुओं की हिंसा आदि धर्म विरुद्ध कार्य। पशु हत्या के विरोध में लगभग ३००० वर्ष पूर्व बौद्ध व जैन मतों की स्थापना इस देश में हो गई थी। महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी का व्यक्तित्व आकर्षक एवं प्रभावशाली होने के कारण लोग उनके उपदेशों से प्रभावित हुए व उन्होंने वैदिक धर्म को त्यागकर इन मतों को स्वीकार कर लिया था। प्राचीन आर्य व वैदिक धर्मी ईश्वर के उपकारों व स्वरूप का ध्यान करते हुए उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना करते थे।

वेद और वैदिक धर्म के विरोध के कारण इन मतों के आचार्यो ने वैदिक विधि से पूजा त्याग कर उसके विकल्प के रूप में अपने आदि आचार्यं महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी की मूर्तियां बनाकर उनका ध्यान करना आरम्भ कर दिया। यह ध्यान नहीं दिया गया कि पाषाण व धातु की मूर्ति तो जड़ पदार्थ है। मूर्ति पूजा द्वारा संसार से जा चुके आचार्यों का ध्यान करके कुछ लाभ नहीं होगा। आज तक कोई यह सिद्ध नहीं कर सका कि मूर्तिपूजा करने से किसी के ज्ञान व सामर्थ्य में वृद्धि होती है, व कोई अन्य लाभ होता है, जबकि वैदिक विधि से ईश्वर व उसके कार्यों एवं उपकारों का ध्यान करने से ईश्वर का साक्षात्कार होता है जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण स्वामी दयानद थे।

आदि शंकराचार्य ने इस मूर्तिपूजा व इन मतों के अवैदिक कृत्यों का विरोध किया था। उन्होंने उन दिनों उज्जैन नगरी के एक निष्पक्ष व सत्य प्रिय राजा सुधन्वा को सत्य धर्म के निर्णयार्थ जैन मतों के आचार्यों से शास्त्रार्थ आयोजित कराने का आग्रह किया। सत्यप्रिय राजा ने आग्रह स्वीकार कर लिया और विद्वान होने के कारण स्वयं ही उस शास्त्रार्थ की मध्यस्थता व निर्णायक की भूमिका निभाई। आदि शंकराचार्य का मत था कि संसार में केवल एक सत्ता ईश्वर ही है जो सर्वव्यापक, सूक्ष्मातिसूक्ष्म, नित्य, अनादि, अजन्मा, सच्चिदानन्द आदि गुणों से युक्त है। जीव को अपने अस्तित्व का स्वतन्त्र बोध भ्रान्ति के कारण होता है। यह जो प्रकृति दिखाई देती है इसका भी अस्तित्व नहीं है। यह भी ईश्वर के ही अधीन उसकी माया है जो उससे भिन्न नहीं अपितु ऐसा आभास होता है जो सत्य नहीं है। ऐसी युक्तियां वैदिक धर्म की ओर से लेकर आदि शंकराचार्य मैदान में उतरे थे।

दूसरी ओर नास्तिक जैन मत के आचार्य ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते थे। उन्हें आदि शंकराचार्य की मान्यता का खण्डन और स्वमत का मण्डन करना था। स्वामी अपने मत के मण्डन व जैन मत के खण्डन में सफल हुए तथा जैन मत के आचार्य स्वमत के मण्डन व अद्वैत मत के खण्डन में सफल नहीं हुए। ऐसा होने पर राजा सुधन्वा की आज्ञा हुई कि सभी प्रजा को स्वामी शकराचार्य के अद्वैत मत को स्वीकार कर उसका पालन करना होगा। उज्जैन राजा के इस आदेश को अनेक राजाओं ने स्वीकार कर लिया जिससे देश में वैदिक धर्म पुनः स्थापित हो गया। इसप्रकार जैनमत का पराभव भी आदि शंकराचार्य के समय में हो गया था।

आदि शंकराचार्य को राज्य की ओर से प्रचार आदि के सभी साधन उपलब्ध कराये गये। उन्होंने देश भर में प्रचार किया और देश की चारों दिशाओं में धर्म प्रचारार्थ चार मठों की स्थापनायें की। आदि शंकराचार्य बहुत बड़े विद्वान थे। उनके सामने कोई विद्वान उनसे तर्क नहीं कर सकता था। उनके जीवन काल में किसी का उनसे उनके मत के विरोध में शास्त्रार्थ करने का साहस नहीं हुआ। सर्वत्र वैदिक धर्म की स्थापना हो गई। वैदिक धर्म का परचम विश्व में फहराने लगा। आदि शंकराचार्य देश भर में धर्म प्रचार कर रहे थे। तब दो कुटिल जैनी मतानुयायी उनके शिष्य बन गये। स्वामी का विश्वास उन्होंने प्राप्त कर लिया। अवसर पाकर उन्होंने उनके भोजन में विष मिला दिया जिसके प्रभाव से कुछ काल बाद लगभग ३२ वर्ष की आयु में वह अपने उत्तराखण्ड के केदारमठ में मृत्यु को प्राप्त हो गये।

यदि उन्हें विष न दिया गया होता तो वह बहुत कार्य करते। देश के भाग्य में यह सौभाग्य नहीं था। इससे देश वंचित हो गया। आदि शंकराचार्य ने वेदान्त दर्शन, उपनिषदों तथा गीता का संस्कृत में अद्वैत मत की मान्यताओं के अनुरूप भाष्य किया है। कुछ अन्य ग्रन्थ भी लिखे हैं। जब तक वह धरती पर उपलब्ध हैं, उससे उनकी योग्यता का ज्ञान देशवासी करते रहेंगे। यह भी बता दें कि उनकी मृत्यु के लगभग २३०२ वर्ष बाद गुजरात की मौरवी स्टेट के टंकारा नामक ग्राम में ऋषि दयानन्द (१८२५-१८८३) का जन्म हुआ। स्वामी के समय वेद प्रायः विलुप्त हो गये। यदि कहीं उनकी हस्तलिखित प्रतियां उपलब्ध भी थी तो भी वेदों का यथार्थ ज्ञान उस समय किसी पण्डित को नहीं था।

स्वामी दयानन्द ने वेदों की खोजकर व उसके बाद वेद के मन्त्रों के सत्य अर्थों को गुरु विरजानन्द व अपनी विद्या से प्राप्त कर देश में उनका प्रचार प्रसार किया। वेद ईश्वर प्रदत्त ज्ञान के ग्रन्थ हैं और साथ ही यह सभी सत्य विद्याओं के ग्रन्थ भी हैं। वेदों में किसी प्रकार का अज्ञान व अन्धविश्वास नहीं पाया जाता और न ही कोई ज्ञान विरुद्ध मान्यता उनमें है। स्वामी दयानन्द ने आदि शंकराचार्य के मत को किंचित परिवर्तन के साथ स्वीकार किया है। अपने मत के समर्थन में स्वामी दयानन्द ने पर्याप्त हेतु व कारण भी दिये हैं। उनके सभी हेतु विद्वानों द्वारा स्वीकार्य, वेदानुकूल एवं अकाट्य हैं। आज का युग ऋषि दयानन्द की देन वैदिक त्रैतवाद अर्थात् तीन अनादि व अविनाशी सत्ताओं ईश्वर,व व सृष्टि का युग है। हम अनुभव करते हैं कि यदि आज आदि शंकराचार्य होते तो वे वैदिक त्रैतवाद को अवश्य स्वीकार करते क्योंकि सत्य का ग्रहण व उसे स्वीकार करना ही विद्वानों का प्रमुख गुण होता है। सत्य को ग्रहण करने से मनुष्य व विद्वानों का सम्मान कम नहीं होता अपितु बढ़ता ही है। हम सब भी तो स्वाध्याय करते हुए अपनी अज्ञानता की बातों को छोड़कर पुस्तक में पढ़े गये सत्य ज्ञान को स्वीकार करते हैं।

आदि शंकराचार्य ने अपने समय में देश से नास्तिकता मिटाने का महद् कार्य किया था। इसका सुप्रभाव देश के भविष्य पर भी पड़ा। कुछ सीमा तक इसने स्वामी दयानन्द का कार्य भी सरल कर दिया था। यदि वे न आते तो स्वामी जी को वेदाध्ययन की सुविधा व वेद की प्राप्ति सम्भवतया न होती। आदि शंकराचार्य की जयन्ती पर दोनों विद्वानों, संन्यासियों व देश व धर्म के रक्षकों को हमारा एक बार पुनः नमन। ■

बातों ही बातों में/कुछ ऐसी बात हो गई
बन गया मन से मन का रिश्ता
और हमें खबर तक न लगी
कर लिया मेरे एहसासों ने/मुझसे ही धोखा
न जाने कब करके मुझे बेखबर
कर लिया प्यार का सौदा
इजाजत नहीं थी मेरी
बने फिर से कोई प्रेम कहानी
लेकिन इस दिल को कौन समझाए
बना लिया उससे रिश्ता गहरा
ऐ नादान दिल! समझा कर
प्यार एक बार होता है/बार-बार नहीं
मानती हूँ थोड़े जज्बात उभर आते हैं
कुछ एहसासी रिश्तों के दरम्यान
पर इसे प्यार का नाम देना/सही तो नहीं
दिमाग समझता है इस बात को
पर इस दिल की जिद खत्म होती नहीं!

-- बबली सिन्हा

हाथ को आईना बना चल दी मैं/सतयुग की ओर
इस आईने में कुछ अतीत की तस्वीरें उभरीं
सत्य मुख पर आवरण डाल/कोने में छिपकर रो रहा है
उसकी दयनीय स्थिति देख/झूठ खिलखिला रहा है,
'मैं जीत गया' यह सोच इतरा रहा है,
सत्य ने धीरे से आवरण हटाया
और बहुत सहजता से झूठ को बेनकाब कर
दिखाया उसको अपना आईना!
आज मैंने भी कलयुग से सतयुग में प्रवेश पा लिया है,
आज भी हाथ को आईना बना
देख रही हूँ कुछ भविष्य की तस्वीरें
जीत हुई है सत्य की
झूठ अदृश्य हो गया है
किन्तु सत्य खिलखिला नहीं रहा
उसने अपनी सीरत नहीं छोड़ी,
वो आज भी नम्र है, शांत है, सहज है
उसे किसी आईने की आवश्यकता नहीं
क्योंकि वो स्वयं में परिपूर्ण है।

-- नीरजा मेहता

रात का अंधकार बढ़ने लगा
सूर्य का मन भरने लगा
तभी सूर्य ने देखा दूर
किसी गरीब की कुटिया में,
एक नन्हा सा दीपक जलने लगा
सूर्य को प्रणाम कर कहने लगा-
'हे सूर्य देवता! मैं हूँ ना!/आप न करें मन को उदास
इस अंधेरी रात में/जहाँ तक मेरी सामर्थ्य है
वहां तक मैं फैलाऊँगा प्रकाश
मैं अकेला नहीं-हजारों दीपक हैं मेरे साथ,
हम दूर करेंगे इस धरती का अंधकार
भोर होने तक आपका करेंगे इंतजार!

-- जय प्रकाश भाटिया

भूत, भविष्य, वर्तमान - मानव के हैं तीन वस्त्र
भूतकाल के वस्त्र बदलकर, वर्तमान में रह लो मस्त
जो भविष्य की चिंता में चिंतित, सदा रहे वह मानव त्रस्त
भूतकाल की जो कमियाँ थी
वर्तमान में शोधन कर
भविष्य और अधिक उज्ज्वल हो
इसका भी अनुमोदन कर
जो बीता, वह सिखा गया
आज सीख, कल उद्बोधन कर

-- अ. कीर्तिवर्धन

जाने कहाँ खो गये/खो गये हैं शब्द
जिनको पढ़कर कभी/हुआ करती थी सुबह
प्रथम किरणों के संग/ओस की बूंदों के भीतर
खो गये हैं वे शब्द
जो सूर्योदय से सूर्यास्त तक
कर देते थे जीवंत
ख्वाब सजाया करते थे
खो गये हैं शब्द
जाने कहाँ किस ओर गये!

-- कल्पना भट्ट

ओ री गौरैया... अंगना में फिर आ जा रे...
ओ री सोन चिरैया वापिस आ जा रे
कहाँ गई हर आंगन से गौरेया तुम
करके हर घर का कोना-कोना सूना तुम
दिल पुकारे राह निहारे वापिस आ जा रे
ओ री सोन चिरैया ओ री गौरेया
लौट के आजा रे मेरे घर आंगन रे
क्यों रूठ कर चली गई हो तुम?
याद आती है वो धमाचौकड़ी
हम सब करते जब फुदकती थी तुम
बताओ न क्यों रूठ गईं तुम?
लौट आओ फिर से बस एक बार
लौट के आजा रे मेरे घर आंगन रे
एक बार सिर्फ एक बार तुम...!

-- मोनिका अग्रवाल

प्रेम की पाती लेकर/आता था डाकिया
पुकारता था नाम मेरा/हिरणी सी चपलता लिए
कर जाती थी चोखट को पार/लगा लेती थी दिल से
प्रेम की पाती छुपकर पढ़ती थी/ढाई अक्षर प्रेम को
जोड़ लेती ख्वाबों से रिश्ते/भर लेती थी मन में हौसला
जमाने से नहीं डर का/वो सामने आते थे तो
होंठ थरथराने लगते/तब ऐसा लगता था
मानों शब्दों पर लगा हो जैसे कर्फ्यू
बस आँखें ही कर जाती थीं
प्रेम का इजहार
अब जब नींद खुली तो लगा
जेसे एक ख्वाब देखा था प्रेम का
अब कोई नहीं लाता प्रेम की पाती
क्योंकि हो जाती है अब ख्वाबों में
मोबाईल पर प्रेम की बातें

-- संजय वर्मा 'दृष्टि'

वारौ सौ न्यारौ सौ, ब्रज कौ कन्हैया
प्यारौ दुलरायौ सौ, लागत गलबहियाँ
भेद भाव कछु ना मन, चित्त प्रमित भास्वर घन
व्यस्त चकित रह थिरकित, किलकत कुहकत फुरकत
जानत हर मन की गति, हर हरकत वह समझत
अपनी वह करवाबत, देवत जो हम चाहत
घर ना ज़्यादा रहवत, बाहर देखन चहवत
चलिवे की जब ठानत,
रुकनौ ना फिरि चाहत
चाखत हर फल जावत,
चीख कबहुँ वे मारत
'मधु' कूँ देखत अँखियाँ,
करि जावत कछु बतियाँ

-- गोपाल बघेल 'मधु'

झुरमुट में दिखती परछाइयाँ/घुँघरू की मद्धिम आवाज
लम्बे अर्से का अन्तराल/तुझसे मिलने का इन्तजार
चाँद की रोशन रातों में/पल हरपल थमता जाए
ऐसा लगता है मानो तुम/मुझसे आलिंगन कर लोगी
पर कुछ छण में परछाइयाँ/नयनों से ओझल हो जायें
दिन की घड़ी घड़ी में बस/बस तेरी ही याद सताये
सच कहता हूँ मैं तुमसे/मेरे शब्द तुझसे यकीं चाहें.
सच में सच को समझ न पाना/यह मेरी नादानी थी
एक दीदार को मेरी नजरें/हरपल प्यासी प्यासी थी
वक्त के कतरे कतरे से/एक झिलमिल सी आहट आई
मेरी रूहें कांप उठी/जब उसने इक झलक दिखाई
चन्द पलों तक मै खुद को
उसकी बाहों में पाया था
यही वक्त था जिसने मुझको
गिरकर उठना सिखाया था
सच कहता हूँ मैं तुमसे
मेरे शब्द तुझसे यकीं चाहें!

-- शालिनी तिवारी

अक्षपाद औ' कणाद युग में/रही नहीं कभी जाति-प्रथा
किसने किया इसे अनावृत/जो आज बनी है व्यथा-कथा
चार वरण थे व्यवसाय से/वर्ण व्यवस्था तब भी थी
अनेकानेक वर्णों से खंडित/वर्ण व्यवस्था अब भी है
ब्रह्मावृत्त ज्ञानी औ' पंडित/ब्राह्मण तब कहलाता था
मानवता को सही दिशा दे/विज्ञान ब्रह्म बतलाता था
युद्धकला से निपुण बांकुरा/राजतन्त्र में जो राज चलाता
सब जन का छतरी बनकर
आखिर वही क्षत्रिय कहलाता
लेन-देन में व्यवहार कुशल
महिमा अर्थ का मंडित करता
अंकुश धर्म का रखता अर्थ पे
धर्म वैश्य का अखंडित रखता
सेवा ही सम्बल रहा जिनका
वे सब सारे शुद्र कहलाते थे
नर में ही नारायण देख-देख
भव सागर तक तर जाते थे

-- श्याम 'स्नेही'

फर्क नजरिये का

'तुम्हें हमेशा चाहा वही मिला फिर भी मन में इतना रोष क्यों? ये कैसी पेंटिंग बनाई तुमने, लगा जैसे बेटियाँ आत्मघात कर रही हैं।' चित्र प्रर्दशनी में नैना के पेंटिंग पर छवि ने प्रश्न किया।

'आत्मघात?' नैना आश्चर्य से छवि के प्रश्न का उत्तर देते हुए बोली।

'और नहीं तो क्या? देखो, सब पानी में कूदने की तैयारी में लगी हो जैसे और एक तो कूद ही पड़ी।'

'ऐसा लगता है हम बेटियाँ अपने जीवन का यह हाल किसी न किसी रूप में कर ही लेती है किसी न किसी तरह इस देह को तो कभी इस मन को मार ही लेती है।'

'अरे नहीं ये तेरे देखने का नजरिया है बाकि मुझे तो पंख लगाकर गगन में उडती यौवनायें दिख रहीं है जो अपना जीवन अपने हिसाब से जीना चाहती हैं। रूप, सौन्दर्य, प्रेम, प्रेरणा कई भाव छिपे हैं। और जहाँ तक आत्मघात की बात है, तो जौहर तो पद्मिनी ने भी किया था ऐसी ही कई वीरांगनाओं के साथ।'

'सही कहा सखी नजरिया ही सब कुछ है।' चित्र में सारी स्त्रियों के चेहरों में तेज उभर आया जो छवि पहले न देख पाई थी।

-- अल्पना हर्ष

पानी की जाति

पिंकी बर्तन पकड़े चुपचाप अपनी अम्मा के पीछे चल रही थी। आज फिर पानी लाने के चक्कर में उसका स्कूल छूट गया। एक जगह जब अम्मा और बाकी औरतें आराम करने के लिए रुकीं तो उसने पूछा, 'अम्मा गांव में तालाब है तो हम इतनी दूर चलकर पानी लेने क्यों जाते हैं।'

इस पर अम्मा ने जवाब दिया, 'बिटिया वह हमारे लिए नहीं है। वह बड़ी जात के लोगों का पानी है।'

'पानी की भी जात होती है क्या? स्कूल में टीचर दीदी तो कहती हैं कि भगवान की बनाई चीज पर सबका बराबर का अधिकार होता है। पानी तो भगवान बरसाते हैं ना।'

'वो सब हमको नहीं पता। हमने तो जनम से यही देखा है। उनका पानी अलग है और हमारा अलग।' कह कर अम्मा और बाकी औरतें चलने लगीं।

पिंकी भी पीछे चल पड़ी। पर उसके मन में यह सवाल हलचल मचा रहा था कि पानी की जात कैसे पता चलती है?

-- आशीष कुमार त्रिवेदी

गुब्बारेवाला

पंडित आज्ञाराम के बेटे और बहू अपने पांच वर्षीय पुत्र दीपू के साथ मेले में घूम रहे थे। बहू गिरिजा और बेटा अशोक करीने से सजी खिलौने की दुकानों में सजे खिलौने निहारते आगे बढ़ रहे थे। नन्हा दीपू हर दुकान पर खिलौने देखता और अपनी उंगली उठाकर उनसे खिलौने खरीद देने की जिद करता। लेकिन अशोक और गिरिजा उसे समझा-बुझाकर आगे बढ़ जाते। एक जगह रंग बिरंगी कांच की चूड़ियों से सजी दुकान देखकर गिरिजा चूड़ियां देखने में मशगूल हो गयी। अशोक भी उसे चूड़ियां पसंद करने में मदद करने लगा। लगभग पांच मिनट बाद जब दोनों चूड़ियां खरीद चुके तो उनका ध्यान दीपू की तरफ गया। उनके पैरों तले जमीन खिसक गई। मेले की भीड़भाड़ के बीच नन्हा दीपू उन्हें कहीं नजर नहीं आ रहा था।

पागलों की तरह दीपू को ढूंढ-ढूंढकर दोनों बेहाल हो चुके थे। अब रात गहरा गयी थी। मेले में भीड़भाड़ भी कम हो गयी थी। इक्का दुक्का दुकानें भी अब बंद होनी शुरू हो गयी थी। थके हारे अशोक और गिरिजा खिलौनों के दुकानों की कतार में एकदम आखिर की दुकान के सामने एक खाली जगह में बैठ गए।

उसी खाली जगह में एक गरीब गुब्बारेवाला अपने परिवार सहित भोजन कर रहा था। उसके सामने ही तीन छोटे बच्चे भी उसी के साथ भोजन कर रहे थे। उन्हें अपने हाथों से भोजन कराते हुए वह गुब्बारेवाला एक बच्चे को समझाए जा रहा था, 'न रोओ बेटा! अल्लाह चाहेगा तो तुम्हें तुम्हारे मां बाप मिल जाएंगे।'

उसकी यह बात सुनते ही गिरिजा का ध्यान गुब्बारेवाले की तरफ गया और वह उन बच्चों की तरफ दौड़ पड़ी। नजदीक पहुंचते ही उसने देखा उन तीन बच्चों में से एक उसका दीपू था। अपने साथ बैठे दोनों बच्चों की तरह ही वह उनके साथ उनके ही बर्तन में भोजन कर रहा था।

अशोक ने यह दृश्य देखते ही उस गुब्बारेवाले को पटककर मारना शुरू कर दिया, 'साले! तेरी हिम्मत कैसे हुई मेरे लड़के को अपना जूठा खिलाने की। जानता नहीं हम कौन हैं? हमारा धर्म भ्रष्ट कर दिया।' बेचारा गुब्बारेवाला दोनों हाथ जोड़ घिघिया रहा था, 'मालिक! माफ कर दो। बड़ी भूल हो गयी। मैं पहचान नहीं पाया।'

जबकि गिरिजा की कृतज्ञ आंखें अश्रु धार लिए उस गुब्बार वाले को हृदय से आशीष दे रही थीं। वह एक माँ जो थी!

-- राजकुमार कांदु

माँ

एक गांव में एक किसान दम्पति रहता था। तमाम दरिद्रता के बावजूद वे गँवई जीवन शैली में मस्त रहते थे। बस दुःख यह था कि ४०-४२ की उम्र हो जाने के बाद भी कोई संतान नहीं थी। तमाम पूजा-पाठ मान मनौती के बाद लगभग ४५ की उम्र में एक पुत्र प्राप्त हुआ। उन्हें जैसे दुनिया की सारी निधि मिल गई। दोनों रात दिन सोते जागते उसके चेहरे को देखते रहते थे।

लड़का धीरे धीरे बड़ा होने लगा, स्कूल जाने लगा। कुशाग्र बुद्धि होने के कारण अच्छे नंबरों से पास होने लगा और तय समय में इंजीनियरिंग में उत्तीर्ण हो गया। यद्यपि तब तक किसान जीर्ण हो चुका था और उसके पास जो एक दो कट्टा जमीन थी, वह भी बिक चुकी थी। फिर भी वह अपने को गांव का सबसे अधिक भाग्यवान समझता था।

लड़के को एक बड़ी कंपनी में नौकरी मिल गई। संजोग से उसी कंपनी में काम करने वाली एक लड़की से उसका प्रेम हो गया और उसने उससे शादी भी कर ली। पहले तो कभी कभार घर जाता भी था और माँ-बाप की थोड़ी बहुत मदद कर दिया करता था लेकिन शादी के बाद घर जाना बहुत काम कर दिया था, या यूँ कहें कि माँ-बाप को भूल चका था। माँ बाप खुद कर्ज पटाई लेकर उससे शहर मिलने आ जाया करते थे, लेकिन शादी के बाद अपनी सोसाइटी के कारण उन लोगों से मिलना बंद कर दिया और फिर कभी न आने के लिए मना कर दिया।

इसी दौरान उसका ट्रांसफर लन्दन हो गया और अपना परिवार लेकर वहीं रहने लगा। उस कम्पनी में एक टॉम नाम का अंग्रेज युवक काम करता था जो इससे काफी प्रभावित था। एक दिन टॉम बोले कि क्यों किराए के मकान में रहते हो, हमारे मकान में रहा करो। तुम्हारे माँ-बाप को बुरा लगा तो! टॉम बोला कि माँ तो है नहीं, पिताजी दूसरी शादी करके दूसरे घर में रहते हैं।

अब वह टॉम के साथ रहने लगा। काफी समय बीतने के बाद एक दिन टॉम इसके गांव आने के लिए दबाव बनाने लगा। मजबूर होकर वह टॉम को लेकर गांव आया। दम्पति बेटे को पाकर निहाल हो गया, दिन रात सेवा में लग गया। रात उन लोगों के सो जाने पर माँ-बाप पंखा झलते थे, उन लोगों का माथा सहलाते थे जिसे टॉम बहुत ध्यान से देखता था।

छुट्टी बीत जाने के बाद इंजीनियर अपनी पत्नी के साथ लन्दन जाने की तैयारी करने लगा। जाने के दिन टॉम ने लन्दन जाने से साफ मना कर दिया और कहा कि मुझे माँ मिल गई है, जिसके लिए मै जिंदगी भर

तरसता रहा। मैं माँ के साथ रहूँगा। मुझे जो चाहिए था मिल गया है और तुम्हें जो चाहिए था, लन्दन का मकान तुम्हारे नाम कर दिया है।

-- राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय

(चौथी और अंतिम किस्त)

अनुत्तरित प्रश्न

डॉ राजेन्द्र प्रसाद सिंह

इस घटना के बाद से मैं बिल्कुल निसंग हो गयी। अब घर के एकांत कोने में बैठे रहना ही मेरी नियति बन गयी है। अम्मा की बेरुखी तथा भाई की बढ़ती नाराजगी मेरे लिए असह्य होने लगी।

आज सुबह से ही परेशान हूं। मन उजड़ा-उजड़ा-सा लगने लगा है। जीवन की निश्चयता भी प्रायः खत्म होने की कगार पर है। कहीं कोई रोशनी नहीं दीख रही। हर ओर अंधेरा ही अंधेरा है। अल्लाह की बनायी इस दुनिया में मुझे कहीं भी इनसाफ नहीं दिख रहा तो क्या इसमें भी मेरा ही कुसूर है! मेरे सवालों का जवाब क्यों कोई देना नहीं चाहता! क्या मजहब की बुनियाद इतनी कमजोर हो चुकी है। फिर किसके सहारे मन में जीने की उम्मीद जागे। एक-एक कर सभी किनारे कटते ही जा रहे! क्या ठिकाना, कब किस बहाव में बह जाऊं! कोई तो नहीं, जो मुझे बहने से रोक सके।

अब्बा को गुजरे हुए कोई साल भर हो गये। घर के सभी कार्य पूर्ववत् ही चल रहे हैं। रही बात मेरी जिंदगी की, खैर वह भी अपनी रफ्तार से घिसट रही है। आदमी किसी की प्रतीक्षा कर सकता है मगर वक्त कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करता और हम इतने मजबूर हैं कि वक्त के साथ चल नहीं पाते! यही कारण है कि वक्त आगे बढ़ जाता है और हम पीछे छूट जाते हैं।

मेरे बाल सफेद होने लगे हैं। असमय ही चेहरे पर झुर्रियां दिखने लगी हैं। यह वही शरीर है जिससे हर कोई लिपटना चाहता था! मगर आज सब मुंह फेर रहे हैं। आंखों के नीचे गहरी काली लकीरें उभर आयी हैं। मेरे वे नयन-रक्त डोरे जिनके कारण जावेद ने अपनी सूझ-बूझ खो दी, दर्पण में अब दिखते ही नहीं! जाहिर है मैं किसी को नहीं लुभा सकती। देह सूखकर लकड़ी बन गयी है। वह भी किसी काम की नहीं रही।

फिर भी अशरफ के साथ मेरा रिश्ता है। मगर आज मेरा यह रिश्ता भी खत्म हो जायेगा। उन्हें शौहर कहने का मेरा हक भी आज के बाद नहीं होगा। कारण कि मेरे शौहर आज अपने चचा के साथ आये हैं मुझे तलाक देने। सुना है, सातवीं कक्षा में पढ़ रही अपनी लड़की से अशरफ का निकाह करना चाहते हैं। उनके साथ ही मौलबी साहब भी आये हुए हैं। सब लोग पूरी तैयारी के साथ आये हैं। अशरफ यानी कि मेरा शौहर अपने चचा की लड़की से निकाह करेगा और इसके लिए जरूरी है कि वह पहले मुझे तलाक दे।

'मैं निर्दोष हूं। बिल्कुल निर्दोष!' तलाक के पहले मैं अशरफ को यह विश्वास दिलाना चाहती हूं। कारण कि खुद को निर्दोष साबित किये बगैर मेरी रूह को चैन नहीं मिलेगा। भाई मेहमानों को मना रहे हैं। मगर मेहमान मानने को तैयार नहीं हैं।

'हम लोग यहां अपनी खातिरदारी कराने के लिए नहीं आये हैं। अशरफ तलाक देगा, फिर हम लोग यहां से चले जायेंगे।' अशरफ के चचा ने कड़े शब्दों में कहा। न जाने कहां से मुझमें इतनी हिम्मत आ गयी। मैं पर्दे की ओट से निकलकर सामने आ गयी और अशरफ से इस बेइंसाफी की वजह साफ शब्दों में बयान करने की बात पर अड़ गयी।

मेरे शौहर के कुछ बोलने के पहले ही उनके चचा मुझ पर बरस पड़े। 'तुम्हें शर्म आनी चाहिए! मगर तुम पंचों के सामने जुबान चलाती हो। गंदी व बदचलन औरत!' अशरफ के चचा बेशर्मी पर उतर आये। इस पर मेरे भाई ने एतराज जताया। मेरी बहन बिल्कुल पाक दामन है। आप अपनी जुबान पर लगाम दें। वर्ना।'

'वर्ना क्या, बाहर निकल कर देखो कि लोग-बाग क्या कहते हैं। कितनों की जुबान पर तुम लगाम लगाओगे?' इस पर भाई चुप हो गये। चचा बोलते रहे, 'ऐसा तुम्हारा मानना हो सकता है। लेकिन जो हकीकत है, उसे तुम झुठला नहीं सकते। शक के हाथ पैर नहीं होते। और तुम्हें यह जानना चाहिए कि इस्लाम में अगर कोई तलाक चाहे तो बस बात यहीं आकर खत्म हो जाती है। न वकील न आईन-अदालत। अल्लाह के बनाये हुए नियम व कानून पर कोई सवाल नहीं खड़े किये जा सकते। यह बात तुम्हें समझनी चाहिए और अपनी बहन को भी तुम्हें समझा देना चाहिए। यह रहा मेहर! इसे लो और अपनी बहन को थमा दो।'

शरीयत की दुहाई देते हुए मौलवी ने मेहर की रकम आगे बढ़ा दी। मुझे लगा कि किसी ने अचानक ही मेरे सीने में खंजर घुसा दिया हो। मेरी जुबान अनयास ही बंद हो गयी। मेरे भाई भी चुप हो गये।

मेरे शौहर अशरफ ने मौलवी साहब के वाक्य दुहराये, 'मैं अशरफ वल्द अहेदुर रहमान शबनम वल्द अकबर हुसैन को चार गवाहों तथा तुम्हारे भाई की मौजूदगी में खुदा के बताये हुए नेक रास्ते पर फरमाने इलाही की खातिर शादी जैसे पाक साफ बंधन तथा करार को तोड़ने के कारण मैं तुम्हें एक, दो, तीन एकै बाद दीगेर तलाक देता हूं।'

मेरे शौहर तलाक देकर चले गये। मैं काफी देर तक उसी जगह जस की तस खड़ी रही। उस रोज घर में चूल्हा नहीं जला। अम्मा बिलख-बिलखकर खूब रोयीं और फिर अचेत-सी बिस्तर पर पड़ गयीं। वह किसके आगे फरियाद करतीं!

अब तो कटी हुई पतंग की तरह दिशाहीन जिन्दगी है मेरी! किससे न्याय के लिए फरियाद करूं! मेरे साथ जो कुछ हुआ, उसे सोचकर मैं हैरान हूं। अल्लाह के इंसाफ पर मुझे शंका हो रही है। शरीयत के नाम पर कितने अनर्थ किये जा रहे हैं! मैं कोई गुनाहगार नहीं हूं फिर भी मुझे सजा दी गयी! मैं जानती हूं, मेरी जिन्दगी की रोशनी हवा के एक हल्के झोंके से कभी-भी बुझ सकती है और मेरे भाई मुझे दफनाकर अपना फर्ज अदा कर देंगे। मगर मेरे उन सवालों का क्या होगा? मेरे जीवन को किसने नरक बनाया? मेरे सुख-सपनों को किसने छीना? अल्लाह ने अथवा निहायत एक मर्द द्वारा बनायी गयी शरीयत ने? या दोनों ने? कौन देगा, जवाब! क्या मेरे प्रश्न अनुत्तरित ही रह जायेंगे? (समाप्त)

लघुकथा

नया सवेरा

रुग्ण अवस्था में पड़ा पति अपनी पत्नी की ओर देखकर रोने लगा, 'करमजली! तू करमजली नहीं. करमजले वे सारे लोग हैं जो तुझे इस नाम से बुलाते हैं.'

'आप भी तो इसी नाम से...!'

'पति फफक पड़ा. हाँ मैं भी. मुझे क्षमा कर दो!'

'आप मेरे पति हैं. मैं आपको क्षमा? क्या अनर्थ करते हैं.'

'नहीं सौभाग्यवंती.'

'मैं सौभाग्यवंती.! पत्नी को बहुत आश्चर्य हुआ.'

'आज सोच रहा हूँ. जब मैं तुम्हें मारा-पीटा करता था, तो तुम्हें कैसा लगता रहा होगा.' कहकर पति फिर रोने लगा.

समय इतना बदलता है. पति की कलाई और उँगलियों पर दवाई मलती करमजली सोच रही थी. अब हमेशा दर्द और झुनझुनी से उसके पति बहुत परेशान रहते हैं. एक समय ऐसा था कि उनके झापड़ से लोग डरते थे. चटाक हुआ कि नीला-लाल हुई वो जगह. अपने टूटी कान की बाली व कान से बहते पानी और फूटती-फूटती बची आँखें कहाँ भूल पाई है आज तक करमजली. फिर भी बोली 'आप चुप हो जाएँ.'

'मुझे क्षमा कर दो.'

पत्नी चुप रही कुछ बोल नहीं पाई.

'जानती हो. हमारे घर वाले ही हमारे रिश्ते के दुश्मन निकले. लगाई-बुझाई करके तुझे पिटवाते रहे. अब जब बीमार पड़ा हूँ तो सब किनारा कर गये. एक तू ही है जो मेरे साथ.

'मेरा आपका तो जन्म-जन्म का साथ है.'

पति फिर रोने लगा, 'मुझे क्षमा कर दो.'

'देखिये जब आँख खुले तब सवेरा. आप सारी बातें भूल जाइए.'

'और तुम...?'

'मैं भी भूलने की कोशिश करूँगी. भूल जाने में ही सारा सुख है.'

पत्नी की ओर देखकर पति सोचने लगा कि अपनी समझदार पत्नी को अब तक मैं पहचान नहीं सका. आज आँख खुली. इतनी देर से...!

-- विभा रानी श्रीवास्तव

सूरज की भीषण गर्मी से, लोगो को राहत पहँचाता
लू के गरम थपेड़े खाकर, अमलतास खिलता-मुस्काता
डाली-डाली पर हैं पहने, झूमर से सोने के गहने
पीले फूलों के गजरों का, रूप सभी के मन को भाता
लू के गरम थपेड़े खाकर, अमलतास खिलता-मुस्काता
दूभर हो जाता है जीना, तन से बहता बहुत पसीना,
शीतल छाया में सुस्ताने, पथिक तुम्हारे नीचे आता
लू के गरम थपेड़े खाकर, अमलतास खिलता-मुस्काता
स्टेशन पर सड़क किनारे,
तन पर पीताम्बर को धारे,
दुख सहकर, सुख बाँटो सबको
सीख सभी को यह सिखलाता
लू के गरम थपेड़े खाकर,
अमलतास खिलता-मुस्काता

-- डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

इन अश्कों को सियाही मैं आज कर डालूँ चलो
इस दिल को ही अब कलम कर लूँ
जुबां अल्फाज रख जो बयाँ कर नहीं पाती वो
हाल-ए-दिल मेरा तुमसे ए सनम कह लूँ
थिरकती नाचती होठों पे जो मुस्कान है देखी
वहीं जलते हुए शोलों से कुछ अंगार रक्खे हैं
धधक उठते जो अक्सर ही आहों से टकराके
झुलस के लफ्ज कुछ मासूम यूँ खाक होते हैं
नज्र झिलमिल में अक्सर तैरते जो सितारे है
ठहर थम सूख तप अनगिनत हैं खार उग बैठे
सँजोये उम्र एक जो ख्वाब जहाँ से छुपा करके
हो छलनी बंद पलकों से फिर तड़ीपार होते है
चेहरे पूनम तराशी है ये दुनिया चौंध की कायल
कि भीतर के अंधेरों को
ये बखूबी ढाँक है लेती
जो कहते एक अदा
इसको हकीकत जान लें
कयामत जीने के सबके
अलग अंदाज होते हैं

-- प्रियंवदा अवस्थी

दूर गाँव में मेरा घर है, मेरा एक प्रवास शहर है
मेरे बचपन की कुछ यादें, अपने यारों के कुछ वादे
एक नहीं सुनी हृदय की, पेट के थे मजबूत इरादे
छोड़ दी शस्य स्यामला धरती,
जिसकी सोंधी महक सुघर है! दूर गाँव में...
छूट गयी कोयल अमराई, बचपन की हो गई विदाई
होते ही किशोरवय मेरी, शहरों से हो गई सगाई
थाह नापता था मैं जिसकी,
छूट गयी वो बड़ी नहर है! दूर गाँव में...
भागम भाग हो गया जीवन
ठण्डी आह हो गया जीवन
सुस्ताने का समय नहीं है,
अनमिट प्यास हो गया जीवन
न ही छंद,न अलंकार हैं,
न धुन ताल न कोई स्वर है!
दूर गाँव में मेरा घर है!

-- डॉ दिवाकर दत्त त्रिपाठी

कैसे लाऊँ अधरों पर मुस्कान प्रिये
नैनो में है नीर भरा, हृदय में है तीर चुभा
निराशा ने हर और से घेरा
तन से ज्यों निकले जान प्रिये, कैसे लाऊँ...
प्रत्येक शिरा में अनल जगी, कैसी कठिन विरह घड़ी
निस दिन वाट जोहते तेरी
उर हुआ मरुस्थल सामान प्रिये, कैसे लाऊँ...
भर आया सागर नयनों में, टूटे स्वप्न पले जो पलकों में
पीछे हटना शूल के डर से
है सुमन का अपमान प्रिये, कैसे लाऊँ...
विरह के बाद तो मिलन है आता
निरीह नैनों में काजल है लजाता
व्योम जैसे आये भू से करने मिलन
तुम भी आ जाना रखने मेरा मान प्रिये
कैसे लाऊँ अधरों पर मुस्कान प्रिये
भटक रही हैं मेरी अभिलाषाएं
नित सोचे कैसे साथ तेरा पाएं
भाव विहीन हुई मेरी गीतिका
भाव विदारक हुआ मेरा गान प्रिये
कैसे लाऊँ अधरों पर मुस्कान प्रिये

-- प्रिया वच्छानी

मोहब्बत को तेरी मैंने यूँ सजाकर रखा
आँखों में तेरा ही चेहरा बसाकर रखा
तकदीर का दोष बताती रही ता-उम्र
तेरी बेवफाई का राज छिपाकर रखा
दर्द ये दिल का दिल में ही दबाए रखा
तेरे लिए दिल को मैंने समझाए रखा
घूँघट की आड़ ले पौंछ लिये आँसू मैंने
नकाब खुशी का चेहरे पर चढ़ाए रखा
यादों को तेरी जीने का सहारा समझा
तुमको लहरें खुद को किनारा समझा
दूसरों की खुशी के लिए टूट जाता है
खुद को मैंने वो ही टूटता तारा समझा
बहुत टूट गई थी पर खुद को संभाला मैंने
दर्द और मोहब्बत को एक साथ पाला मैंने
जानता है वो खुदा भी मेरी वफा की हद को
तुम्हें कभी नहीं अपने दिल से निकाला मैंने
सुलक्षणा से मैंने ये अफसाना लिखवाया
बता दिया हर राज उसे कुछ ना छिपाया
हैरान रह गयी एक पल को सुनकर वो भी
सजदे में मोहब्बत के सिर उसने झुकाया

-- डॉ सुलक्षणा अहलावत

शब्द गीतों को समर्पित/प्राण जीवन को समर्पित
और क्या अर्पण करूँ मैं/मेरा सब कुछ तुम्हें समर्पित
मन की हर बात समर्पित/वीणा के हर तार समर्पित
मेरी बाँहों का हार समर्पित
बगिया की बहार समर्पित
मुझे सबका जो स्नेह मिला है
उनको भी मेरा नेह समर्पित
मन समर्पित, तन समर्पित
जीवन का हर आनन्द समर्पित

-- सपना परिहार

साँसें बहुत प्रतीक्षारत हैं, बाहें उत्सुक आलिंगन को
प्रेम दीप आलोकित करके, मन अभिलाषित मधुर मिलन को
स्वप्न सजाए कब से आँखें, राह निहार रही हैं प्रियतम
मिलने को अभिलाषित धड़कन, तुम्हें पुकार रही हैं प्रियतम
मेरे दिल की धड़कन धड़कन, उत्सुक है प्रिय अभिवादन को
प्रेम दीप आलोकित करके, मन अभिलाषित मधुर मिलन को
मन भावों ने लिखा स्वागतम, पलकें तोरण द्वार बनी हैं
प्रियतम का स्वागत करने को, इच्छायें सब हार बनी हैं
पुष्प पाँखुरी बनी भावना, द्वार खडी है अभिनंदन को
प्रेम दीप आलोकित करके, मन अभिलाषित मधुर मिलन को
लगे एकटक पथ पर नयना, राह निहार रहे हैं प्रियतम
मन वीणा के झंकारित स्वर, तुम्हें पुकार रहे हैं प्रियतम
तन माटी पाने को आतुर, प्राण प्रिय पावन चंदन को
प्रेम दीप आलोकित करके, मन अभिलाषित मधुर मिलन को
आ जाओ यदि एक बार तुम, पावन मेरा दर हो जाए
पूर्ण प्रयोजन हो जीवन का
तुमसे मिलन अगर हो जाए
साँसें बहुत प्रतीक्षारत हैं
प्रियतम साँसों के वंदन को
प्रेम दीप आलोकित करके
मन अभिलाषित मधुर मिलन को

-- सतीश बंसल

कविता

एक वर्ष पहले/सात साल की उम्र में,
जिस बेटी का/कर दिया था विवाह,
आज वह घर लौट आई है
माँ से पूछती है- माँ! माँ! यह दहेज क्या होता है?
कहाँ मिलता है?/मुझे भी दहेज ला दो न माँ,
मैं भी ससुराल जाऊँगी
सासु माँ कहती है-/दहेज बिना मत आना तुम
माँ! सुनो न!/इस बार के हाट बाजार से
हम भी दहेज खरीद लेगें/मैंने कभी नहीं देखा माँ,
तुम को भी साथ चलना होगा
बेटी की भोली बातें सुन/माँ संज्ञा शून्य हो जाती है
एकटक निहार बेटी का चेहरा/अश्रुधार बहाती है
माँ को रोता देख बेटी,
दुखी हो कर कहती है
माँ मैं दहेज न लूंगी
सास को समझा दूंगी,
पर तू इतना तो बता दे माँ,
यह दहेज कैसा होता है?

-- निशा गुप्ता

दोहे

माँ जीवन का सार है, माँ है तो संसार।
माँ बिन जीवन लाल का, समझो है बेकार।।
माँ की ममता धरा पर, है सबसे अनमोल।
माँ जिसने भूला दिया, सबकुछ उसका गोल।।
माँ पीपल की छांव है, माँ बगिया के मूल।
माँ जीवन का सार है, हरे लाल के शूल।।

-- लाल बिहारी लाल गुप्ता

(बारहवीं कड़ी)

शान्तिदूत

विजय कुमार सिंघल

कृष्ण सोचने लगे कि यह जानते हुए भी कि वे शकुनि से कोई दांव नहीं जीत सकते, युधिष्ठिर दोबारा द्यूत खेलने को क्यों तैयार हो गये? यही नहीं वे १२ वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास करने को भी तैयार हो गये। क्यों? क्या युधिष्ठिर ने यह सोचा था कि उनके वनवास में चले जाने से कुरुवंश की दो शाखाओं के बीच विवाद और संघर्ष शान्त हो जाएगा और वे विनाश से बच जायेंगे? अगर युधिष्ठिर ने यह सोचा हो, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। वे परिवार का सम्मान और एकता बचाने के लिए कोई भी बलिदान या आहुति देने को सदैव तैयार रहते थे।

युधिष्ठिर ने माता कुंती को उनकी इच्छा से ही अपने चाचा विदुर के यहां छोड़ दिया, जो नगर के बाहरी क्षेत्र में एक साधारण घर में निवास करते थे। द्रोपदी के पांचों पुत्र, जो उस समय अबोध ही थे, अपने नाना द्रुपद के यहां चले गये। वहां उनकी क्षत्रियोचित शिक्षा-दीक्षा हुई। सुभद्रा अपने पुत्र अभिमन्यु को लेकर अपने मायके द्वारिका चली गयीं। वहां कृष्ण ने अभिमन्यु को सभी प्रकार की युद्ध कला की शिक्षा दी और श्रेष्ठ महारथी बनाया। सती महारानी द्रोपदी ने इस विषम परिस्थिति में भी अपने पतियों का साथ नहीं छोड़ा और वन में ही उनके साथ सभी सुख-दुःख भोगने का निश्चय किया।

लेकिन पांडवों के वनवास पर जाने की बात कृष्ण को अच्छी नहीं लगी। जैसे ही उनको इसकी सूचना मिली, वे वन में जाकर पांडवों से मिले। कृष्ण के आने पर सबको बहुत सांत्वना मिली। यद्यपि कृष्ण ने इस बात पर रोष प्रकट किया कि द्यूत जैसे कार्य में जाने से पहले मुझे सूचना नहीं दी गयी, अन्यथा मैं इस घटना को न होने देता और पांचाली का अपमान न होता। युधिष्ठिर को भी पांचाली के अपमान के कारण बहुत ग्लानि हो रही थी। उन्होंने सबसे इसके लिए क्षमा मांगी और यह वचन दिया कि आगे से कोई भी बड़ा निर्णय मैं अकेले नहीं करूँगा, वरन् सभी भाई मिलकर ही निर्णय करेंगे। कृष्ण ने यह निश्चय करने के लिए युधिष्ठिर को साधुवाद दिया।

इस विचार विमर्श में वन में रहते हुए द्रोपदी की सुरक्षा का प्रश्न भी उठा। उसका दायित्व स्वयं ही भीम ने अपने ऊपर ले लिया। उन्होंने कहा कि आगे से पांचाली की रक्षा का दायित्व मेरा है। अगर किसी ने पांचाली की ओर आंख उठाकर भी देखा, तो मैं किसी धर्म-अधर्म की चिन्ता किये बिना उसके प्राण ले लूंगा। कृष्ण ने इसके लिए भीम का अभिनन्दन किया। उन्होंने अपनी मुंहबोली बहिन महारानी द्रोपदी को वचन दिया कि किसी भी संकट के समय याद करने पर मैं तत्काल तुम्हारी सहायता को आ जाऊंगा।

उन्होंने पांडवों से कहा कि आप १२ वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास पूर्ण कर भी लें, तो भी यह निश्चित है कि दुर्योधन आपको आपका राज्य नहीं लौटायेगा। इसके लिए आपको कौरवों के साथ युद्ध करना होगा। इसलिए उन्होंने पांडवों को सलाह दी कि वनवास की अवधि का उपयोग वे अधिक से अधिक मित्र बनाने और अस्त्र-शस्त्रों का संग्रह करने में करें। यह सलाह देकर वे द्वारिका लौट गये और पांडवों का वनवास प्रारम्भ हुआ।

अब कृष्ण वनवास में पांडवों के साथ घटी घटनाओं पर विचार करने लगे। वनवास में पांडव घास-फूस की कुटी बनाकर रहते थे, जो उनके लिए कोई कठिन कार्य नहीं था। उनका अधिकांश समय अपने लिए और अतिथियों के लिए भोजन की व्यवस्था करने में बीतता था। उनसे मिलने के लिए आने वाले साधु-संतों के साथ धर्म चर्चा होती रहती थी। शेष समय वे अस्त्र-शस्त्रों का अभ्यास करने में लगाते थे। उन्होंने अपनी रक्षा का प्रबंध कर रखा था और हर समय कम से कम एक भाई अवश्य जगा रहता था, ताकि जंगली पशुओं और शत्रुओं से अपनी रक्षा की जा सके।

कुल मिलाकर वे बहुत कष्टपूर्ण जीवन जी रहे थे, लेकिन उनके हृदय में इसके लिए कोई ग्लानि नहीं थी। फिर भी वे राजसभा में हुए द्रोपदी के अपमान को एक क्षण के लिए भी भूले नहीं थे और उस समय की प्रतीक्षा कर रहे थे, जब वे उसके अपराधियों को उचित दंड देकर अपनी प्रतिज्ञाएं पूर्ण कर सकेंगे।

उनको सबसे अधिक चिन्ता अतिथियों के भोजन की होती थी। वे स्वयं तो फल आदि खाकर रह सकते थे, लेकिन अतिथियों का सत्कार करना उनका कर्तव्य था। सौभाग्य से उनको सूर्य भगवान की कृपा से एक ऐसा अक्षय पात्र मिल गया था, जिसकी सामग्री तभी समाप्त होती थी, जब भोजन बनाने वाला भोजन कर चुका हो। अतः जब सभी अतिथि और पांडव भी भोजन कर लेते थे, तो अन्त में द्रोपदी भोजन करती थीं। इस प्रकार उनकी समस्या हल हो गयी थी।

लेकिन दुर्योधन पांडवों को १३ वर्ष के वनवास में भेजकर भी अपनी दुष्टता नहीं छोड़ सका। वह पांडवों को अधिक से अधिक कष्ट देना चाहता था, ताकि उसके मन को संतुष्टि मिले। एक बार दुर्योधन के महल में दुर्वासा ऋषि पधारे, तो उसने उनको अपनी सेवा से प्रसन्न कर लिया और उनसे यह निवेदन किया कि वे युधिष्ठिर को भी अपने आतिथ्य का अवसर दें। इसके साथ ही उसने यह वचन भी ले लिया कि वे उसी समय भोजन हेतु जायें, जब सभी पांडव और द्रोपदी भी भोजन कर चुकी हो।

इसके अनुसार ऋषि दुर्वासा अपने अनेक शिष्यों के साथ पांडवों के पास वन में दोपहर बाद उस समय पहुंचे जब सभी व्यक्ति भोजन कर चुके थे। उन्होंने आते ही आदेश दिया कि मैं अपने शिष्यों के साथ स्नान करने जा रहा हूँ, लौटकर सब यहां भोजन करेंगे। यह कहकर वे तो चले गये और इधर पांडव चिन्तित हो गये कि उनके लिए भोजन का प्रबंध कैसे होगा। अगर ऋषि को भोजन न कराया जाता, तो वे शाप देकर चले जाते, जिससे पांडवों का विनाश भी हो सकता था।

घोर संकट सामने देखकर द्रोपदी ने भगवान श्रीकृष्ण को याद किया। अपने वचन के अनुसार वे तत्काल प्रकट हो गये और आते ही उन्होंने भोजन मांगा। द्रोपदी ने कहा कि 'भैया, जिस समस्या के समाधान के लिए आपको याद किया है, वही समस्या आप स्वयं उपस्थित कर रहे हैं।' कृष्ण ने कहा कि वह पात्र लाओ, जिसमें भोजन बनाया गया था। द्रोपदी वह पात्र लायी, तो उसमें अन्न का एक दाना चिपका हुआ था। कृष्ण ने कहा कि इतना मेरे लिए पर्याप्त है। उन्होंने वह अन्न खा लिया और इस तरह डकार ली, मानो पेट भरकर खाया हो।

इधर कृष्ण के डकार लेते ही उधर ऋषि दुर्वासा और उनके शिष्यों के उदर भर गये और उनको भी डकार आने लगी। भूख समाप्त हो जाने के कारण उनका साहस फिर पांडवों के पास जाने का नहीं हुआ और वे वहीं से भाग गये। इस प्रकार पांडवों को संकट में डालने का दुर्योधन का वह षड्यंत्र विफल हो गया।

इसी प्रकार एक बार दुर्योधन की बहिन दुःशला का पति सिंधुराज जयद्रथ पांडवों की कुटी में उस समय आ धमका, जब वहाँ द्रोपदी अकेली थी और पांडव आस-पास के जंगल में लकड़ी लेने गये थे। द्रोपदी ने ननदोई होने के नाते उसका स्वागत किया। इसका जयद्रथ ने गलत अर्थ लगाया। उसने द्रोपदी को लुभाने के लिए चिकनी-चुपड़ी बातें कीं और अपने महल में सुख-सुविधायें भोगने के सपने दिखाये। इस पर द्रोपदी ने उससे कहा कि 'मैं वन में अभावों के बीच अपने पतियों के साथ ही सुखी हूँ और मुझे किसी की कृपा की आवश्यकता नहीं है। अगर मुझे सुख-सुविधायें ही भोगनी होतीं, तो मैं भी अपने मायके चली जाती। मेरे पिता द्रुपद भी बड़े राजा हैं।'

लेकिन जयद्रथ पर इन बातों का उल्टा ही प्रभाव हुआ। वह द्रोपदी से और भी अधिक आग्रह करने लगा। इस पर द्रोपदी ने उसको बहुत हड़काया और तुरन्त भाग जाने के लिए कह दिया, वरना पांडव उसको जीवित नहीं छोड़ेंगे। यह सुनकर जयद्रथ को चले जाना चाहिए था, लेकिन उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो चुकी थी। इसलिए वह द्रोपदी के साथ दुर्व्यवहार और हाथापायी पर उतर आया। यह देखकर द्रोपदी ने जोर से चिल्लाकर अपने पतियों को आवाज लगा दी। उस समय भीम और अर्जुन कुटी के पास के ही जंगल में थे। उन्होंने द्रोपदी का चिल्लाना सुना, तो तुरन्त कुटी की ओर दौड़े। खतरा भाँपकर जयद्रथ वहां से भाग खड़ा हुआ।

(अगले अंक में जारी)

सफलता की आधारशिला सच्चा पुरुषार्थ

पंकज 'प्रखर'

मानव ईश्वर की अनमोल कृति है। लेकिन मानव का सम्पूर्ण जीवन पुरुषार्थ के इर्द गिर्द ही रचा बसा है। गीता जैसे महान ग्रन्थ में भी श्रीकृष्ण ने मानव के कर्म और पुरुषार्थ पर बल दिया है। रामायण में भी आता है 'कर्म प्रधान विश्व रचि राखा' अर्थात् बिना पुरुषार्थ के मानव जीवन की कल्पना तक नहीं की जा सकती। इतिहास में ऐसे अनगिनत उदाहरण भरे पड़े हैं, जो पुरुषार्थ के महत्व को प्रमाणित करते हैं। हम इतिहास टटोलकर देखें तो ईसा मसीह, सुकरात, अब्राहम लिंकन, कार्ल मार्क्स, नूरजहाँ, सिकंदर आदि ऐसे कई उदाहरण इतिहास में विद्यमान हैं, जिन्होंने अपने निजी जीवन में बहुत से दुःख और तकलीफें झेलीं। इनके जीवन में जितने दुःख और परेशानियां आईं, इन्होने उतनी ही मजबूती के साथ उनका मुकाबला करते हुए न केवल एक या दो बार बल्कि जीवन में अनेक बार उनका डटकर मुकाबला किया और अपने प्रबल पुरुषार्थ से उन समस्याओं और दुःखों को परास्त करते हुए इतिहास में अपना एक सम्माननीय स्थान बना लिया।

सिकंदर फिलिप का पुत्र था कहा जाता है कि सिकंदर की माँ अपने प्रेमी के प्रणय जाल में इतनी अंधी थी कि उसने अपने पति फिलिप को धोखे से मरवा दिया और सिकंदर का भी तिरस्कार किया। मगर सिकंदर का इतना प्रबल पुरुषार्थ था कि उसने अपने दुर्भाग्य को सौभाग्य में परिणित कर दिया।

एक मूर्तिकार का बेटा जो देखने में बड़ा कुरूप था उसने अपने जीवन की शुरुआत एक सैनिक के रूप में की और बहुत छोटी उम्र में उसके पिता का साया उस पर से उठ गया। अब उसकी माँ ही थी जो अपने पुत्र और अपने जीवन का निर्वाह दाई का कम करके करती थी। यही कुरूप बालक आगे चलकर सुकरात के नाम से प्रसिद्ध हुआ, जिसने अपने पुरुषार्थ से दर्शनशास्त्र के जनक की उपाधि प्राप्त की।

एक सम्पन्न परिवार में जन्म लेने वाले लिओनार्दो विन्ची को भी अपने जीवन में माता-पिता के बीच हुए अलगाव के कारण कई प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ा था। बहुत गरीबी में उसने अपना जीवन बिताया। थोड़ा बड़ा होते ही घर की सारी जिम्मेदारी उसके कंधों पर आ गयीं, पर उसने अपनी जिम्मेदारियों को पूरी निष्ठा से निभाया और अपनी कलाकृतियों के द्वारा इटली ही नहीं अपितु पूरे विश्व में शिल्प और चित्रकला के नये आयाम स्थापित कर अमर हो गया।

ईसामसीह जिनके आज दुनिया में एक तिहाई अनुयायी हैं उनका जन्म एक बड़ई के घर में हुआ, लेकिन ईश्वर में अपनी आस्था और विश्वास के द्वारा श्रेष्ठ मार्ग पर चलते हुए सभी विघ्न बाधाओं को काटते हुए वे एक महामानव बने और लोगों के लिए सत्य का मार्ग अवलोकित कर गये।

भारत वर्ष को एक राष्ट्र के रूप में संगठित करने वाले चन्द्रगुप्त मौर्य का जन्म भी एक दासी से हुआ था। लेकिन उसे चाणक्य जैसे गुरु मिले और उनके बताये रास्ते पर चलते हुए वह अपने पराक्रम और पुरुषार्थ के द्वारा राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने में सफल रहा।

प्रसिद्ध विचारक और दार्शनिक कन्फ्युशियस को तीन वर्ष की छोटी-सी उम्र में ही पिता के स्नेह से वंचित होना पड़ा था। अपने पिता को वो अभी ठीक प्रकार से पहचान भी नहीं पाया था कि वह अनाथ हो गया और छोटी सी उम्र में ही उसे जीविकोपार्जन के कार्य में लगना पड़ा। लेकिन बड़ा बनने की इच्छा उसमें प्रारम्भ से ही थी। यद्यपि १९ वर्ष की आयु में ही उसका विवाह हो गया और तीन संतानों के साथ बड़ी गरीबी में उसने जीवन जिया, लेकिन अपने पुरुषार्थ और दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण उसने चमत्कार कर दिखाया और महान दार्शनिक कहलाया।

कार्ल मार्क्स यद्यपि गरीब था और मरते तक उसने तंगहाली में ही जीवन जिया, लेकिन अपनी संकल्प शक्ति और दृढ़ विचारों द्वारा दुनिया के करोड़ों लोगों को अपने भाग्य का विधाता आप बना गया। उसने अपनी पुस्तक 'दास केपिटल' को सत्रह बार लिखा, अठारवीं बार में वह अपने उदात्त रूप में निकलकर बाहर आई और साम्यवाद की आधारशिला बन गयी।

नूरजहाँ जिसके इशारे पर जहांगीर अपना शासन चलाता था एक निर्वासित ईरानी की बेटी थी जो शरणार्थी बनकर सम्राट अकबर के दरबार में आया था।

अपनी संगठन शक्ति, दूरदर्शिता, दावपेंच और सीमित साधनों के बल पर औरंगजेब को नाकों चने चबवाने वाले शिवाजी के पिता शाहजी एक रियासत के दरबारी थे। शिवाजी को अपने पिता का किसी प्रकार का सहयोग या आश्रय नहीं मिला। उनका साहस केवल माता की शिक्षा और गुरु के ज्ञान पर टिका हुआ था। वे साहस और पराक्रम के बल पर स्वराज्य के लक्ष्य की ओर सफलतापूर्वक बढ़ते गये एवं यवनों से जूझकर छत्रपति राष्ट्राध्यक्ष बने।

शेक्सपियर जिनकी तुलना संस्कृत के महान कवि कालिदास से की जाती है एक कसाई के बेटे थे। परिवार के निर्वाह हेतु उन्हें भी लम्बे समय तक वही काम करना पड़ा, लेकिन बाद में अपनी अभिनय प्रतिभा तथा साहित्यिक अभिरुचि के विकास द्वारा अंग्रेजी के सर्वश्रेष्ठ कवि तथा नाटककार बन गये।

न्याय और समानता के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने वाले अब्राहम लिंकन को कौन नहीं जानता। उन्होंने अपने जीवन में असफलताओं का मुँह इतनी बार देखा कि यदि पूरे जीवन के कार्यों का हिसाब लगाया जाए, तो उनमे सौ में से निन्यानवे तो असफल रहे। जिस काम में भी उन्होंने हाथ डाला उसी में असफल हुए। रोजमर्रा के निर्वाह हेतु एक दूकान में नौकरी की तो दूकान का दिवाला निकल गया। किसी मित्र से साझेदारी की तो धंधा ही डूब गया। जैसे तैसे वकालत पास की, लेकिन वकालत नहीं चली। चार बार चुनाव लड़े और हर बार हारे। जिस स्त्री से शादी की उसके साथ भी सम्बंध बिगड़ गये और वह इन्हें छोड़कर चली गयी। जीवन में केवल एक बार उनकी महत्वाकांक्षा पूरी हुई, जब वे राष्ट्रपति बने और इस सफलता के साथ ही वे विश्व इतिहास में अमर हो गये।

विख्यात वैज्ञानिक आइन्स्टाइन जिसने परमाणु शक्ति की खोज की, वे बचपन में मूर्ख और सुस्त थे। उनके माता-पिता को चिंता होने लगी थी कि यह अपना जीवन कैसे चला पायेगा। लेकिन जब उन्होंने प्रगति पथ पर बढ़ना शुरू किया तो सारा संसार चमत्कृत हो गया।

सफलता के लिए अनुकूल परिस्थितियों की बात नहीं देखी जाती, बल्कि संकल्प शक्ति को जगाया उभारा एवं विकसित किया जाता है। आशातीत सफलता हर क्षेत्र में प्राप्त करने का एक ही राजमार्ग है प्रतिकूलताओं से टकराना और अंदर छिपी सामर्थ्य को उभारना। ■

सोशल मीडिया का महत्व

शरद नारायण खरे

निःसंदेह वर्तमान में फेसबुक व व्हाट्सएप जैसे सोशल मीडिया के माध्यमों की परस्पर परिचय, मित्रता, आत्मीयता व जानकारियों के साथ ही भावनाओं के आदान-प्रदान में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है ! अपरिचितों के मध्य मैत्री सम्बंधों की स्थापना, बिछुड़ों की खोज, भावनात्मक संवेगों का आदान-प्रदान, आपसी घनिष्टता ये समस्त विषिष्टताएं हमें सोशल मीडिया में दृष्टिगोचर होती हैं !

मैत्री व भाईचारे की दृष्टि से सोशल मीडिया की व्यापक रूप में सकारात्मक भूमिका है ! प्रेम, अपनत्व, सौहार्द, सहिष्णुता, सद्भाव प्रसारित करने में सोशल मीडिया की निश्चित रूप से सार्थक भूमिका है और इस दृष्टि से सोशल मीडिया व्यापक रूप में सफल भी रहा है!

पर संकीर्ण व दूषित मानसिकता के लोग इस सशक्त माध्यम का दुरुपयोग भी करने में लगे हैं ,जिससे परस्पर वैमनस्य, कट्टरता, दुर्भाव, असहिष्णुता, उन्माद, फूहड़ता, असामाजिकता, अराष्ट्रीयता, अमानवीयता, अनैतिकता, स्त्री-असम्मान, कुसंस्कृति, साम्प्रदायिकता, जातिगत विद्वेष, वर्गभेद, जातिगत संघर्ष व क्षेत्रवाद आदि को प्रोत्साहन मिल रहा है! पर यह दोष सोशल मीडिया का नहीं है, न ही यह उसकी असफलता है, (शेष पृष्ठ २३ पर)

बिछड़ के हमसे भला तुम किधर को जाओगे
हमें यकीन है तुम एक दिन तो लौट आओगे
हरेक सितम सहा हंसकर, तेरा तोहफा समझा
ये इनायतें अपनी ये करम कैसे भूल पाओगे।
जख्म नासूर बन भी जाएं तो रखेंगे ताजा इन्हें
जब आओगे लौटकर मरहम तुम्हीं लगाओगे
मैं हूं तन्हा और तेरी तन्हाईयों से वाकिफ हूं
हारकर दिल से अपने इक दिन मुझे बुलाओगे
छूकर गुजरेगा किसी दिन तुम्हें अहसासे-वफा
रोओगे हमारे रोने से
मेरे लिए ही मुस्कुराओगे
खो दिया मैंने उम्र भर
का 'जानिब' चैनो-सुकूँ
जान पे बन आई है
और कितना याद आओगे

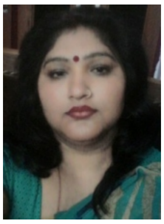

-- पावनी दीक्षित 'जानिब'

आज दौलत के लिए माँ को सताता क्यों है
माँ तेरी है तो निगाहें तू चुराता क्यों है
जान देता था कभी मुझपे मेरे लख्ते जिगर
आज हर बात पे तू माँ को रुलाता क्यों है
मैंने गुरबत में मुसीबत से तुझे पाला है
ऐ मेरे लाल कहर मुझपे तू ढाता क्यों है
वास्ते तेरे दुआ मैंने किया शामो सहर
इस तरह माँ को बता छोड़के जाता क्यों है
तेरी खुशियों में तेरी माँ की दुआएँ शामिल
छोड़के माँ को तू ये
आँसू पिलाता क्यों है
'शुभदा' बच्चों से यही
कहती है ऐ मेरे लाल
सारे पर काटकर ममता
को उड़ाता क्यों है

-- शुभदा वाजपेई

प्यार भर किस्सा सुनाया है मुझे
फिर खिलौना सा बनाया है मुझे
भर नजर जब भी तुझे देखा तभी
हुस्न तेरा तो लुभाया है मुझे
ख्वाहिशें होने लगी पूरी तभी
खास सपना जब दिखाया है मुझे
खेलता मुझसे रहा है अब तलक
आज क्यों तूने रुलाया है मुझे
धड़कनें हर नाचने मेरी लगी
जब गले तूने लगाया है मुझे
हो गयी बैचेन तेरे ही लिए
बाहु पाशों में बँधाना है मुझे
तू फिदा जो हो गया मुझ पर तभी
नैन काजल सा लगाया है मुझे
लोग कहते क्या नहीं मुझको पता
सत्य बातों को बताना है मुझे
साथ तेरा 'मधु' निभायेगी सदा
रोज हर तुझको सताना है मुझे

-- डॉ मधु त्रिवेदी

उसी माँ की दुआओं से हमारा हर भला होगा
जिस आँचल में औलाद का, सपना पला होगा
सुकूं मिलता नहीं है, दीन दुनिया में कभी उसको
जिस औलाद की हरकत से, माँ का दिल दुखा होगा
बहुत ही खूबसूरत जिंदगी, माँ संग गुजारी है
जिगर का खून का रिश्ता, कभी कैसे जुदा होगा
कभी वो बद्दुआ करती नहीं, औलाद को अपनी
हमेशा माँ के होंठों पर, फकत हर्फे-दुआ होगा
सुनो माँ की खुशी में है, खुदा की हर खुशी शामिल
जब नाराज होगी माँ,
खुदा फिर तब खफा होगा
खुशी अपनी सभी कुर्बान
कर दी, माँ की खुशियों पर
यही कुछ सोचकर 'रश्मि',
हक माँ का अदा होगा

-- रवि रश्मि 'अनुभूति'

छुप-छुप कर हमें यूं न सताया करो
बात दिल की मेरे जान जाया करो
दूर बैठकर तकते हो इस कदर
सदके में मेरी नजरें झुकाया करो
इकरार करने का अंदाज निराला है
भरी महफिल में सहम जाया करो
जमाना शातिर है नहीं इसको गुमां
बेझिझक मिलने को न आया करो
हसीं ख्वाब सजाये हैं पलकों ने तेरी
मेरी ख्वाहिशों पर रहम खाया करो
रंगीन शाम का लुफ्त उठा लो मगर
जाम हाथों का मेरी पी जाया करो

-- प्रीती श्रीवास्तव

आज तुम भी सनम बेवफा हो गए
मैं मनाता रहा तुम खफा हो गए
बात ये गर नहीं तो जरा कुछ कहो
अनकही सी कोई दास्तां हो गए
प्यार की रोशनी मुझ में बाकी रही
तुम मेरी जिंदगी का नशा हो गए
मान बैठा तुम्हें अपनी किस्मत सनम
तुम मेरी जिंदगी की सजा हो गए
हर कदम पास तेरे ही आता रहा
दूर तुम क्यों सनम हर दफा हो गए
चाहते हर घड़ी मेरी प्यासी रहीं
हम तरसते रहे वो घटा हो गए
देखते ही तुम्हें दिल तुम्हारा हुआ
जिंदगी का तुम्हीं सिलसिला हो गए

-- सौरभ दीक्षित

क्षणिका

नींद से जाग
मंजिल पाने भाग
छोड़कर आलस्य
नींद पूरी लो
स्वस्थ जीवन जीने की
यह औषधि है!

-- नवीन कुमार जैन

तुम न होगे तो और क्या होगा
कोई मंजिल न रास्ता होगा
दिन न निकलेगा बिन तेरे दिलबर
स्याह रातों का सिलसिला होगा
जीस्त तेरे ही नाम कर दी है
वो ही होगा कि जो बदा होगा
चाँद तारों में छुप गये गर तुम
इस जहाँ में नहीं खुदा होगा
मैं तसव्वुर सजा रही तेरे
क्या खबर थी कि बेवफा होगा
गीत गजलों में जिन्दगी केवल
है हकीकत ये सोचना होगा
दर्द तन्हा सदा रुलायेगा
ये तबस्सुम 'अधर' जुदा होगा

-- शुभा शुक्ला मिश्रा 'अधर'

मेरे अक्स में फिर अक्स तेरा न लगे
जुस्तजू न रहे तेरी कोई रिश्ता न लगे
तुझे भूलने की नाकाम कोशिश मैं करूं
मेरी रूह से तू कहीं मगर जुदा न लगे
कैफियत कैसी है जीस्त की क्या कहूं
मेरा था वो पर अब क्यों मेरा न लगे
ताउम्र न भूलेंगी ज़फाएं तेरी ओ रहबर
कि तेरे बाद मुझे
कोई बेवफा न लगे
देख हालत मेरी रो
उठी है कायनात भी
यूं किसी को भी प्यार
की बद्दुआ न लगे

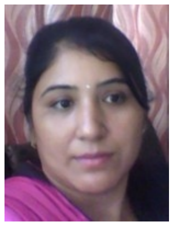

-- कामनी गुप्ता

रहे हाथ सर पर भवानी लिखेंगे
जमाना कहे माँ दिवानी लिखेंगे
तेरी याद दिल में बसाकर सनम अब
निगाहों की सच्ची कहानी लिखेंगे
के सागर के मोती नगीनें बनेंगे
मिलेगा हमारा न सानी लिखेंगे
चहुँ ओर प्रेम का दीपक जलाकर
दिलों पर सभी के निशानी लिखेंगे
शहीदों की मुझको उपाधि मिल जाए
मिले एक चूनर जो धानी लिखेंगे
गजल में फसाना 'कँवल' क्या लिखेंगे
हरिक बात उसी की जुबानी लिखेंगे

-- बबीता अग्रवाल 'कँवल'

मुझे आँसुओं से शिकायत नहीं है
मगर रोते रहने की आदत नहीं है
तुझे तेरी गलती मैं मुँह पर कहूँगा
मुहब्बत है तुझसे, अदावत नहीं है
जो खोदे है गड्ढा वही उसमें गिरता
हकीकत है ये तो, कहावत नहीं है
खाकर के चाँटा भी चुप बैठे रहना
ये नपुंसकता है, शराफत नहीं है
हर इक ईंट पर मार सकता हूँ पत्थर
'मोजू' में न समझो लियाकत नहीं है

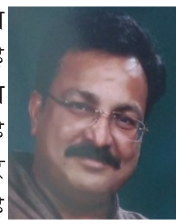

-- मनोज 'मोजू'

गृहस्थ नाव

दीपक के साथ हुए झगड़े में संध्या ने घर छोड़ने का फैसला कर लिया। वह जरुरी सामान बैग में ठूँस ही रही थी कि उसकी नजर कलाई घड़ी पर पड़ी। 'ये तो दीपक की चाय का समय है, चाय समय पर न मिले तो सिर दुखने लगता है उसका।' उसने दीपक की ओर देखा, जो आँखों पर बाँह रखे लेटा हुआ था।

बैग वहीं छोड़ वह रसोई में गई और चाय की पतीली गैस पर चढ़ा डिब्बे से बिस्किट निकालने लगी। 'ओफ्फो, बिस्किट को भी आज ही खत्म होना था। दीपक तो कभी खाली चाय नहीं पीते, अब क्या करूँ ? शाम अलग गहराने वाली है।' उसने पुनः घड़ी पर नजर डाली और तुरंत तेल की कड़ाही चढ़ा चिप्स तले और ट्रे ले जाकर कमरे में इतनी तेज आवाज के साथ रखी कि दीपक सुन ले। फिर रसोई में आकर खड़े खड़े ही तेजी से चाय का घूँट भरने लगी।

'बाप रे, छत पर बड़ियाँ डाली थीं सूखने को!' चाय अधूरी छोड़ वह छत की ओर भागी। बड़ियाँ समेट सीढ़ियाँ उतर ही रही थी कि उसका ध्यान कोने में पड़े धुले कपड़ों के ढेर पर गया। पुनः घड़ी पर नजर दौड़ाई। 'जहाँ इतनी देर हुई वहाँ दो मिनिट और सही!' कपड़ों की तह बनाकर उन्हें अलमारी में जमाया और बैग उठा बाहर निकल गई। कॉरिडोर तक पहुँची ही थी कि मोबाइल घनघना उठा, 'हेलो बेटा! कैसे हो?' आवाज को सामान्य बनाते हुए संध्या ने पूछा।

'ठीक हूँ माँ, कल से अचानक कॉलेज की छुट्टियाँ लग गई हैं, इसलिए कल सुबह की फ्लाइट से पहुँच रहा हूँ।' उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही उधर से फोन काट दिया गया।

अबकी संध्या ने आकाश की ओर नजर डाली, फिर एक दीर्घ श्वांस छोड़ते हुए बैग उठाकर भीतर आ गई।

-- शशि बंसल, भोपाल

ऐतराज

'एक बात बताइए योगिता जी, जब हमारी शादी तय होकर सगाई की रस्म भी पूरी हो चुकी है, तो फिर आपके माँ-पिता ने हमें बाहर घूमने जाने की अनुमति क्यों नहीं दी? अगर उन्हें अपने होने वाले दामाद पर विश्वास नहीं तो विवाह के बाद अपनी बेटी के भविष्य के प्रति वे आश्वस्त कैसे हो सकते हैं?'

'बात यह है नवीन जी कि उन्होंने मेरे कहने पर ही हमें कहीं जाने की अनुमति नहीं दी. चूँकि इससे पहले मेरे दो रिश्ते टूट चुके हैं. दोनों बार ही सगाई की रस्म के बाद जब हमें एक साथ घूमने जाने की अनुमति मिली तो लड़कों ने घंटों बाहर रहने के बाद मुझे विश्वास में लेकर ऐसा प्रस्ताव रखा जिसके लिए मेरे संस्कार विवाह पूर्व अनुमति नहीं देते. अतः मैंने माँ को सब कुछ स्पष्ट बताते हुए निर्णय लिया कि मैं ऐसे लड़के से विवाह हरगिज नहीं करूँगी जो मॉडर्न-कल्चर की आड़ में मेरी भावनाओं को आहत करे. आप इस कमरे में जितनी देर चाहें बातें कर सकते हैं. अगर रिश्ता टूटना ही होगा तो घर के बाहर जाकर क्यों टूटे, यहीं क्यों नहीं?'

'ओह! सुनकर बहुत दुःख हुआ योगिता जी, लेकिन लड़के ही नहीं, आजकल लड़कियाँ भी मॉडर्न-कल्चर के रोग से अछूती नहीं हैं और माँ-पिता की छूट का नाजायज फायदा उठाती हैं. मैंने भी दो रिश्ते इस वजह से तोड़े कि सगाई के बाद घूमते हुए कार में ही लड़कियों ने स्वयं अपने हाव-भाव से मुझे बहकाने का

प्रयास किया. मुझे दिली प्रसन्नता है कि मेरा रिश्ता आप जैसी संस्कारवान लड़की से तय हुआ है. क्या अब भी आपको मेरे साथ घूमने चलने पर ऐतराज है?'

-- कल्पना रामानी

पुत्र मोह की ज्वाला

'रामदीन जी, क्या हो रहा है?'

'कुछ नहीं कृष्णदास जी, लड़के को कंपनी दोगुना पैकेज देकर अमेरिका भेज रही है, पर मेरा दिल नहीं मानता। लड़के शैलेन्द्र का अनुरोध है कि हम भी साथ चलों। सेवा निवृति के बाद यहाँ कोई काम तो है नहीं।'

इस पर रामदीन ने कहा, 'बुरा मत मानना और न ही मैं आपको डरा रहा हूँ, पर हमारे पड़ौस की सत्य घटना बता रहा हूँ। मेरे पडौसी का अमेरिका में मन नहीं लगा और वापस यहाँ आ गए। उनकी पत्नी पुत्र मोह में बीमार हो गयी और कुछ ही दिन में चल बसी। उनका आपकी तरह एकमात्र लड़का कंधा देने भी नहीं आ पाया।' वे आगे बोले- 'जिस इकलौते लड़के को पढ़ा-लिखाकर लायक बनाया वह माँ-बाप की सेवा करना तो दूर, अंत समय भी हाथ लगाने तक को भी उपलब्ध नहीं था।'

इतने में ही लड़का शैलेन्द्र आ गया और कहने लगा- 'तैयारी करो, पापा! कम्पनी ने पांच वर्ष का अमेरिका में जॉब करने का बांड भरवा लिया है। पांच वर्ष नौकरी कर अच्छा पैसा इकट्ठा कर लौट आयेंगे।'

रामदीन जी कृष्णदास की बातों पर मनन करते हुए दुखी मन से अपने पुत्र शैलेन्द्र को कहा- 'बेटा, जब तू पांच वर्ष का बांड भर ही आया है, तो जा! हम पति-पत्नी का तो यहाँ मेरी पेंशन से ही गुजारा हो जाएगा। मै तुझे एयरपोर्ट छोड़ आता हूँ।'

उनके रवाना होते ही पीछे से शैलेन्द्र की माँ बेहोश हो गई। एयरपोर्ट से लौटकर रामदीन जी ने डाक्टर को बुलाया। चिकित्सक ने जांच कर कहा कि

इन्हें दवा से ज्यादा तनाव-मुक्त रखने की अधिक आवश्यकता है। यह सुनकर रामदीन जी स्वयं ही चिंतित हो इस सोच में डूब गए कि मैं पत्नी को तनावमुक्त कैसे रखूँगा जो पुत्र मोह की ज्वाला में जल रही है।

-- लक्ष्मण रामानुज लडीवाला

पश्चाताप

दुर्घटना में आहत होकर वह पिछले एक सप्ताह से विकलांग होकर बैसाखी पर चलने को मजबूर था, आज वह कॉलोनी छोड़कर चलते-चलते मेनरोड पर आ गया था। लेकिन सड़क पर गाडियों की रेलमपेल देखकर वह सड़क पार करने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था ।

उसको असहाय देखकर एक नौजवान ने उसका हाथ पकड़कर उसे सड़क पार करा दी। इस पर वह अपने कॉलेज के दिनों की यादों में खो गया, जबकि वह अपने एक विकलांग साथी को न केवल 'लंगड़ा' कहकर अपमानित करता था, बल्कि उसकी बैसाखी छिपाकर उसे परेशान भी करता रहता था। पर आज उसे अपनी भूल का अहसास हो रहा था।

ग्लानि

वह दिन भर आवारागर्दी के बाद घर लौटा, तो देखा कि उसकी छोटी बहन कलप-कलपकर रो रही है। वह कह रही थी कि 'मैं कल से कॉलेज नहीं जाऊँगी!' बहुत पूछने पर उसने बताया कि वह स्कूटी से कॉलेज जा रही थी कि बगल से बाइक से निकले लडकों में से बाइक पर पीछे बैठा उसका दुपट्टा झपट ले गया।

सुनकर उसे बड़ी ग्लानि हुई, क्योंकि वह तो

मौजमस्ती में ऐसा अनेक लड़कियों के साथ कर चुका था। पर आज उसे लगा कि मानो उसने अपनी ही बहन का दुपट्टा खींचने का अपराध किया है।

-- प्रो. शरद नारायण खरे

बाल कविता

छुक-छुक गाड़ी चलती जाती, कू-कू की आवाज लगाती
पटरी ऊपर दौड़ रही है, गाँव बस्ती जोड़ रही है
बोली मुझसे मेरी नानी, पहले होगी टिकट कटानी
हमने अपनी टिकट कटाई, दी पटरी पर रेल दिखाई
बैठ गए सब गाड़ी आई, हमने देखे पर्वत खाई
हमको कितनी सैर कराती
गाड़ी सबका भार उठाती
रेल पहुँचने वाली दिल्ली
छत के ऊपर मोटी बिल्ली
रेल पटरियाँ तिरछी आड़ी
दौड़ रही है कैसे गाड़ी

-- सुनीता काम्बोज

गधे और बंदर

गुरमेल सिंह भमरा, लंदन

इस वर्ष गर्मी कहर की थी। जालंधर की गर्मी और मच्छरों से मुकाबला, कोई करे भी तो क्या करे? दफ्तर में लोगों से सर खपाना और ऊपर से बिजली की आँख मिचौली, सोचा कुछ दिन के लिए शिमले हो आएं। अँगरेज भी तो गर्मियों में शिमले चले जाते थे, अब तो भारत हमारा देश है, मजे करेंगे माल रोड पर। मेरा दोस्त और उसकी पत्नी शिमले में रहते थे और बहुत दफा उन्होंने अपने यहाँ आने के लिए आग्रह भी किया था। लो जी, रब तुम्हारा भला करे, पत्नी को बताया, वह तो मुझसे भी आगे हो रही थी और खरीद-फरोख्त शुरू हो गई। कपडे खरीदे, कैमरे टैस्ट किये, बस में सीटें रिजर्व कर लीं और एक दिन हमारा सफर शुरू हो गया।

सफर लम्बा था, थकावट तो होगी ही लेकिन उत्सुकता ज्यादा होने के कारण सफर का पता ही नहीं चला। जब हम दोस्त के घर पहुंचे तो भीतर से मजेदार खानों की खुशबू आ रही थी। हंसी-मजाक होना शुरू हो गया। मेरे दोस्त कभी मेरे क्लासफैलो हुआ करते थे और हमारी दोस्ती भी इतनी गहरी थी कि हमारा हंसी मजाक खत्म होने को नहीं आता था और हमारी भाभी तो दोस्त से भी आगे थी। मेरी अर्धांगिनी भी कोई कम नहीं थी। लो जी खाना-पीना भी शुरू हो गया और खाने की सिफ्तें किये जाना तो अतिथि का धर्म होता ही है। मजे से खा रहे थे और पुरानी स्कूल कालेज की बातें भी करके हंस रहे थे। कुछ ही देर बाद कुछ बंदर छत्तों पर आकर बैठ गए और हमारी तरफ देखने लगे। हम बाहर ही बरामदे में बैठे थे, इसलिए हमें बंदरों को देखकर घबराहट सी हुई। दोस्त की पत्नी ने डंडा उठाया और उनकी तरफ फेंका, सभी बंदर भाग गए। अब बंदरों की बात होने लगी। भाभी बोली, 'भैया! इनसे बहुत सावधान रहना चाहिए। खाने-पीने की चीज हो तो ये हाथ से छीनकर ले जाते हैं। इनसे बचकर रहना।'

कुछ दिन हमने खूब मजे किए, पिकनिकें कीं। एक दिन दोस्त को काम पर जाना पड़ा। दोनों महलाएं घर रहीं और मैं अकेला ही साइट सीइंग का मजा लेने चल पड़ा। कभी मेरे दादा जी शिमले में काम करते थे और वे अंग्रेजों की बातें किया करते थे और बताया करते थे कि माल रोड पर अँगरेज मेम और साहब ही होते थे और बहुत सफाई होती थी। आज तो बस बिल्डिंगें ही अंग्रेजों की थीं, बस बाकी सब देसी था। कई घंटे मैं सुन्दर वादिओं का आनंद लेता रहा।

अब मैं थक गया था। एक मिठाई की दूकान पर ताजी जलेबियां बन रही थीं। भूख तो लगी ही हुई थी, जलेबियां देखकर मुंह में पानी आ गया। कुछ जलेबियां लीं और लिफाफा पकड़कर चल पड़ा। एक पेपर स्टाल से अखबार ले ली और एक बैंच पर बैठ गया। जलेबियों का लिफाफा एक तरफ रखकर पहले मैं अखबार की सुर्खियों पर नजर डालने लगा। जैसे-जैसे अखबार पढ़ता गया, मन बेचैन सा हो गया। दो सफे देश में हुए घोटालों के बारे में ही थे। यह एक्स घोटाला, यह वाई घोटाला, यह डिफैंस के सामान में घोटाला, यह शहीद हुए जवानों के बक्सों का घोटाला, ऐसे पता नहीं कितने घोटालों के बारे में डिटेल से लिखा हुआ था।

खीझकर पेपर एक तरफ रखने ही वाला था कि एक सफे पर हैड लाइन थी, 'देश का सबसे मिहनती और ईमानदार प्रधान मंत्री नरिंदर मोदी'। अब मैं सारी खबर पढ़ने में मसरूफ हो गया। जैसे-जैसे मैं पढ़ता गया, अखबार में ही गुम हो गया। अब मेरे कानों में धीमी-धीमी घंटियों की आवाज आने लगी। अखबार से चेहरा ऊपर उठाया, तो देखा दूर कुछ गधे आ रहे थे, जिन पर ईंटें लदी हुई थीं। शिमले में गधे! हैरान हुआ मैं उनकी ओर देखने लगा। सारे गधे ऐसे लग रहे थे जैसे इकट्ठी होकर कुछ दुल्हनें मस्त चाल में चल रही हों। उनके गले की घंटियां और पैरों की थपक मन को बहुत लुभावनी लग रही थी। उनके पीछे एक उधेड़ उम्र का शख्स, जो बिलकुल सादे कपड़ों में था, मुंह से कुछ गुनगुनाता हुआ मजे से चला आ रहा था।

जैसे-जैसे वे नजदीक आ रहे थे, मेरा सारा ध्यान उनकी ओर लग गया। जब वे मेरे सामने से गुजरने लगे तो एक वृक्ष पर बैठे बहुत से बंदर एकदम हंस पड़े। 'देखो-देखो, बेवकूफ गधे जा रहे हैं' कुछ बोल रहे थे। वे तरह-तरह की शक्लें बनाकर गधों पर हंस रहे थे। एक बोला, 'ओए बेवकूफ गधो, तुम वाकई गधे हो, इतना बोझ उठाकर चल रहे हो, ओये बेअक्लों, फेंक दो यह सारा बोझ और भाग जाओ, लेकिन तुम भागोगे नहीं, क्योंकि तुम गधे हो।' हंस-हंसकर सभी बंदरों की आँखों से पानी बह रहा था।

एक अपने आपको कुछ समझदार कहलाने वाला बंदर बोला, 'ओए गधो, हमारी तरफ देखो, हम आजाद हैं, जहां भी मन करे, चले जाते हैं, खाने की कोई चिंता नहीं, खाना तो इतना मिलता है कि ज्यादा हम बर्बाद ही कर देते हैं, कभी वृक्षों पर चढ़ जाते हैं और कभी शहर के चक्कर लगाते हैं और घरों में भी घुस जाते हैं। किसी मालिक की फिक्र नहीं, तुम अपने मालिक के गुलाम रहकर सारी जिंदगी बर्बाद कर दोगे और अपने बच्चों को भी गुलाम बनाकर मरोगे। मेरी मानो, फेंक दो यह बोझ और भाग जाओ, लेकिन तुम में इतनी हिम्मत ही नहीं है कि यह सब कर लोगे क्योंकि तुम गधे हो। इसी लिए तो बेवकूफ इंसानों को भी दूसरे इंसान बेवकूफ गधे कह देते हैं।' सभी बंदर जोर-जोर से हंसने लगे।

सारे गधे बंदरों की बातें सुन रहे थे। कुछ दूर जाकर एक गधा वापस आ गया और बंदरों से बोला, 'बंदर भाई साहब ! आपने ठीक ही कहा, हम गधे हैं लेकिन गधे होने पर हमको गर्व है। हम अपने मालिक का हुक्म मानते हैं और ईमानदारी से उसका सारा काम करते हैं, कुछ बोझ ज्यादा भी लाद दे तो हम इंकार नहीं करते। हमारे इस बोझ के कारण हमारे मालिक के बच्चों की परवरिश होती है और वे स्कूल जाते हैं। हमारा मालिक हर रोज हमें अच्छा खाना देता है, अगर हम में से कोई बीमार पड़ जाए तो हमारा ध्यान रखता है। कभी हमारे कोई बच्चा पैदा हो तो मालिक के घर मे खुशियां होती हैं।

बहुत सी इमारतों को बनाने में हमने भी ईंटें सप्लाई की हैं, सीमेंट सप्लाई किया है, और पता नहीं कितनी जगहों पर हमने काम किया है। जब उन इमारतों की तरफ हम देखते हैं, जहाँ हमने काम किया था, तो देखकर हमारा सीना गर्व से फूल जाता है कि देश निर्माण में हमने भी अपना योगदान दिया है। हमारे जैसे करोड़ों लोग, जिनको तुम गधे बोलते हो, ईमानदारी से काम करते हैं, हकूमत को टैक्स देते हैं, सारे देश के काम इस टैक्स से होते हैं। अपने मालिक का ईमानदारी से कहा मानकर जी जान से देश के लिए काम करते हैं। इस टैक्स से हमारे देश के जवान देश की सुरक्षा में अपना योगदान देते हैं, हमारे देश का नाम दुनिया में ऊंचा हो रहा है, सिर्फ इन्हीं ईमानदार गधों के कारण।

कुछ देर रुककर वोह फिर बोला, 'और तुम क्या करते हो? चोरी, देश का नुक्सान? और काम क्या करते हो? लोगों को परेशान और बर्बादी! अरे तुमको तो इतनी अक्ल भी नहीं कि उन बिजली के खम्बों से जो तारें जाती हैं, उनमें बिजली है और तुम चढ़ जाते हो टपोसियां लगाते और करंट लगने से तारों पर ही लटक जाते हो, घरों की बिजली गुल हो जाती है और लोग तुम्हें गालियां देने लगते हैं। बिजली तो फिर आ जाती है लेकिन तुम तो नरक में चले ही जाते हो! डंडे लेकर लोग तुम्हें भगाते हैं, लेकिन तुम्हें शर्म नहीं आती। भाई! हमें अपने गधे होने पर गर्व है और हमें दुनिया में कोई डर नहीं कि भागे-भागे फिरें।' सब बंदर चुप हो गए थे। गधा पीछे मुड़ा और अपने साथियों से जा मिला।

(शेष पृष्ठ २० पर)

(पृष्ठ २६ का शेष) **माया महा ठगनी...**

बंटी हुई है। जब तक साथ है तब तक सभी माया के पुजारी है। सावधानी हटी तो दुर्घटना घटी की तर्ज पर साथ छूटा तो माया का मोह भी त्यागना पड़ेगा। कबीर के शब्दों में माया महा ठगनी हम जानी।

लेकिन आज स्वस्थ आलोचना और व्यंग्य का स्थान फूहड़ता और व्यक्तिगत आरोपों ने ले लिया है। इसके साथ ही असहिष्णुता का बाजार भी गर्म हो गया। असहिष्णुता को लेकर अवार्ड लौटने वाले नितांत एक पक्षीय हो गए। उन्होंने जैसे आँखों पर पट्टी बांध ली। कहने का मतलब है मीठा-मीठा गप-गप, कड़वा-कड़वा थू-थू। व्यंग्य पक्षपात का शिकार हो गया और व्यंगकार भी खेमे के शिकार हो गए।

जिंदगी केशायद किसी मोड़ पर
तुम्हें मेरे होने का अहसास होगा
अल्फाज जो मेरे लिए कहे तुमने/पछतावा भी तुम्हें होगा
मेरे आँखों की नमी/तुम्हारी आँखों से बारिश भी होगी
जिम्मेदारियों को निभाते/मौसम कब बदल जाते है
ये तुम जब समझोगे
तब धरती और आकाश को
कोई न मिला पायेगा
शायद किसी मोड़ पर
सन्नाटे को चीरती आवाज आयेगी
कि देखा है धरती को जीते हुए

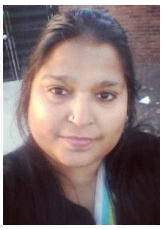

-- संयोगिता शर्मा

आज भी अलमारी की/पुरानी किताबों के बीच
दफन है कुछ पुराने खत/जो लिखे तो सही मैंने
पर कभी दिए नहीं तुम्हें/अलमारी की साफ सफाई में
वर्ष में यदा कदा/दिख ही जाती है वो किताबें
जिन्हें मैं सैकड़ों किताबों के बीच/पहचान लेता हूँ
पर पलटता नहीं कभी पन्ने/क्योंकि ये जो तेरी खुशबू
बसती है मेरी रूह में
बमुश्किल कैद कर पाया हूँ
उन्हें इन किताबों के बीच
डरता हूँ इन खतों की नमी से
सूखी प्रेम की लताओं पर
फिर से उग न आए कुछ हरे पत्ते

-- अमित कु. अम्बष्ट 'आमिली'

साल भर का काम, काम ना आया
मैंने अपने गलतियों का इनाम है पाया
इतनी गलतियों के बाद भी/कंपनी ने तरक्की पाई है
पर मेरी तरक्की किसी/को भी याद नहीं आई है
मर-मर के किये काम/फिर भी हुए बदनाम
प्रशासन विभाग ने अपनी ही चलाई है
मेरी अच्छाई में भी बुराई नजर आई है
तब भी हार नहीं मानेंगे
अपने आप को सुधारेंगे
फिर करेंगे सभी काम
चाहे जितने हो बदनाम
गलतियों को दोहरायेंगे
अगले साल फिर से इनाम पाएंगे

-- रवि प्रभात

तुम कई बार मेरे ख्वाबों में आया करते हो
तुम्हें देखकर कई सपने सजाती हूँ
जैसे कोई अपनों को, पास होने का एहसास होता है
फिर मैं अपने तन्हाई जीवन से दूर हो जाती हूँ
सोचती हूँ तुमसे
कुछ बातें करूँ
मगर वह ख्वाब
बनकर रह जाता है
क्योंकि तुम नींदों
में आया करते हो!

-- बिजया लक्ष्मी

माँ शब्द है कितना प्यारा, लगता सबको है यह न्यारा
मोल नहीं है इसका कोई, समझे जो यह ज्ञानी सोई
करते गर्व जिस पर हम हैं, माँ का दिया सुन्दर तन है
दुनिया के सब कष्ट सहन कर, बड़ा बनाती पाल-पोस कर
मरते दम तक करती प्यार, हो चाहे स्वयं सुख से लाचार
सहकर वह लाख दुःखों को, आने नहीं देती कष्ट बच्चों को
बच्चों को खुश रखती माँ, खुशी में उनकी सुख ढूंढ़ती माँ
माँ-बच्चे का है इक ऐसा जोड़,
नहीं है जिसका कोई मोल
मोल नहीं है कोई तोल नहीं,
रिश्ता है यह सबसे अनमोल
इसलिए माँ शब्द है इतना प्यारा,
समाया जिसमें है जग सारा

-- शम्भु प्रसाद भट्ट 'स्नेहिल'

बीत गए दिन जवानी के/मेहनत और कुरबानी के
जब तक था स्वार्थ/तब तक रहे साथ
दिल में एक अरमान था/बेटे पर अभिमान था
सोचा था बुढ़ापे में बनेगा मेरा सहारा
पर मेरी किस्मत ने ये नहीं स्वीकारा
बेटे ने साथ छोड़ा सभी ने मुझसे मुँह मोड़ा
क्या है मेरी गलती कोई मुझे बताए
बूढ़े माँ-बाप को बेटा क्यों सताए
तू भी एक दिन बूढ़ा होगा/ये क्यों भूल जाता है
जो जैसा करता है
वह वैसा ही फल पाता है
अजीब हो गयी है दुनिया
अब प्यार से कोई नहीं खिलाता
अब बेटा नही कहता पापा
जब से आया है बुढ़ापा

-- पीयूष राज

फुर्सत में एक गीत लिखूँगा, पर अपनी ही प्रीत लिखूंगा
एक रोज जो दिया अचानक, आज वही संगीत लिखूँगा
एकदम से जीवन में आना, सिखलाना एक नया तराना
जिम्मेदार बनाया पल में, फिरता था जो मैं मनमाना
सीने से लग कर रोई थी, मेरी मति उस पल खोई थी
अपनी गलती ढूंढ रहा था,
तू सहज मिलन नैनन रोई थी
हैरत उस पल मुझको भारी,
रोई थी जब मन कर भारी
यही बात पूछा बीते दिन,
बोली प्रीत गई न सम्हारी

-- प्रदीप कुमार तिवारी

छोड़ दी जिंदगी वक्त के हवाले
आधी पढ़ के जैसे कोई किताब
बह गया प्रवाह सरलता की सरिता में
जैसे कोई नदी डूब गयी सागर में
टूट गया कोई तारामुरादें पूरी करने
खाली किया आसमान को
जैसे कोई जेल, मुजरिमों से
छोड़ दी जिंदगी वक्त के हवाले...!

-- मयूर जसवानी

पटरियाँ कभी नहीं मिल पाती
चलती हैं साथ-साथ एक दूसरे के मीलों तक
ये दोनों पहुंचाती हैं/मुसाफिरों को मंजिलों तक
कितनी बार मगर कभी आपस में मिलती नहीं
इनका संबंध इतना पवित्र है/जब एक टूट जाती है तो
दूसरी का अस्तित्व नहीं रहता
अगर यह दोनों हैं तभी मुसाफिर
मंजिल तक पहुंच सकता है
बिना बोले बिना कुछ कहे
देती हैं साथ एक दूसरे का
शिकायते नहीं करती क्योंकि
इनको पता है ये जी नहीं सकती एक दूसरे के साथ बिना
एक अजीब एहसास होता है/कि बिना मिले भी इतना
गजब का जुड़ाव संभव है/शायद हां!

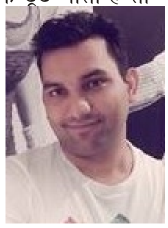

-- परवीन माटी

आज भी कितनी ही राधाएँ, अपने कान्हा की राह तकतीं हैं
कान्हा बैठे मुरली बजाए, इल्जामों में राधाएँ घिरतीं हैं
भगवान बना तू पूजा जाए, विष मीरा क्यों पीती है
चैन की बंसी रुक्मिणी संग बाजे, विरह में राधा जीती है
गर तू चाहता तो राधा भी
रुक्मिणी तेरी बन सकती थी
चाहत थी राधा तेरी तो
राधा की चाहत में भक्ति थी
तेरे अनुयायी बन कितने कान्हा
राधाओं को अब छलते हैं
त्यागा था तूने राधा को, राह तेरी वे चलते हैं

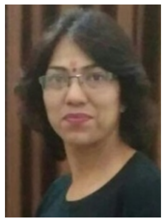

-- अंजु गुप्ता

लो फिर मिटा दें भेदभाव, खिला दें अमन के फूल फिर
बदल रही है वक्त की नजाकत
लो मिला लें प्रेम की चाहतें फिर
न हो अब रंग रूप का भेद हम में
मिल आयें गले एक बार और फिर
घिर न आये माहौल फिर नफरतों का
न फिरने पायें अरमानों पे धूल फिर
आओ फिर एक बार मिल लें गले
फिजाओं में खिलें अमन के फूल फिर

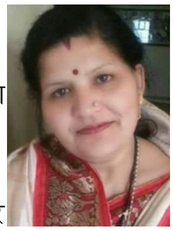

-- अल्पना हर्ष

बहुत अकेली है जिंदगी, जरा गले लगाओ न
टूट रही है शब्दों की माला, धागा प्रेम का लगाओ न
मायूस है देखो वो अंधेरा भी, दीप प्रीत के जलाओ न
पतंग दूर कहीं उड़ रही, डोर जरा बढ़ाओ न
महफूज क्यों नहीं आज भी, बेटियों को जरा सजाओ न
हार न जाये कहीं जीती हुई बाजी, जिंदगी को यूं सताओ न
मेहंदी लगी है कोमल हाथों में, सुर प्यार का सजाओ न
बियाबान है आज भी घर मेरा,
हंसी के ठहाके लगाओ न
एक बार तो आओ मेरे खयालों में,
जिंदगी को हकीकत बनाओ न
पथरा न जाएं कहीं आंखियां मेरी,
आंसुओं को यूं व्यर्थ बहाओ न

-- वर्षा वार्ष्णेय

पादरियों के दुष्कृत्यों पर वैटिकन की लीपापोती पर प्रश्न

राजीव चौधरी

आज से १८ साल पहले की दीपावली की बात है। जब उस रात भारतीय समाज ज्ञान रूपी प्रकाश के दीये जलाकर अज्ञानता के अंधेरे को भगाने की प्रार्थना कर रहा था, ठीक उसी समय राजधानी दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में रोमन कैथोलिक चर्च के पोप जान पॉल द्वितीय अपने अनुयायियों को बता रहे थे कि ईसा की पहली सहस्राब्दी में हम यूरोपीय महाद्वीप को चर्च की गोद में लाये, दूसरी सहस्राब्दी में उत्तर और दक्षिणी अमेरिका महाद्वीपों व अफ्रीका पर चर्च का वर्चस्व स्थापित किया और अब तीसरी सहस्राब्दी में भारत सहित एशिया महाद्वीप की बारी है। इसलिए भारत के मतांतरण पर पूरी ताकत लगा दो।

पोप दावा कर रहे थे, 'ईसा और चर्च की शरण में आकर ही मानव की पापों से मुक्ति व उद्धार संभव है।' उनका यह कथन भारत की एक प्रसिद्ध पत्रिका में प्रकाशित भी हुआ था। जब पोप भारत की धरती पर खड़े होकर ईसाइयत की महानता का बखान कर रहे थे उसी समय अमरीका और यूरोप के लोग पोप के दरबार में गुहार लगा रहे थे कि हमें अपने बिशपों-पादरियों के यौन शोषण से बचाओ, तुम्हारा चर्च ऊपर से नीचे तक पाप में डूबा हुआ है।

लेकिन आज का यह प्रसंग धर्मांतरण की चर्चा से थोड़ा अलग होकर पोप के उस दावे पर सवाल उठा रहा है कि ईसा और चर्च की शरण में आकर ही मानव की पापों से मुक्ति व उद्धार संभव है। जबकि हाल ही में इसी वेटिकन सिटी के पोप ने एक फैसले द्वारा मानवता को शर्मशार किया है। खबर है ३० बच्चियों से रेप के मामले में एक कैथोलिक पादरी को वेटिकन सिटी चर्च ने माफी दे दी है। बताया जाता है कि इसके पीछे अहम वजह चर्च में प्रशासन की मजबूत पकड़ है। पोप की ओर से कहा गया कि मामला खत्म हो गया है। अब इसमें कुछ नहीं हो सकता है। इसीकारण पादरी पर कोई केस नहीं चल सका, जबकि ३० बच्चियों से रेप की बात उक्त आरोपी पादरी स्वीकार भी कर चुका है। अब सवाल यह है कि क्या ईसा इस पाप को क्षमा कर देंगे यदि हाँ, तो फिर यह जरूर बताया जाये कि ऐसा कौन-सा पाप है जिसे ईसा क्षमा नहीं करते?

कहते हैं कि बच्चे भगवान का रूप होते हैं, लेकिन यदि चर्चों और पादरियों के किस्से पढ़ें तो लगता है इनकी नजर में बच्चे सिर्फ यौन शोषण के लिए मानव शरीर होते हैं। साल २०१० न्यूयार्क टाइम्स में छपी एक खबर के अनुसार ६० के दौर में एक मामला पादरी लारेंस मर्फी को लेकर उठा था। इस पादरी पर आरोप था कि उसने २३० ऐसे बच्चों का यौन शोषण किया जो सुन नहीं सकते थे। अखबार के मुताबिक वर्तमान पोप ने इस मामले पर कोई कदम नहीं उठाया। कुछ साल पहले पोप बेनेडिक्ट ने आयरलैंड में कैथोलिक पादरियों द्वारा बच्चों के यौन शोषण के मामले में पीड़ितों से माफी माँगी थी। मामला इतने पर ही खत्म नहीं होता अमरीका में बच्चों के यौन शोषण मामले में संदिग्ध २१ रोमन कैथोलिक पादरियों को निलंबित कर दिया गया था। जिसके बाद उसी महीने ही ज्यूरी की रिपोर्ट आई थी जिसमें कहा गया था कि कम से कम ३७ पादरी ऐसे हैं जो आरोप लगने के बावजूद काम कर रहे हैं। रोम के अखबारों में ये खबर पहले पन्ने की सुर्खियों में छपी थी। कुछ अखबारों ने इसे वैटिकन सेक्स स्कैंडल तक का नाम दिया था।

ऐसा नहीं है कि यह मामले किसी संज्ञान में नहीं आते। आते हैं, लेकिन चर्चों की बेशर्मी के आगे यूरोप के कानून हासियें पर चले जाते हैं। संयुक्त राष्ट्र ने कई बार बच्चों के यौन शोषण को न रोक पाने के लिए वैटिकन की निंदा की है और उन पादरियों को हटाने की मांग की है जिन पर बच्चों के साथ बलात्कार या छेड़छाड़ करने का संदेह है। लेकिन वेटिकन ने संयुक्त राष्ट्र को भी धता बताते हुए कहा था कि संयुक्त राष्ट्र चर्च से उम्मीद नहीं कर सकता कि हम अपनी नैतिक सीखों में बदलाव लाएँ। इसके बाद भी वेटिकन द्वारा यौन शोषण और ऐसा घिनौना काम करने वालों का दंड से बचाना आज तक जारी है। जबकि चर्चों के अधिकार पर संयुक्त राष्ट्र की समिति ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि कैथोलिक गिरजे में विश्व भर में करीब दस हजार बच्चों का सालों से व्यवस्थित रूप से यौन शोषण किया गया है।

आस्ट्रेलिया में धार्मिक और गैर धार्मिक जगहों पर होने वाले यौन शोषण की जांच करने की सबसे शीर्ष संस्था रायल कमीशन के अनुसार यौन शोषण की पीड़ितों की कहानियां काफी अवसाद भरी हैं, जिनमें बच्चों की उपेक्षा की गई, उन्हें सजा भी दी गई, आरोपों की जांच नहीं हुई, जिससे पादरी आसानी से बच गए। संस्था के अनुसार १९८० से २०१५ के बीच आस्ट्रेलिया के १००० कैथोलिक इंस्टीट्यूशनों में ४,४४४ बच्चों का यौन उत्पीड़न हुआ। इन बच्चों की औसत आयु लड़कियों के लिए १०.५ साल रही है, वहीं लड़कों के लिए ११.५ साल। बच्चों के यौन शोषण से जुड़े मामलों पर नजर रखने वाली रायल कमीशन के पास १९८० से २०१५ के बीच करीब ४,५०० लोगों ने यौन शोषण होने की शिकायत दर्ज कराई थी।

चर्चों के पाप और अपराधियों की सूची इतनी लम्बी है कि उसे दोहराना व्यर्थ है। इस पापाचार में वेटिकन की संलिप्तता इतनी स्पष्ट है कि अब निराश श्रद्धालु विद्रोह करने पर उतारू हो गए हैं। आज हालात यह कि यूरोप के लोग चर्चों से किनारा करने को बाध्य हो गये हैं। लेकिन यूरोप और अमरीका से उखड़ने के बाद अब चर्च भारत जैसे देश में गरीब और अबोध जनजातियों व दलित वर्गों के मतांतरण पर पूरी शक्ति लगा रहा है। अब हमारा महत्वपूर्ण कार्य धर्मांतरण के बजाय यह इस किस्म के पाप को रोकना है। जहाँ आज चर्च को ऐसे पापाचारी पादरियों से मुक्त करना उसकी पहली चिंता होनी चाहिए। पर वेटिकन किन्हीं अन्य हितों की रक्षा के लिए इन पापाचारियों को संरक्षण दे रहा है और नये-नये क्षेत्रों में मतांतरण की फसल काटने में जुटा हुआ है। जब तक वेटिकन अपने अध्यात्मिक क्षेत्र में सुधार नहीं करता, तब तक इसके कार्यों और उनकी लीपापोती पर सवाल उठते रहेंगे। ■

लघुकथा

नरम दिल तेज स्वभाव

शाम तक शर्मा जी बहुत दुविधा में थे. लेकिन अगली सुबह जब जॉगिंग पार्क से वापस आये तो उनके चेहरे पर बहुत सुकून था.

जब से उनके पडोसी शुक्ला जी अपनी बेटी का रिश्ता उनके बेटे के लिए लेकर आये थे तभी से असमंजस में थे कि रिश्ते को 'हां' करें या न करें, क्योंकि उनकी बेटी स्वभाव से बहुत तेज थी, पता नहीं परिवार में एडजस्ट होगी कि नहीं.

'क्या बात है बहुत खुश हो!', शर्मा जी की पत्नी उनको देखते ही बोली।

'हां... मैंने शुक्ला जी की बेटी के लिए अपने बेटे के लिए हां कर दी!'

'पर...'

'मैं जानता हूँ तुम क्या कहना चाहती हो। मैं भी पहले यही सोचता था। लेकिन आज जॉगिंग पार्क में शुक्ला जी अपनी बेटी के साथ मिल गये। हम दोनों एक जगह बैठकर बातें करने लगे। उनकी बेटी रनिंग करने लगी, मेने देखा रनिंग प्वाइंट पर बहुत सारी चीटियां अचानक से निकल आती हैं। किसी का ध्यान नही था और कुछ तो जानबूझकर चीटियों को कुचलते हुये निकल रहे थे।

पर जैसे ही चीटियों पर उनकी बेटी की नजर पडी तो वह रूक गई और सबको एहतियात बरतने को कहने लगी कि रनिंग करते समय प्लीज चीटियों का ध्यान रखें, इन पर पैर न पड़ने पाये. जो बेटी चीटियों का इतना ख्याल रख सकती है, वह इन्सान का कितना रखेगी. उनकी बेटी तेज स्वभाव की जरूर है पर गलत नहीं। वह दिल की बहुत नरम है।'

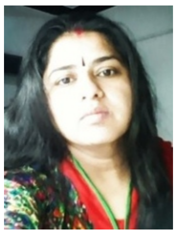

शर्मा जी की बात सुनकर दोनों के चेहरे पर सूकून और निश्चिंतता थी अपने और अपने बेटे को लेकर।

-- रजनी विलगैयाँ

कड़ी निंदा की लाबीइंग

विनय कुमार तिवारी

एक दिन क्या हुआ कि मैं सुबह-सुबह अखबार की प्रतीक्षा में, अनमना सा बैठा हुआ था। तभी मेरे एक मित्र पधारे। मैंने आवभगत की। बातों-बातों में मित्र जी एक तीसरे की बात ले बैठे और न जाने क्या-क्या भड़ास निकालते रहे। हालाँकि मैं चुप ही रहा पर गौर से उनकी बातें सुनता रहा था। मेरी चुप्पी पर वे मित्र महोदय भी अनमने हो गए और मुझसे बोले, 'आप कुछ बोलते ही नहीं!' खैर मैं क्या बोलता! मैं उनके मामले को द्विपक्षीय मामला समझ रहा था। असल में जिस व्यक्ति की वे निंदा कर रहे थे उससे मेरा भी कुछ संबंध था। वे शायद मुझसे भी अपने मित्र के लिए किसी कड़ी टाइप की निंदा की अपेक्षा कर रहे थे और अपने उस मित्र, जो कि मेरे भी परिचित थे, के विरुद्ध जनमत तैयार करने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन अपनी बातों में मेरी रुचि न देखकर उन्होंने ऐसा मुँह बनाया जैसे मेरे न बोलने से उनकी कोई कूटनीतिक पराजय हुई हो।

मित्र की बातों से मुझे यह तो विश्वास हो चला था कि इन बेचारे की पीड़ा जायज है और ये निंदारस के चक्कर में नहीं, बल्कि पीड़ित मन से अपने मित्र की निंदा कर रहे थे। खैर, मैंने उन्हें यह कहते हुए विदा किया कि यह आप दोनों के बीच का मामला है और अगर अपने मित्र को माकूल जवाब देना है तो, उन तक उनके नापसंदगी वाले काम की कड़ी निंदा पहुँचा दीजिए, अन्यथा आपस में मिल-बैठकर मामला सुलटा लें। मित्र बेचारे मेरा मुँह देखने लगे और फिर वापस चले गए थे।

इधर मित्र के जाने के बाद मैं भी थोड़ा परेशान हो गया था। शायद, वे मुझसे निराश होकर गए थे, इस बात से मेरा मन पश्चाताप से भर उठा था। मैं जानता था उनका नेचर आमने-सामने माकूल जवाब देने लायक नहीं है, इसीलिए मुझसे अपने मन की भड़ास निकालने आ गए थे। शायद वे अपने मित्र के अनपेक्षित काम के खिलाफ एक माहौल भी बना रहे थे।

वैसे कोई जरूरी नहीं कि हम निंदा को मजाक का ही विषय बनाएं या किसी के प्रति कही गई कोई बात हर समय निंदा ही मानी जाए। आखिर, किसी के खराब काम की चर्चा करना निंदा थोड़े ही होती है!

इस बीच अखबार वाला अखबार फेंककर जा चुका था। मैंने अखबार उठाया तो, उसकी पहली ही खबर पर मेरी नजर पड़ी, जहाँ देश की सरकार पाकिस्तान के सन्दर्भ में कह रही थी 'हम माकूल जवाब देंगे' फिर छपा था 'इस बर्बर कृत्य की हम कड़ी निंदा करते हैं'। बस, इसे पढ़ते ही लगा जैसे, गुब्बारे की सारी हवा निकल गई हो! मतलब दे दिया गया माकूल जवाब! वैसे, मैंने भी राहत की साँस ली कि चलो बिना खून-खराबे और बिना किसी अतिरिक्त परेशानी के माकूल जवाब दे दिया गया है।

इधर 'कड़ी निंदा' का अर्थ क्या है? क्या यह किसी तरह का जवाब है और अगर जवाब है भी तो कितना माकूल है? जैसे प्रश्नों का उत्तर मैं खोजने बैठ गया था। वैसे 'कड़ी निंदा' को मैं एक हद तक माकूल जवाब मानता हूँ क्योंकि एक बार इसकी मारक-क्षमता से मेरा सीधे साक्षात्कार हो चुका है।

वो क्या है कि नौकरी के मेरे शुरुआती दिन थे, बड़ा जज्बा था मन में कुछ कर के दिखाने का! अब काम करके रिपोर्ट तो करना ही होता है, सो मैं भी काम करके रिपोर्ट करता, फिर उच्च लेवल पर इस रिपोर्ट की समीक्षा होती। एक बार क्या हुआ कि हमारी रिपोर्ट में काम की प्रगति अन्य की अपेक्षा कम आँकी गई और अगले दिन हमें लिफाफे में एक प्रेम-पत्र टाइप का कुछ मिला, पत्र खोलने पर इसमें लिखा पाया कि 'फलां योजना में आपकी खराब प्रगति के कारण आपकी कड़ी भर्त्सना की जाती है।' नई-नई नौकरी थी पत्र पढ़कर काटो तो खून नहीं टाइप का, मैं बेतरह परेशान हो उठा! और इस 'कड़ी भर्त्सना' में निहित जबर्दस्त मारक-क्षमता का मुझे पहली बार अहसास हुआ था।

मेरे काम के प्रतिफल के रूप में बॉस द्वारा दिए गए इस माकूल जवाब से मैं विचलित हो गया और अगले ही दिन पत्र लेकर बॉस के सामने हाजिर हो गया था। मैंने सफाई दी, 'सर, मैंने बहुत मेहनत की है इस काम में! और एकदम सही रिपोर्टिंग की है, मैं फर्जी रिपोर्टिंग नहीं करता। आप चाहें तो दूसरे के प्रशंसित काम से मेरे काम की तुलना ग्राउंड लेवल पर करा सकते हैं। इसके बाद ही ऐसा पत्र जारी किया जाए!'

मेरे बॉस सहृदय टाइप के व्यक्ति थे, जोर से हँसे और मुझसे बोले, 'इस पत्र को इतनी गंभीरता से क्यों ले रहे हो यार? जाओ अपना काम करो और हाँ रिपोर्टिंग-उपोर्टिंग भी थोड़ा बहुत सीख लो।' बॉस से मिलकर मैं लौटते समय एक बार पत्र पर लिखे 'कड़ी भर्त्सना' शब्द पर फिर से निगाह डाली। अबकी बार इस शब्द को देखकर मैं मुस्कुराने लगा था, क्योंकि बास से मिलकर मैंने इसकी मारक-क्षमता को डिफ्यूज कर दिया था। हालाँकि, मुझे इसकी मारक-क्षमता का भी ज्ञान प्राप्त हो चुका था। खैर, 'कड़ी निंदा' और 'कड़ी भर्त्सना' दोनों समानार्थी होते हैं, इनकी तुलना से मैं इस विनिश्चय पर पहुँचा कि 'कड़ी निंदा' को माकूल जवाब मान लेना चाहिए।

वैसे 'कड़ी निंदा' के अपने फायदे भी होते हैं, मतलब 'कड़ी निंदा' करने वाला ऐसा करके अपनी स्थिति भी सेफ करता है और अगले वाले को अपनी रिपोर्टिंग में कह सकता है- 'देखो जी, मैंने भी काम लेने का और काम करने का जबर्दस्त प्रयास किया है और अपने इस प्रयास में ही मैंने खराब काम करने वालों की 'कड़ी भर्त्सना' की है!'

वैसे एक बात तो है वह यह कि, हमारा देश रिपोर्टिंग प्रक्रिया में विश्वास करने वाला देश है। यहाँ ग्राउंड लेवल वर्क की कोई अहमियत नहीं होती, केवल और केवल रिपोर्टिंग करने और रिपोर्ट तैयार करने में ही जूझते रहना होता है, बल्कि इस चक्कर में ग्राउंड लेवल का वर्क भूल जाता है। इस देश में एक तरह से रिपोर्टिंग का सिस्टम विकसित किया गया है। इस रिपोर्टिंग के खेल में महारत हासिल कर 'कड़ी निंदा' करने वाला सफलता के शिखर पर पहुंच जाता है, अन्यथा बाकी 'कड़ी भर्त्सना' तो झेलते ही हैं। इस देश में प्रत्येक नीचे वाला अपने से ऊपर वाले को केवल और केवल रिपोर्ट करने में ही व्यस्त है। एक बात और, यहाँ लोकतंत्र है और जनता सर्वोपरि है, इसलिए सरकारें भी जनता को 'कड़ी निंदा' की रिपोर्टिंग करती रहती हैं। यह सरकारों पर रिपोर्टिंग सिस्टम का प्रभाव नहीं तो और क्या है! फिर हम अपने रिपोर्टिंग सिस्टम के चक्कर में भूल जाते हैं कि पाकिस्तान हमारा मातहत नहीं है कि 'कड़ी निंदा' के मारक असर से बिलबिलाता हुआ हमारी मेज पर दौड़ा चला आएगा!

हमने तो अपने अनुभव से यही सीखा है कि 'कड़ी निंदा' बिना ग्राउंड लेवल का वर्क होता है। मतलब जो ग्राउंडलेबल के वर्क से बचना चाहते हैं वही 'कड़ी निंदा' करते हैं और इसे रिपोर्टिंग प्रक्रिया का एक हिस्सा भर मानते हैं। यदि ग्राउंड लेवल को समझकर वर्क किया जाए तो फिर, असली दोषी की पहचान कर कार्रवाई करनी होती है, तब किसी 'कड़ी भर्त्सना' की जरूरत ही नहीं होगी। इस देश में कोई वर्ककल्चर तो कभी रहा ही नहीं, केवल रसनिष्पत्तियों पर हमारी तमाम थीसिस रही है। इसी कड़ी में हमने 'निंदा रस' की भी खोज की हुई है। इस रस को निचोड़कर स्वयं पीते हैं तथा औरों को भी पिलाते हैं कि 'लो भाई! कड़ी निंदा के रस में डूबे रहो!' शायद यही कारण है, हमारा देश 'निंदा-रस' में डूबे रहने वाले लोगों का देश बन चुका है।

सोचता हूँ, पता नहीं मेरे वे मित्र बेचारे, मेरी सलाह मानकर अपने मित्र के साथ द्विपक्षीय वार्ता से अपना मामला सुलटा रहे होंगे या कि जवाब देने के लिए ग्राउंड लेवल पर वर्क कर रहे होंगे, या फिर निंदा की लाबीइंग करते ही अब तक घूम रहे होंगे! खैर, मिलने पर पूछेंगे। ■

(पृष्ठ १७ का शेष)

गधे और बन्दर

अखबार से अपना सर मैंने उठाया और कुछ देर सोचता रहा। फिर जलेबियां खाने की गरज से मैंने लिफाफे की ओर देखा तो लिफाफा वहां नहीं था। हैरान होकर मैंने इधर-उधर देखा। कौन ले गया सारी जलबियां? सोच ही रहा था कि मेरी निगाह एक इमारत की छत पर पड़ी। देखा, कुछ बंदर मेरी जलेबियां खा रहे थे और एक दूसरे से छीनने के लिए आपस में छीना झपटी कर रहे थे। मुस्कराकर मैंने अखबार उठाया और अपने दोस्त के घर की ओर चल पड़ा। ■

किसी क़िताब में जन्नत का पता देखा है
किसी इन्सान की सूरत में खुदा देखा है
इसी से सब उसे परवरदिगार कहते हैं
हर मुसीबत में उसे साथ खड़ा देखा है
लोग तो चाँद पे, मंगल पे भी हो आये हैं
इस तरह का कहीं संसार बसा देखा है
लोग हिन्दू को मुसलमान को अलग करते
घर तो दोनों का मगर मैंने सटा देखा है
मेरे माँ-बाप का मुक़ाम मुझ से मत पूछो
उनके चरणों में बनारस औ गया देखा है
भले फकीर है लेकिन मुझे पसन्द है वो
उसकी आँखों में माँगने का मज़ा देखा है

-- डॉ डी. एम. मिश्र

नैतिकता का आधार सुनायी देता है
जीते जी निष्काम दिखायी देता है
जीवन का सारांश नहीं कुछ भी साहब
दुनिया अब बेजान दिखायी देता है
रिश्ते नाते महज किताबी किस्से हैं
पैसों का झंकार सुनायी देता है
कितनी भी मजबूत डगर हो रिश्तों की
सब केवल बेईमान दिखाई देता है
माँ से बढ़कर कुछ भी नहीं पुराणों में
क्यूँ ममता का व्यापार दिखायी देता है
कसमें खाते हैं जो जमीर ईमानों की
क्यूँ उनके घर श्मशान दिखायी देता है
सपनों की बातें हैं कहाँ हकीकत में
सियासत अब हर बार दिखायी देता है
माँ बाप बहन पत्नी भाई सब आहत हैं
क्या इनमें जज्बात दिखायी देता है

-- आर्यन उपाध्याय ऐरावत

कम भी नहीं हैं हौसले गिर भी पड़ी तो क्या हुआ
है जिन्दगी के सामने बाधा खड़ी तो क्या हुआ
चल दूँ जिधर खुद रास्ता मिलता मुझे ही जाएगा
टूटी अगर रिश्तों की इक नाजुक कड़ी तो क्या हुआ
मैं ढूँढ लूँगी राह को अपना हुनर मैं जानती
वो साथ दे या बाँध ही दे हथकड़ी तो क्या हुआ
सर पे बिठा करके रखा उस बेवफा को आज तक
सारी हदों को तोड़कर फिर मैं लड़ी तो क्या हुआ
वो गीत सारे प्यार के डूबे गमों की बाढ़ में
फिर बारिशों की लग पड़ी रोती झड़ी तो क्या हुआ
इक भूल ने ही जिन्दगी जीना हमें सिखा दिया
चोटें समय के मार की खानी पड़ी तो क्या हुआ
ताकत यही मैं टूटकर बिखरी नहीं हूँ आज तक
आराम की ना आज तक आयी घडी तो क्या हुआ

-- सुचि संदीप

कभी मैंने जो उनकी याद में दीपक जलाये हैं
सुनहरी सांझ में पंछी यूं घर को लौट आये हैं
नहीं ये ओस की बूंदें हैं आंसू गुल के गालों पे
किसी ने खत मेरे शायद उन्हें पढ़कर सुनाये हैं
दुआ में झोलियाँ भर भर जो औरों के लिए मांगे
खुशी ने उसके आंगन में आकर गीत गाये हैं
बदले हैं बहारों के हसीं मौसम खिजाओं में
किसी के खाब पलकों ने मेरी जब जब सजाये हैं
कभी करते नहीं परवाह बशर जो रिसते छालों की
वही अम्बर के तारों को जमीं पे तोड़ लाये हैं
पुराने दोस्त देखे हैं खड़े दुश्मन के पाले में
शोहरत की बुलंदी के करिश्मे आजमाए हैं

-- अशोक दर्द

पिंजरे से परिंदे को आजाद नहीं करते
कुछ लोग मुहब्बत को आबाद नहीं करते
फितरत है पतंगों की शम्मा पे मचलने की
ऐसे जुनूं पे आलिम इमदाद नहीं करते
वह दर्द मिटाने का वादा किया था वरना
रह रह के मुकद्दर को हम याद नहीं करते
जालिम की अदालत में सच पे गिरी है बिजली
मालूम अगर होता फरियाद नहीं करते
वो साथ निभाएंगे कहना है बहुत मुश्किल
वो वक्त कभी हम पर बर्बाद नहीं करते
हसरत ही मिटा बैठे कुछ लोग जमाने में
खुशियों की तमन्ना को ईजाद नहीं करते
दरिया का समंदर से मिलने का इरादा है
बेबाक भरोसे पर संवाद नहीं करते
देखेंगे नहीं मुझको गर राज पता होता
महफिल की बड़ी लम्बी तादाद नहीं करते

-- नवीन मणि त्रिपाठी

सीरत खराब उसकी जबाँ और भी खराब
ऊपर से देखिये जी गुमाँ और भी खराब
चलने लगीं हैं आँधियाँ बदलाव की यहाँ
मौसम तो है खराब समाँ और भी खराब
किस्मत भी खेलने लगी है खेल आजकल
लगने लगा है हमको जहाँ और भी खराब
माना कि मंजिलों के ये रस्ते खराब हैं
कदमों के जो मिले वो निशाँ और भी खराब
नजरों की हद में वैसे भी वीरानियाँ ही थीं
उड़ती रही थी रेगे-रवाँ और भी खराब
बातों में तल्खियां हमारी हैं जरा सी पर
उसका तो है अंदाजे-बयाँ और भी खराब
वाजिब है मछलियों का भी होना खराब तो
पानी खराब उसपे कुआँ और भी खराब

-- रमा प्रवीर वर्मा

कुछ अनजान चेहरे हैं, उन्हें अनजान रहने दो
उन्होंने खुद बनायीं है वही पहचान रहने दो
ये दो चेहरों वाला जादू दिखाना बंद करो
ये जो इंसान जैसे हैं उन्हें इंसान रहने दो
आईना दिखाओगे तो बुरा मान जायेंगे
नए नए मेहमान हैं, मेहमान रहने दो
दरिया ए इश्क में डूबो और पार हो जाओ
फकत अरमान भर सा है, इसे अरमान रहने दो
चेहरे से पढ़ी जा सकती हैं तुम्हारी गलतियां
ये दिल बेजुबां सा है, बेजुबान रहने दो

-- विजय गौत्तम

मुक्तक

तुम्हारा नाम सुनते ही हमारी आंख भर आई
तुम्हारी बेवफाई चोट बनकर फिर उभर आई
इतने स्वार्थी हो तुम किसी के हो नहीं सकते
तुम्हारे प्यार में काफी कमी मुझको नजर आई

जिसे तुम शूल कहते हो उसे हम फूल कहते हैं
जिसे तुम सच समझते हो उसे हम भूल कहते हैं
हमारी अरु तुम्हारी सोच में यह फर्क है नीरव
जिसे तुम धन समझते हो उसे हम धूल कहते हैं

बुलाने पर नहीं आते हो इतना भेद करते हो
कौन कहता है मेरी मौत पर तुम खेद करते हो
तुम्हारे ही समर्थक ने तुम्हीं पर टिप्पणी की है
जिस पत्तल में खाते हो उसी में छेद करते हो

-- डॉ कृष्ण कुमार तिवारी नीरव

जो मुस्कुरा रहा है, उसे दर्द ने पाला होगा
जो चल रहा है, उसके पाँव में छाला होगा
बिना संघर्ष के इन्सान चमक नहीं सकता
जो जलेगा उसी दिये में तो उजाला होगा

-- रूपेश कुमार

आँखों से आंसुओं को अब बह जाने दो
ख्वाबों का वो झूठा खंडहर ढह जाने दो
कब तलक ठहरे रहोगे अतीत में यूं ही
जिन्दगी में आगे बढ़ो बाकी रह जाने दो

-- कामनी गुप्ता

कुंडलियाँ

मोदी जी ने दे दिया, सबको यह पैगाम
लाल बत्तियाँ त्यागकर, करो देश हित काम
करो देश हित काम, अगर चाहो यश पाना
रहना है इस देश, पड़ेगा हुक्म बजाना
बंद करो रोमांस, कह रहे हैं योगी जी
भोगी हैं हैरान, बहुत मुश्किल मोदी जी
लाल लगाकर बत्तियाँ, लिये बहुत सुख भोग
सदियों से फूला-फला, सरकारी यह रोग
सरकारी यह रोग, सदा हर काम बनाता
भ्राता जी की कार, दनादन पार कराता
कैसे खेलें खेल, हाय अब इन्हें हटाकर
पहुँच न जाएं जेल, बत्तियाँ लाल लगाकर

-- डॉ रमा द्विवेदी

मोदी सरकार के बेमिसाल तीन साल

मृत्युंजय दीक्षित

१४ मई २०१४ के दिन जब लोकसभा के चुनाव परिणाम आ रहे थे उस दिन तक राजनैतिक विश्लेषकों को इस बात का अनुमान नहीं था कि किसी दल को अकेले ही पूर्ण बहुमत मिल सकता है। शाम होते-होते देश में एक नये सूर्य का उदय हो चुका था। पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में ३५ वर्षों के बाद भाजपा के साथ राजग गठबंधन को पूर्ण बहुमत मिला था।

पीएम मोदी के नेतृत्व वाली सरकार अब तीन साल का लम्बा सफर तय कर चुकी है तथा अब इस सरकार के कामकाज का आकलन किया जा सकता है, किया भी जा रहा है। मोदी सरकार के तीन साल पूरे होने पर भाजपा पूरे देश में जश्न मनाने की तैयारी कर रही है। हालांकि विपक्ष सरकार के कामकाज को अपने ही नजरिये से देख रहा है तथा सरकार को कश्मीर सहित तमाम मामलों में अभी तक नाकाम ही मान रहा है। जबकि वास्तविकता और आंकडे कुछ और ही कहानी कह रहे हैं। नरेंद्र मोदी देश के संभवतः पहले ऐसे प्रधानमंत्री हैं, जो बिना थके, बिना रुके तथा बिना अवकाश के गरीबों के हित में लगातार काम करते जा रहे हैं। पीएम मोदी के दिमाग में देश के लिए कुछ न कुछ नया करने के विचार आते हैं तथा वे देश की जनता के बीच अपने विचारों को नये अंदाज में प्रस्तुत भी करते हैं। आज उसी का परिणाम है कि देश के अधिकांश भाग में भाजपा का शासन है।

राजग सरकार बनने के बाद देशभर में भाजपा की स्वीकार्यता भी बढ़ रही है। केंद्र में सत्तारूढ़ होने के बाद जम्मू कश्मीर में भाजपा ने अपनी धुर विरोधी पीडीपी के साथ सरकार बनाकर पूरे देश को चौंका दिया था। राजनैतिक विश्लेषक जम्मू-कश्मीर में भाजपा-पीडीपी की सरकार बनने के बाद आश्चर्यचकित थे तथा सोच रहे थे कि यह सरकार बहुत लम्बे समय तक नहीं चल पायेगी, लेकिन बेहद कठिन दौर से गुजरने के बाद आज भी सरकार चल रही हैं। केंद्र में भाजपा सरकार बनने के बाद २०१५ में दिल्ली व बिहार में भाजपा को पराजय का मुंह देखना पड़ा था। तब लोगों ने कहना शुरू कर दिया था कि मोदी का जादू अब उतार पर है। लेकिन पराजय का वह काल क्षणिक ही रहा।

जब पीएम मोदी ने एकाएक ८ नवंबर २०१६ को टीवी पर आकर नोटबंदी का ऐलान कर दिया तो पूरे देश में एक तूफान सा आ गया। विरोधी दलों में हड़कम्प मच गया। जो विरोधी दल केंद्र सरकार व पीएम मोदी से यह सवाल कर रहे थे कि आखिर कालेधन के खिलाफ सरकार क्या कदम उठाने जा रही है, अब उन्हीं लोगों ने सरकार के इस कदम के खिलाफ महागठबंधन कर लिया था। विपक्ष ने नोटबंदी के बाद सरकार को डिगाने व पूरे देशभर में जनआक्रोश पैदा करने के हर संभव प्रयास किये, लेकिन जनता सरकार के साथ पूरी ताकत व धैर्य के साथ खड़ी रही। विपक्ष ने नोटबंदी के खिलाफ वातावरण बनाने के लिए संसद का पूरा एक सत्र बर्बाद कर दिया था, जिसका बुरा परिणाम उसे देशभर में हुए निकाय चुनावों से लेकर विधानसभा चुनावों तक में उठाना पड़ गया, क्योंकि नोटबंदी का फैसला देशहित में उठाया गया एक ऐतिहासिक व क्रांतिकारी कदम था।

पीएम मोदी ने अपने फैसले को गरीबों के हक में और भ्रष्टाचार के खिलाफ उठाया गया कदम बताया। सरकार का कहना था कि यह कदम नक्सलवाद, आतंकवाद, तस्करी व जाली नोटों की तस्करी के खिलाफ उठाया गया है। सरकार ने भ्रष्टाचार के खिलाफ महाजंग का ऐलान कर दिया था। अपने निर्णय के बाद पीएम मोदी ने जितने भी भाषण दिये वह गरीबों के हक में व भ्रष्टाचार के खिलाफ दिये। पीएम मोदी का साफ कहना है कि ७० साल में जिन लोगों ने देश को लूटा है उन्हें तो अपना हिसाब देना ही होगा। सरकार कालेधन के खिलाफ लगातार काम कर रही है। सरकार का अनुमान है कि नोटबंदी के बाद २३ हजार करोड़ रूपये के कालेधन का पता चल चुका है।

पीएम मोदी ने अपने आप को देश का प्रधान सेवक तो घोषित किया ही साथ ही यह भी ऐलान किया कि उनकी सरकार गरीबों के लिए पूर्ण रूप से समर्पित है। उनका यह दावा बिलकुल सही है कि पिछली सरकारों के समय समाचारपत्रों में खबरें बनतीं थीं कि कितना गया, कितना गया लेकिन अब वही विपक्ष सरकार से पूछ रहा है कि कितना आया, कितना आया। यह एक महत्वपूर्ण बदलाव है। नोटबंदी वाकई में एक बेहद साहसिक कदम था। सरकार के फैसले के बाद घरों में नोटों को छिपाकर रखने वाले लोगों के चेहरे से नकाब उतरने लगा था। किसी ने नोटों को नदी में फेंका, किसी ने पार्क में फेंका। नोटों को जलाया तक गया। लोगों ने हर तरह से नोटों को छिपाने की कोशिश की लेकिन वे पीएम मोदी के दूरबीन से नहीं बच सके।

नोटबंदी के बाद जितने भी चुनाव हुए हैं, वहां पर भाजपा को जबर्दस्त सफलता मिली है। २०१७ में पांच प्रांतों के विधानसभा चुनाव हुए जिसमें उप्र व उत्तराखंड में तो पूर्ण बहुमत मिल गया, लेकिन गोवा व मणिपुर में भी भाजपा अपनी सरकार बनाने में कामयाब रही। भाजपा के लिए उप्र की जीत वास्तव में ऐतिहासिक और अविस्मरणीय है। अब पीएम मोदी पर दबाव कम हो गया है तथा उन्होंने २०१९ का संग्राम फतह करने के लिए मजबूत घेराबंदी अभी से शुरू कर दी है।

पीएम मोदी की सरकार ने कई ऐतिहासिक छोटे व बड़े फैसले लिये हैं। सरकार ने गरीबों के लिए जन-धन योजना के तहत जीरो बैलेंस में खाते खुलवाये, नौकरियों के लिए प्रमाणपत्रों के सत्यापन का काम बंद करवाया, छोटे पदों के लिए साक्षात्कार बंद करवाये। सरकार अब तक १२०० बेकार कानूनों को रद्द करवाने में सफलता प्राप्त कर चुकी है। केंद्र सरकार देश व समाज तथा गरीबों के हित में लगातार फैसले कर रही है। केंद्र सरकार ने दशकों से लम्बित सबसे कठिन काम 'वन रैंक-वन पेंशन' का उचित समाधान निकाला। नेताजी सुभाषचंद्र बोस की गोपनीय फाइलों को सार्वजनिक किया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हर महीने के किसी रविवार को देश की जनता के साथ रेडियो पर अपने मन की बात कर रहे हैं तथा एक प्रकार से वे देश में एक नये बदलाव की बयार उत्पन्न कर रहे हैं। वे हर बार नये विचारों के साथ जनता के सामने आते हैं। स्वच्छता से लेकर पर्यावरण सुरक्षा व ऊर्जा बचत तथा छात्रों व महापुरुषों के विषय में भी बातें करते हैं। मन की बात के माध्यम से वे एक मौन क्रांति ला रहे हैं।

केंद्र सरकार ने हाल ही में देश से वीआइपी कल्चर को समाप्त करने का निर्णय किया जिसमें सभी श्रेणियों के वाहन से सभी तरह की बत्तियां हटाने का आदेश हुआ। मोदी सरकार ने सामाजिक कल्याण बहुत सारी योजनाओं का श्रीगणेश किया जिनमें कुछ ने सफलता हासिल की, तो कुछ अभी सफल होने के लिए बेकरार है। तीन साल में सरकार की सबसे बड़ी सफलताओं में रेल बजट को समाप्त करके उसे आम बजट के साथ जोड़ना और १० हजार करोड़ रुपये की बचत करना शामिल हैं। सरकार ने बजट पेश करने की तारीख में बदलाव किया तथा अब वित्तीय वर्ष को बदलने की तैयारी चल रही है। नोटबंदी के बाद अब सरकार कैशलेस सिस्टम की ओर तेजी से बढ़ रही है।

पीएम मोदी ने जिन योजनाओं को लांच किया है उसमें स्टैंड अप इंडिया योजना, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, फसल बीमा योजना, आदर्श ग्राम योजना, अनुसूचित जाति कल्याण कार्यक्रम, स्वच्छ भारत मिशन सहित तमाम योजनाओं का शुभारम्भ सरकार की ओर से किया जा रहा है। यह बात बिलकुल सही है कि पीएम मोदी ने भ्रष्टाचार रहित सरकार दी है तथा वे 'सबका साथ सबका विकास' के नारे के आधार पर देश को न्यू इंडिया प्लान के तहत आगे बढ़ा रहे है। पीएम मोदी अपनी हर बात युवाओं को केंद्रित करके कह रहे हैं।

आज देश का विदेशी मुद्रा भंडार बढ़ा हुआ है। पर्यटन के माध्यम से कमाई का विकास हुआ है। जीडीपी दर में वृद्धि हुई है तथा डालर के मुकाबले रुपया काफी मजबूत हुआ है।

वर्तमान सरकार ने तीन साल में नये मानदंड स्थापित कर दिये हैं। मोदी सरकार आम लोगों व गरीबों की सरकार साबित हुई है। सरकार ने जनहित में बहुत सारे निर्णय लिये हैं जो कि स्वागत योग्य तो हैं, लेकिन उनका पूरा प्रतिफल धरातल पर उतरने से ही उनकी सफलता का पता चलेगा। सरकार को कई क्षेत्रों में अभी लम्बा सफर तय करना है। ■

(पहली किस्त)

दलदल

मनजीत कौर, लंदन

माँ कितना ख्याल रखती थी अपने बेटे का, माँ थी न! माँ तो निस्वार्थ प्यार करती है बच्चो को, जान से भी जयादा ख्याल रखती है। एक जान को नौ महीने अपनी कोख में पालना, अपने खून से उसे सींचना, पल पल उसकी धड़कन को महसूस करना। और फिर असहनीय पीड़ा, जिसका अंदाजा लगाना भी मुश्किल है, सहकर, मौत के साथ जूझकर उसे जीवन दान देना! माँ को भगवान का रूप ऐसे ही नहीं कहा जाता। कुर्बान जाए उस माँ की ममता से, भगवान द्वारा बक्शी इस अनमोल दात को जब पहली बार सीने से लगाती है तो प्रसव की सारी पीड़ा भूल जाती है।

मौत के दर से लौटी ये माँ उसको मिले नवजीवन के लिए, एक नई रूह को दुनिया में लाने के लिए और उसकी झोली खुशियों से भरने के लिए, परमात्मा का कोटि-कोटि धन्यवाद करती है। और बच्चे के सुख के लिए दुआएँ मांगती है। माँ के प्यार की गाथा यहीं पर खत्म नहीं हो जाती। मौत के साथ जूझकर प्राप्त की इस जान को पालने के लिए, अपना सुख चैन अपना सारा जीवन वार देती है। दुनिया से रुखसत होने तक रब से हाथ जोड़कर बच्चे की सलामती मांगती रहती है।

शांति एक ऐसी ही माँ थी जिसने अपने बेटे को दिल से लगाकर पाला, जिसका जीवन साथी भरी जवानी में दुनिया से रुखसत हो गया था। बेटी के जीवन की चिंता में डूबे उसके माता-पिता ने उसे दूसरी शादी के लिए जोर देते हुए कहा था, 'बेटी अभी तेरे आगे पहाड़ सी जिंदगी पड़ी है। इस मासूम जान को कैसे पालेगी? अगर तू माने तो कोई अच्छा सा वर ढूंढ़कर तेरा घर बसा देते हैं।'

पिता के मुँह से फिर से घर बसाने की बात, सीमा को छलनी कर गयी। आंसू बहाते हुए पुत्र को सीने से लगा कर बोली, 'नहीं पिताजी! रिश्ते भी कहीं बार-बार जोड़े जाते हैं? इस बच्चे के सर से चाहे बाप का साया उठ चुका हो, पर ये माँ अभी जीवित है इसकी परवरिश के लिए।' फिर गोद में बैठे अपने लाल का मुख चूमकर, अपने आप को और माता पिता को दिलासा देते हुए बोली, 'और पिताजी मैं अकेली कहा हूँ? ये है न मेरा लाडला मेरे साथ, जब तक इस शरीर में जान है मैं इसकी परवरिश करुँगी। और मेरे बुढ़ापे में ये इस बूढ़ी माँ की देखभाल करेगा। अब तो यह जीवन इसके नाम, इसके सहारे मुझे पता भी नहीं चलना कि कब जिंदगी का सफर खत्म हो जाना है।' फिर एक ठंडी सांस भरते हुए बोली, '...और जब अंतिम समय ये गंगा जल पिलाएगा और मेरी अर्थी को कन्धा देकर शान से दुनिया से रुखसत करेगा, तो स्वर्ग का रास्ता मेरे लिए अपने आप खुल जाएगा। बस उस समय मेरा जीवन सफल हो जाएगा।'

बस फिर वो माँ अपना दुःख भुलाकर अपने पुत्र का जीवन सँवारने में जुट गई। जमीन की फसल बेचकर जो पैसा मिलता उससे गुजारा मुश्किल से ही हो पाता। कभी मौसम अच्छा होता तो फसल भी अच्छी होती और कभी मौसम का कहर फसलों की बर्बादी कर जाता। इसलिए सीमा अपने बच्चे को पालने के लिए लोगों के कपड़े सीने का काम करने लगी कि कल को कोई यह न कहे कि बाप के साये बगैर बच्चा कैसे दिन गुजार रहा है। वो माँ होने के साथ पिता का फर्ज भी निभा रही थी। बेटे दीपक को आँखों से ओझल न होने देती। दीपक की प्यारी मासूम बातों में अपनी खुशियां ढूंढ ही लेती। दीपक भी माँ से बहुत प्यार करता था।

दीपक तकरीबन आठ साल का था। उस दिन दीपक बाहर खेलने गया हुआ था। जाने से पहले माँ ने समझाया था, 'दीपू बेटा सुन! अपने दोस्तों संग मिलकर खेलना! कहीं दूर नहीं जाना और किसी के साथ लड़ना नहीं। मेरा अच्छा बेटा देखना कही दरख्तों पर मत चढ़ना कही तुझे चोट न लग जाए। मेरे दिल को तो चैन नहीं मिलती, जब तक तुम्हें इन आँखों से न देख लूँ। जल्दी वापिस आ जाना मेरे लाल! और वो उसके जाने के बाद अपने आँखों के तारे के लिए खाने का बंदोबस्त करने लगी सरसों का साग, मकई की रोटी और मीठी चूरी बहुत शोक से खाता था उसका लाडला, पुत्र के लिए ये सब कुछ करना उस का नित्य का काम था।

उसी वक्त पड़ोसन की आवाज आई, 'अरे शांति जल्दी आ तेरे दीपक के सर पर चोट लग गई।' ये सुनते ही शांति की आँखों के आगे अँधेरा छा गया। उसे लगा जैसे पैरों तले से जमीन खिसक गई हो। बेसुध शांति पागलों की तरह बाहर दौड़ पड़ी। दीपक के सर से बुरी तरह खून बह रहा था। शान्ति ने जैसे तैसे खुद को संभाला। अपनी चुनरी को उसके सर पर बांधकर बेहोश दीपक को उठाया। पड़ोस में रहने वाला बुजुर्ग चाचा और गाँव के कुछ बड़े उनको शहर हॉस्पिटल में ले गए। चोट गहरी होने के कारण डॉक्टर दीपक को ऑपरेशन के लिए अन्दर ले गए और शांति ऑपरेशन थिएटर के बाहर, ईश्वर से अपने लाल की रक्षा के लिए आँचल फैलाए प्रार्थना करने लगी, 'हे प्रभु! मेरे पुत्र को ठीक कर दे, चाहे मेरी जान ले ले, पर मेरे लाल को अच्छा कर दे। उसके बिना मैं जीवित नहीं रह पाऊँगी। मेरे पति को तो पहले ही अपने दर पर बुला लिया अब मेरा बच्चा मुझे बख्श दे दाता। हर दिन बिना अन्न जल ग्रहण किए नंगे पाँव तेरे दर पर आया करुँगी और बस वो पथराई हुई नजरों से एक टक दरवाजे की ओर देखे जा रही थी।

तभी ऑपरेशन थिएटर का दरवाजा खुला। डॉक्टर शांति के पास आकर बोला, 'फिक्र मत करो बहन जी! आपका बेटा खतरे से बाहर है।' माँ की दुआए रब के दर मंजूर हो गई थी। पत्थर बनी शांति की रगों में जैसे फिर से लहू दौड़ने लगा। अंदर जाकर अपने पुत्र को देखा। जाने कितनी बार मुख चूमा, सीने से लगाया। माँ के तड़पते दिल को राहत मिली। उसकी पथराई हुई आँखे मोम बनकर गंगा जल बहाने लगीं। सर झुकाकर प्रभु को लाखों शुक्राने किए और अपने बेटे की देखभाल में लग गई। थोड़े ही दिनों में दीपक स्वस्थ हो गया। और माँ हर रोज नंगे पाँव बिना अन्न जल ग्रहण किए प्रभु के दर हाजरी लगाना न भूलती।

समय बीतता गया। बेटा जवान हो गया। अब वो शहर कॉलेज में पढ़ने लगा। गाँव आने-जाने में काफी समय फिजूल जाने पर शहर में ही मकान किराए पर लेकर रहने लगा। अब तो महीने में एक-दो बार मिलने आ जाता और कभी सिर्फ फोन ही कर देता। आज भी फोन पर कहने लगा, 'माँ इस बार नहीं आ सकूँगा, पढ़ाई का बहुत प्रेशर है। चाचा के हाथ खर्चे पानी के लिए पैसे जरूर भेज देना।' बहुत दिनों से बेटे को देखने को तरसती माँ बोली, 'बेटा एक बार अपनी माँ को अपना प्यारा मुखड़ा तो दिखा जा।' दीपक गुस्से और बड़ी लापरवाही में बोला, 'ओह हो माँ! तुझे कितनी बार बताऊ कि नहीं आ सकता। एक तो पढ़ाई की परेशानी दूसरी तेरी जिद!' कहकर फोन काट दिया।

माँ बेचारी ममता भरी आँखों से गिरते आंसुओं को पल्लू से समेटने लगी और गहरी सोच और फिक्र में डूबी वो बड़बड़ाने लगी, 'पता नहीं दीपू को क्या हो गया है! बहुत चिड़चिड़ा हो गया है। पहले तो कभी ऐसे बात नहीं की, पता नहीं शहर जाकर उसे क्या हो गया है? मैं तो पहले ही शहर पढ़ने जाने के हक में नहीं थी। पुरखों की जमीन की संभाल कर लेता। कल ही चाचा जी को शहर भेजूँगी। उससे मिलकर उसके बारे में खबर लेकर आएंगे।

(शेष अगले अंक में)

(पृष्ठ १४ का शेष) **सोशल मीडिया...**

बल्कि इसके लिए वे दोषी हैं, जो इसका दुरुपयोग कर रहे हैं और इसका नकारात्मक प्रयोग करके उसे अपयश का पात्र बना रहे हैं।

वास्तव में इस समय अपरिपक्व मानसिकता के स्तरहीन, असभ्यों की बहुतायत है। ऐसे लोग ही सोशल मीडिया को प्रदूषित कर रहे हैं। यही कारण है कि मैत्री व भाईचारे के स्थान पर कटुता व तनाव व्यक्तिगत व सामाजिक स्तर पर पल्लवित होने लगता है! यह कदापि भी उचित नहीं माना जा सकता!

इसलिए यह आवश्यक है कि समग्र विवेक व चेतना के साथ ही फेसबुक/ व्हाट्सएप का प्रयोग किया जाए। विभिन्न प्रकार के समूह बनाकर लोग अस्वस्थता व दूषित इरादों के पोषण में लगे हैं। यह पूर्णतः अनुचित है। लोगों को इससे बचना चाहिए। यह मानसिक रुग्णता का प्रतीक है।

मैं सोशल मीडिया की सकारात्मक भूमिका को नमन् करता हूं और उसका नकारात्मक प्रयोग करने वालों की भर्त्सना करता हूं !

बाल कहानी

सहयोग

लीला तिवानी

एक पेड़ पर एक चिड़िया रहती थी. उसका नाम चिंकी था. उसी पेड़ की जड़ के पास एक चूहे का बिल था. उसका नाम मिंकू था. चिंकी और मिंकू की दोस्ती पक्की थी. चिंकी सुबह-सवेरे उठकर मिंकू चूहे को 'Good morning मिंकू भाई' कहती. मिंकू चूहा भी खुश होकर कहता- 'Have a great day चिंकी बहिन'. वे एक-दूसरे की सहायता किया करते थे. कभी मिंकू को खाने को कुछ न मिलता, तो चिंकी से जो कुछ बन पड़ता था, उसके लिए करती थी. मिंकू भी चिंकी की सहायता किया करता था. कई बार उसने चिंकी की अनुपस्थिति में उसके अंडों-बच्चों की निगरानी की थी. वे चुटकुले और मस्त समाचार सुनाकर एक-दूसरे को हंसाते भी रहते थे और खुश रहते थे.

तपती गर्मी और लू का मौसम था. एक बार चिंकी को कहीं पीने को पानी नहीं मिल रहा था. प्यास से उसका गला सूखा जा रहा था. मिंकू को बहुत चिंता हो गई. पेड़ के पास ही एक हैंड पम्प था. चिंकी ने उससे बार-बार चोंच गीली करने की बहुत कोशिश की, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली. मिंकू ने देखा, तो समझ गया कि चिंकी को बहुत प्यास लगी है. उसके मन में चिंकी की मदद करने का एक उपाय सूझा. वह हैंड पम्प पर चढ़ गया और हैंड पम्प को चलाने लगा. खूब पानी आने लगा. चिंकी ने जी भरकर पानी पिया और अपनी प्यास बुझाई. चिंकी ने अपने मित्र को सहयोग के लिए शुक्रिया कहा. तब मिंकू ने हैंड पम्प चलाना बंद कर दिया, ताकि पानी व्यर्थ न जाए. ■

बाल कहानी

आम कैसे खाएं?

रविन्दर सूदन

मेहुल सात वर्ष का प्यारा सा बच्चा था। स्कूल में नित्य नयी शरारतें करता, पर किसी को उससे कोई शिकायत नहीं थी, क्योंकि उसकी शरारतों से किसी का कोई नुक्सान नहीं होता था। एक दिन उसने घर के पिछवाड़े में गड्ढा करके एक पौधा उसमें लगा दिया। रात को उसे ठीक से नींद नहीं आती, सुबह होते ही पौधे के पास जाकर देखता। एक दिन उसकी माँ ने देखा कि उसे हो क्या गया है। बुलाकर प्यार से पूछा, 'बेटा क्या बात है आजकल कुछ परेशान से लगते हो?'

मेहुल कहने लगा, 'माँ, मैंने एक पौधा घर के पीछे लगाया है। इसमें फल कब लगेंगे जानने के लिए बेचैन हूँ।' माँ ने पूछा, 'बेटा कौन-सा पौधा लगाया है कौन-सा फल तुम्हें चाहिए?' मेहुल ने भोलेपन से जवाब दिया, 'माँ स्कूल के पास एक व्यक्ति कोई पौधे बेच रहा था। मुझे आम बहुत अच्छे लगते हैं। मैंने सोचा अपने घर के आम क्यों न खाऊं। इसलिए मैंने यह पौधा खरीद लिया और घर में लगा दिया।' माँ ने कहा, 'मैं भी तो देखूं वह पौधा।' माँ ने देखा तो पौधा आम का नहीं था। मेहुल से पूछा, 'बेटा किस चीज का पौधा लाये हो?'

'यह तो पता नहीं पर मुझे तो आम खाने हैं।'

माँ ने कहा, 'बेटा जैसा पौधा लगाओगे वैसा ही फल मिलेगा। देखो जैसे मुर्गी के अंडे से मुर्गी निकलती है, चींटी के अंडे से चींटी, वैसे ही नीम के बीज से नीम का पौधा बनता है, बबूल के बीज से काँटों वाला बबूल का पेड़ ही बनता है, वैसे ही आम की गुठली से आम का पेड़ बनता है।'

'अच्छा इसका मतलब आम खाने के लिए आम की गुठली ही लगानी पड़ेगी?' मेहुल ने बड़ी मासूमियत से पूछा। 'हाँ, यदि तुमने बबूल का पेड़ बोया तो आम कहाँ से खा सकोगे। बेटा, इसी प्रकार अगर तुम अच्छे काम करोगे तो उसका फल भी अच्छा मिलेगा। बुरे काम करोगे तो उसका फल भी बुरा मिलेगा। चोरी करने वाले को जेल की सजा भुगतनी पड़ती है। अच्छा काम करने वाले की सभी सराहना करते है, उसे इनाम भी मिलता है।' बात मेहुल की समझ में आ गयी। यदि आम खाना है तो आम ही बोना पड़ेगा।

उसने देखा था कि लोग आम खाकर गुठली फेंक देते हैं, कभी-कभी उसमें पौधा उग आता है। अब वह स्कूल आते-जाते आम के पौधे की तलाश करने लगा। ■

शिशु गीत

१. टोपी

रंग-बिरंगी आयी टोपी, मेरे मन को भायी टोपी
खुद को आईने में देखे, जिसने यहाँ लगायी टोपी

२. मच्छरदानी

दादाजी की साथिन लाठी, रहे नहीं उनके बिन लाठी
पीकर तेल बनी बलशाली, मुझको लगती हाथिन लाठी

३. बस्ता

मेरा बस्ता प्यारा-प्यारा, बोझ सम्हाले कितना सारा
इसपर जो कार्टून बना है, वो तो मुझको और दुलारा

४. पेंट

रंग उड़ा है कब से सारा, लगता ज्यों भूतों ने मारा
पापा इसपर पेंट कराओ, दरवाजा ये अपना प्यारा

५. टिफिन बॉक्स

टिफिन बॉक्स मैं ले जाता हूँ
जमकर फिर खाना खाता हूँ
मुझको ताकत मिलती पूरी
पढ़ने में अव्वल आता हूँ

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

बाल कविताएं

उँगली पकड़ हमारी माता, चलना हमें सिखाती है
दुनिया में अस्तित्व हमारा, माँ के ही तो कारण है
खुद गीले में सोकर, वो सूखे में हमें सुलाती है!
देश-काल चाहे जो भी हो, माँ ममता की मूरत है
धोकर वो मल-मूत्र हमारा, पावन हमें बनाती है!
पुत्र कुपुत्र भले हो जायें, होती नहीं कुमाता माँ
अपने हिस्से की रोटी,
बेटों को सदा खिलाती है!
ऋण नहीं कभी चुका सकता
कोई भी जननी माता का
माँ का आदर करो सदा
यह रचना यही सिखाती है!

-- डॉ रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

पिकनिक करने का मन आया मोटर में सबको बैठाया
पहुँच गये जब नदी किनारे खरबूजे के खेत निहारे
ककड़ी, खीरा और तरबूजे कच्चे-पक्के थे खरबूजे
प्राची, किट्टू और प्रांजल करते थे जंगल में मंगल लो मैं
पेटी में भर लाया खरबूजे का मौसम आया
देख पेड़ की शीतल छाया हमने आसन वहाँ बिछाया
जम करके खरबूजे खाये शाम हुई घर वापिस आये

-- डॉ रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

मां बस एक मिठास है, प्यारा-सा अहसास है
मां-सा करीब न कोई होता, आनंद का आभास है
मैं शिप, शिप की कैप्टन मां, मेरे दिल की धड़कन मां
मेरी शक्ति, धुरी है मेरी, हर पल मेरा बचपन मां
रस्ता मुझे दिखाती मां, अच्छा-बुरा सिखाती मां
मां-सा रिश्ता कोई न देखा
रिश्ते सभी निभाती मां
मां ने ही तो जन्म दिया
अन्नपूर्णा होती मां
खुशियों का अनमोल खजाना
अपनों का विश्वास है मां

-- लीला तिवानी

बाल पहेलियाँ

(१) इधर-उधर ये भागता, बचने सबकी लात से
मिलता पर कोई नहीं, इससे मीठी बात से
(२) बहती रहती हर समय, नहीं किसी की नाक है
छूता भी कोई नहीं, हर कोई चालाक है
(३) लोहे से बनती सदा, हड्डी जैसा काम
इसके आगे कुछ नहीं, बोलो जल्दी नाम
(४) नजरों को रखना सही, इसका है संतोष
फिर भी कोई यदि बुरी, तनिक न इसका दोष
(५) चलती सबके साथ पर, नहीं मिलाती हाथ
नहीं करेगी बात तक, जितना फोड़ो माथ

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

(इन पहेलियों के उत्तर पृष्ठ ७ पर देखिए।)

बहादुर देवम

(दूसरी किस्त)

आनन्द विश्वास

पुलिस के लगातार प्रयास के चौबीस घण्टे बाद भी पुलिस के हाथ खाली के खाली ही थे। कोई भी जानकारी या सुराग नहीं था पुलिस के पास। पर प्रयास जारी था।

देवम के पापा-मम्मी परेशान थे। कुछ भी तो नहीं सूझ रहा था उन्हें, वे करें भी तो आखिर क्या करें। बेचारे सीधे-सादे, सरल जीवन, कभी किसी से कोई झगड़ा या दुश्मनी भी नहीं और ना ही बहुत पैसे वाले, जो पैसे के लिए कोई अगवा करे देवम को।

वैसे भी यदि ऐसा होता तो अब तक किसी का फोन तो आना ही चाहिए था। कोई सम्पर्क तो होना ही चाहिए था। कहीं से कोई पैसे की मांग तो आनी ही चाहिए थी। पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। इससे यह अन्दाज हो रहा था कि घटना का उद्देश्य, न तो दुश्मनी हो सकता है और ना ही पैसा। तो फिर ऐसा क्यों हुआ? प्रश्न तो फिर भी वहीं का वहीं था। उत्तर के बिना।

रात भर न सो सके थे विवेक बाबू और देवम की मम्मी का तो रोते-रोते बुरा हाल हो गया था। आँखों से आँसू का सैलाब रुकने का नाम ही न ले रहा था। गम के बादल छँटना ही नहीं चाहते थे। गमगीन वातावरण हो गया था देवम के घर का। देवम के दोस्त, सोसायटी वाले, स्कूल वाले, सभी तो चिन्तित और परेशान थे, अपने प्रिय देवम के लिये। जिसे पता चलता वह यही पूछता- 'कुछ पता चला देवम का?' और देवम के पापा बस 'नहीं' ही कह पाते।

फोन की घण्टी के बजने का सिलसिला बन्द होने का नाम ही न ले रहा था। और बन्द हो भी तो कैसे हो? घटना ही कुछ ऐसी ही थी।

उधर देवम की आँख पर बँधी पट्टी जब खोली गई, तो उसने अपने आप को एक कमरे में पाया। जहाँ ऊबड़-खाबड़, उल्टा-सीधा सामान भरा पड़ा था। पट्टी खोलने वाले आदमी, देवम को कमरे में बन्द कर, बाहर से ताला लगाकर चले गये। बाहर हॉल में कुछ लड़के पैकिंग का काम कर रहे थे। एक आदमी ने बाहर से ही खिड़की पर दो रोटी, अचार और एक गिलास पानी रख दिया और खाना खाने को बोल कर चला गया। देवम ने खाना नहीं खाया। उसके पास खाने को गम और पीने को आँसू पर्याप्त थे।

थोड़ी देर बाद देवम को हॉल में लाया गया। वहाँ उसे चरस की पैकिंग करने के लिए बैठा दिया गया। जैसा दूसरे लड़के कर रहे थे, उसी तरह देवम ने भी काम करना शुरू कर दिया। शायद उसने यही उचित समझा होगा।

यहाँ का नजारा देखकर तो देवम हक्का-बक्का ही रह गया। इनमें से एक लड़के का फोटो तो उसने अखबार में भी देखा था, गुम हो गये बच्चों के कॉलम में। सब लड़के दस-बारह से बीस-बाईस साल के। सब के सब बेबस और लाचार। बन्द पिंजरे से आजाद होने को आतुर।

उन लड़कों से पता चला कि इनको भी ये लोग पकड़कर ले आए थे। यहाँ पर इन लड़कों से काम करवाते हैं और खाना देते हैं बस। खाना, सोना और रहना, सब कुछ यहीं पर। स्मगलिंग का काम होता है यहाँ पर। कभी ड्रग्स की पैकिंग तो कभी अफीम, चरस, गांजे की पैकिंग। और कभी-कभी तो हीरों की पैकिंग भी की जाती है।

इन लड़कों में से ज्यादातर को तो पकड़कर ही लाए हैं ये लोग और कुछ को काम दिलाने के बहाने से इनके ऐजेंटों ने इन लड़कों को यहाँ लाकर छोड़ दिया। सब कुछ अन्डरग्राउन्ड, बाहर निकलना बेहद मुश्किल।

अब देवम को ख्याल आ गया था कि ये गेंग लड़कों को अगवा करके यहाँ ले आता है और मजदूरी करवाता है। बाहर न जाने देने का कारण शायद गोपनीयता ही हो सकता है। बाहर निकलने का कोई उपाय नहीं सूझ पा रहा था देवम को।

पर इतने दिनों में देवम ने वाइक, कार और ट्रक को अन्दर आते और बाहर जाते तो देखा था। ट्रक में सामान आता भी था और पैकिंग के बाद बाहर जाता भी था। स्पष्ट है कोई रास्ता तो होगा ही बाहर जाने का।

और उधर मम्मी-पापा का ख्याल आते ही देवम की आँखों से आँसू छलक जाते थे। कैसे पल-पल कट रहा होगा उसके बिना उनका। कल्पना करते ही रोम-रोम थर्रा जाता था उसका।

लगभग एक सप्ताह बीत गया। न तो पुलिस ही देवम का कुछ पता लगा पाई और न ही देवम इन गुण्डे-बदमाश स्मग्लरों को चकमा देकर इनके चंगुल से आजाद हो पाया। और उधर देवम के मम्मी-पापा की वेदना को आसानी से समझा जा सकता था।

और आज शाम को ही एक ट्रक आ गया, शायद माल को लेकर जाने के लिए। गतिविधियाँ तेज हो गईं थीं। स्टाफ के सभी लोग पैक किए हुए माल को ट्रक में लोड करने में तत्परता के साथ व्यस्त हो गये। मालिक-लोग भी कार से आए हुए थे। उन्हीं की देख-रेख में लोडिंग का काम चल रहा था। बारह-एक बजे के करीब ट्रक लोड हो चुका था।

मालिक-लोगों ने चौकीदार को हिदायत दी कि सुबह छः बजे जब ट्रक बारह निकले तो हमें सूचित कर देना। साथ ही ड्राइवर को सम्पर्क में बने रहने का निर्देश दिया। फिर वे लोग तो रात को ही कार से चले गये। बस अब ड्राइवर को इन्तजार था सुबह के छः बजे का।

सभी लेबर सोने लगे और चौकीदार जागरण के लिए तत्पर। आखिर उसे ही तो इन सभी लड़कों की और ट्रक की देखभाल करनी थी। पर देवम की तो रातों की नींद ही गायब हो चुकी थी। लगभग चार बजे चौकीदार अपने स्टूल से उठा और अपने मोबाइल को स्टूल पर रखकर, शायद बाथ-रूम की ओर गया।

और यही ऐसा मौका था जिसकी देवम को तलाश थी। बड़ी होशियारी से देवम ने वह मोबाइल उठाकर, एक कोने में जाकर, अपने पापा को फोन किया। उधर देवम के पापा के फोन की घण्टी बजी। 'हाँ, हलो आप कौन बोल रहे हैं?' देवम के पापा ने पूछा।

'पापा! मैं देवम बोल रहा हूँ।' देवम ने दबी आवाज में उत्तर दिया।

'देवम तुम कहाँ हो?' उन्होंने आतुरता से पूछा।

देवम ने कहा- 'पापा, जरा ध्यान से सुनो। ये लोग मुझे पकड़कर यहाँ लाए हैं ये जगह अण्डर-ग्राउन्ड है और स्मगलिंग का काम होता है। यहाँ पर और भी बहुत से बच्चे हैं जिन्हें ये मेरी तरह ही पकड़ कर यहाँ लाए हैं। यहाँ पर एक कार है जो शायद यहाँ के मालिक-लोगों की है और जिसका नम्बर RJ-1-V 2555 है। आज सुबह छः बजे एक ट्रक स्मगलिंग का सामान लेकर मुम्बई जाने वाला है जिसका नम्बर RJ-5-Q 5888 है। चौकीदार अभी बाथ-रूम गया है और मैं उसी के मोबाइल से छुप कर बात कर पा रहा हूँ। बस, अब इस नम्बर पर बात मत करना।'

इतना कह कर देवम ने फोन कट कर दिया और बड़ी शीघ्रता से मोबाइल को स्टूल पर रख कर अपने स्थान पर आ कर सोने का नाटक करने लगा, जैसे कुछ हुआ ही न हो। चौकीदार अभी तक नहीं आ पाया था।

सुबह होते ही चौकीदार ने ड्राइवर को ट्रक ले जाने के लिए कहा और साथ ही ट्रक के जाने की सूचना मालिक-लोगों को भी दी। ड्राइवर ट्रक लेकर अपने गन्तव्य स्थान की ओर रवाना हो गया। तब कहीं जा कर चौकीदार ने चैन की साँस ली।

देवम के पापा ने यह सूचना देने के लिए जब पुलिस को फोन किया, तो पुलिस-अफसर ने बताया कि ये सभी सूचनाएँ हमें प्राप्त हो गई हैं क्योंकि आपका फोन हमारे वॉच पर है। अब आप बिलकुल भी चिन्ता न करें, हम शीघ्र ही देवम तक पहुँच सकेंगे।

पुलिस की सतर्कता देखकर देवम के पापा के मन में प्रसन्नता हुई और राहत भी मिली। साथ ही उन्हें विश्वास भी हुआ कि पुलिस देवम तक पहुँचने में जरूर सफल होगी।

(अगले अंक में समाप्त)

शिशु गीत

एक बनो, एक बनो, प्यारे बच्चो, नेक बनो!
जब भी शाला से घर आओ, सब चीजें करीने से लगाओ
जूते ठीक जगह सब रखना,
कपड़े भी तह करके रखना.
साबुन से तुम धोना हाथ,
सीखो रहना सबके साथ.
एक बनो, एक बनो,
प्यारे बच्चो, नेक बनो.

-- लीला तिवानी

फिर गए हवाई चप्पलों के दिन

अशोक मिश्र

ठीक उसी तरह 'कि पहले अंडा आया कि मुर्गी' की तरह यह सवाल भी मौजू है कि पहले जूते आए या चप्पल। जूते का ही संशोधित रूप चप्पल है या चप्पल की ही अगली पीढ़ी का नुमाइंदा है जूता? मेरा ख्याल है कि ऊंचे-नीचे, पथरीले-रेतीले रास्तों पर चलने से होने वाली दिक्कत से बचने के लिए आदमी ने सबसे पहले जिस चीज की कल्पना की होगी, वह खड़ाऊं ही रही होगी। अब तक सबसे ज्यादा प्रसिद्ध खड़ाऊं रामचंद्र जी की ही रही है, जिसे उनके छोटे भाई भरत ने सिंहासन पर रखकर अमर कर दिया। खड़ाऊं का ही संशोधित रूप चप्पल है, इसे मानने में शायद ही किसी को आपत्ति हो। खड़ाऊं पहनकर चलने-भागने में होने वाली दिक्कतों ने चप्पल का ईजाद किया। हां, आजादी के कई दशक पहले से लेकर आजादी के बाद के दो-ढाई दशक तक पूरे देश में गटापारची (प्लास्टिक) चप्पलों का राज रहा है, लेकिन जैसे ही रबड़ की चप्पलें बाजार में आईं, गटापारची चप्पलों का पराभव हो गया। ठीक वैसे ही जैसे दिलीप कुमार, राजेंद्र कुमार और मनोज कुमार का स्टारडम राजेश खन्ना के आते ही क्षीण हो गया था।

हवाई चप्पल भी बहुत दिनों तक लोगों के दिलों पर राज नहीं कर सकी। किसिम-किसिम की सैंडिलों और जूते-जूतियों ने हवाई चप्पलों को उनकी औकात बता दी। जिस गटापारची या हवाई चप्पलों को पहनकर लोग शादी-विवाह, नाते-रिश्तेदारी में आते-जाते थे, उसको पहनकर घर से बाहर निकलना, हास्यास्पद हो गया। गटापारची चप्पल तो जहां बिला गए, वहीं हवाई चप्पलों का दायरा घर तक ही सीमित कर दिया गया।

कहते हैं न कि बारह साल बाद घूरे के भी दिन फिर जाते हैं। हवाई चप्पलों के भी दिन फिर गए हैं। कल तक बड़े-बड़े शापिंग मॉल, बड़े-बड़े शू स्टार से लेकर गांव-कस्बों में खुली 'मटुकनाथ जूता स्टोर' टाइप दुकानों में इतराने वाले ब्रांडेड जूते-चप्पल अपनी किस्मत को रो रहे हैं। उन्हें कोई पूछ ही नहीं रहा है। मानो हवाई चप्पलों के सामने उनकी कोई औकात ही न बची हो। हवाई चप्पल खरीदने को भीड़ उमड़ी पड़ रही है। भले ही अभी हवाई यात्रा का जुगाड़ न हो पाया हो, लेकिन निरहू प्रसाद से लेकर कल्लो भटियारिन तक हवाई चप्पल खरीदकर रख लेना चाहते हैं। क्या पता किस दिन हवाई यात्रा का कोई जुगाड़ भिड़ ही जाए। ऐन मौके पर हवाई चप्पल न मिले, तब? नासपीटा घुरहुआ उस दिन दुकान बंद रखे, तो क्या होगा? हवाई यात्रा का सपना तो 'टांय-टांय फिस्स' हो जाएगा।

आज हवाई चप्पल पहनकर हवाई यात्रा करने की इजाजत मिली है, कल हवाई यात्रा के लिए हवाई चप्पल अनिवार्य कर दिया गया, तो? सरकार कुछ भी कर सकती है। सरकार सरकार है। उसका कोई हाथ पकड़ सकता है भला। गरीब नवाज तो कल यह भी कह सकते हैं कि चड्ढी-बनियान पहनकर भी लोग हवाई यात्रा कर सकते हैं, बस चड्ढी-बनियान फटी न हो। दुकानदार भी मौके की नजाकत देखकर हवाई चप्पल की कालाबाजारी कर रहे हैं। साठ-सत्तर रुपल्ली में बिकने वाली हवाई चप्पल आकाश कुसुम होती जा रही है। अभी कल ही एक खबर छपी थी कि जूते की दुकान का ताला तोड़कर चोर पचास जोड़ी हवाई चप्पल चुरा ले गए। ब्रांडेड और लक्जरियस जूते, सैंडिल चोर से हाथ जोड़कर विनती करते रहे, लेकिन चोर ने उनकी एक नहीं सुनी। ■

जो है, सो है

डा. मनोहर लाल भंडारी

पूरे घर में गन्दगी का अम्बार था। घर की तिजोरी पर हर कोई हाथ साफ कर रहा था। जेवर-सोना-चांदी सब लूट चुका था, सारे ताले टूटे पड़े थे। हर कोई बाप का माल समझकर मलाई मार रहा था और दूध में पानी मिला-मिलाकर तपेले में पूरा दूध भरे होने का भ्रम पैदा कर रहा था। हालांकि कमाई खूब थी, फिर भी अपनी हरकतों के चलते उधार ले लेकर घर चलाया जा रहा था। देखने वालों का मुंह बन्द करने के लिए उनके मुंह में मलाई ठूंस दी जाती थी। दरवाजें टूटे पड़े थे, चोर उचक्के, कुत्ते, बिल्ली, मक्खी-मच्छर सीना ताने बाप का घर समझकर घुस रहे थे। लब्बोलुआब यह है कि घर की बहुओं और उनसे जुड़े लोगों की नीयत कुछ और ही कहानी कह रही थी।

घर में नई बहू आई। वह बड़ी विनम्र थी, सेवाभावी भी थी, सुसंस्कारित थी, ईमानदार थी। घर को मन्दिर समझती थी, घर को सुधारने-मजबूत करने पर सबसे ज्यादा ध्यान देने लगी। जितना है, उससे भी कम में घर चलाने लगी। उधारी चुकाना भी शुरू कर दिया, बचत शुरू हो गई। बाजार से बेहद ऊँचें भावों में चीजें खरीदने की बजाय घर में ही चीजें बनाने लगी। और भी बहुत कुछ...!

बड़ी बहुओं को लगने लगा कि हमारी पोल खुलने लगी है और लम्बे समय तक खुलती ही चली जाने वाली है। और कल को सब इसी के मुरीद ना हो जाएं और हमें कोई पूछेगा नहीं। हमारी तो मौजमस्ती खत्म हो जायेगी। बस उन्होंने जोर-जोर से सारे जमाने को सुनाते हुए नई बहू को निपटाना शुरू किया। इसमें अपने किये कुकर्मों पर पर्दा डालने की कोशिशें साफ साफ नजर आ रही थी, परन्तु बिना संकोच के घर की दशकों पुरानी दुर्दशा के लिए नई बहू को कोसना शुरू कर दिया। उन पड़ोसियों को भी साथ मिला लिया, जिन्हें वे चन्दी डालती रहती थी। शादी-ब्याह-गीत-संगीत के बारे में गाँव में न्यौता (तेड़ा) देने वाले नेग (भेंट) भोगी औरतों-आदमियों ने भी बहू के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। खूब जोरशोर से बहू की खूब लानत मलामत की जाने लगी।

बावजूद सामूहिक-उच्चस्तरीय-समग्र-समवेत-एकजुट कोशिशों और षडयंत्रों के, आशा के विपरीत सम्बन्धित लोग समझदार निकले, नई बहू के पक्ष में खड़े होते चले गए। खिसियानी बिल्लियों की तरह सभी जोर-शोर से खम्बा नोंचने लगे. खम्बे सुरक्षित हैं, नाखून घायल हैं, बिल्लियाँ खतरनाक मूड में हैं। भगवान् नई बहू की रक्षा करें! ■

माया महा ठगनी हम जानी

बाल मुकुन्द ओझा

व्यंग्य साहित्य की एक विधा है, जो उपहास, मजाक और ताने का मिलाजुला स्वरूप है। हिन्दी में हरिशंकर परसाई और श्रीलाल शुक्ल व्यंग्य विधा के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। हर किसी पर इस अस्त्र का उपयोग नहीं किया जा सकता। इसे किसी के पक्ष में प्रयुक्त करना है तो किसी के विरुद्ध। व्यंग्य विचार से पैदा भी होता है और अभिव्यक्ति से सामना कराता है। व्यंग्य विषंगति, झूठ और पाखंड का भड़ाफोड़ कर सत्य का अपने ढंग से साक्षात् कराता है। व्यंग्य फब्तियां कसता है, जो हंसाती, गुदगुदाती और तिलमिलाती हैं।

आजादी के बाद व्यंग्य विधा खूब फली फूली। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित नेहरू पर व्यंग्य बाणों की बरसात संसद और उसके बाहर खूब देखी गई। नेहरू के रहन-सहन, कपड़े और खाने-पीने तक पर खूब ताने मारे गए। व्यंगकारों ने इंदिरा गाँधी को भी नहीं बख्शा। इंदिरा से नरेंद्र मोदी तक व्यंग्य, उपहास और मजाक का लम्बा दौर चला। जुमलों ने भी ऊंचाइयों को छुआ। गरीब के खाते में १५ लाख का जुमला खूब प्रचलित हुआ। मजाक और परिहास के तीर भी इस पर चले। यह अलग बात है कि इसका शिकार भी सदा की तरह गरीब ही हुआ। इंदिरा गाँधी के समय 'जो हिटलर की चाल चलेगा' बहुत प्रचलित हुआ। इसको प्रचलित करने वाले आज सत्तासीन है और यह नारा उन पर भी सटीक बैठता है।

आज माया से किसे मोह नहीं है मगर माया भी

(शेष पृष्ठ १७ पर)

(दूसरी किस्त)

काश! बेटियाँ होतीं

कल्पना रामानी

ज्योति का मन भी सबकी गाथाएँ सुन-सुनकर चीत्कार करने लगा था, बुजुर्गों का ऐसा दर्द भरा जीवन उसने इन वृद्धाश्रमों के अलावा और कहीं नहीं देखा था। आधुनिक आश्रय-स्थल तो और भी डराने वाले थे, जहाँ सब स्वयं से ही अजनबी थे। लगता था, जैसे अपने अज्ञातवास के दिन काट रहे हों। अंत में वे एक पुराने महिला आश्रय-स्थल पर पहुँचे, जहाँ विधवा और परित्यक्ता वृद्ध महिलाएँ अपने अंतिम समय में देश के हर कोने से आकर शरण लेती थीं।

ज्योति और जयेश संचालकों से अन्दर जाने की अनुमति लेकर आगे बढ़े तो देखा, कुछ बुजुर्ग महिलाएँ झुण्ड बनाकर कहीं जाने को तैयार थीं। गेरुए वस्त्र, माथे पर गेरुआ तिलक और गले में रुद्राक्ष की माला डाले सबकी वेशभूषा एक जैसी थी, लगता था जैसे कहीं विशेष अभियान पर जा रही हों।

तभी अचानक एक महिला पर उसकी नजरें स्थिर हो गईं। ज्योति को उसकी सूरत पहचानी सी लगी। गौर से देखा तो आश्चर्य से आँखें खुली रह गईं, पलकें झपकना भूल गईं। वह छाया थी। लगभग बरसों बाद उसे इस हाल में यहाँ देखकर ज्योति सकते में आ गई, चार सालों से उसका मोबाइल स्विच-ऑफ मिलने का सारा रहस्य भी उसे समझ में आ गया।

तेजी से चलकर उसके सामने पहुँची, तो छाया भी विस्मित होकर उसे देखती रह गई और एकाएक उसकी आँखों से जैसे रुका हुआ झरना फूट पड़ा। उसने अपनी साथिनों से क्षमा माँगी और ज्योति-जयेश को अपने कमरे में ले आई।

'यह तुमने क्या हाल बना रखा है छाया? तुम्हारा परिवार, सुनील भाई साहब, सब कहाँ हैं?' ज्योति ने छाया को गले लगाते हुए पूछा। उसे रोते देखकर उसकी आँखें भी नम हो चली थीं।

'मैं तुम्हें अपनी इन गुमनाम गलियों में गुम हो जाने की पूरी दास्तान सुनाऊँगी ज्योति, तुम दोनों आराम से बैठो' कहते हुए उसने टेबल पर ही रखे हुए कुछ ताजे फल उन्हें खाने को दिए, फिर हिचकियों को रोककर अपनी कहानी शुरू की–

'तुम विश्वास नहीं करोगी ज्योति, कि कभी-कभी हमारे साथ ऐसी घटनाएँ घटित हो जाती हैं कि दिमाग चक्करघिन्नी बनकर रह जाता है। नियति हमारे आस-पास परिस्थितियों का ऐसा ताना-बाना बुनती है कि हम, न जाने क्यों, उसमें सहर्ष फँसते चले जाते हैं और हमें पता ही नहीं चलता कि कब हमारी सुखद सपनों सी जिन्दगी दुखद दास्तान बन चुकी है।

हमारे साथ भी ऐसा ही हुआ। जिन्दगी अपनी निर्बाध गति से अच्छी तरह गुजर रही थी कि एक रात अचानक ही नींद में सुनील की चीख सुनकर मैं जाग गई। देखा तो डर के मारे उनके हाथ पैर काँप रहे थे। सुबह के लगभग ५ बजे का समय था। मैंने घबराकर पूछा– 'क्या हुआ सुनील, कोई डरावना सपना देखा है क्या'?

'हाँ छाया, सफेद कपड़ों में कुछ लोग एक अर्थी लेकर 'राम नाम सत्य है' कहते हुए जा रहे थे, फिर एक बड़े नामपट्ट पर बड़े-बड़े लाल अक्षरों में 'वृन्दावन' लिखा हुआ देखा। फिर देखा तो वह अर्थी मेरी थी और तुम भिक्षुणी के भेष में एक घर के द्वार पर भीख माँग रही थीं। मेरा दिल तो किसी अनिष्ट की आशंका से बैठा जा रहा है।'

सुनकर मैं भी सकते में आ गई थी लेकिन हिम्मत करके उनको हौसला देते हुए कहा– 'सपने भी कभी सच हुए हैं क्या सुनील?, कभी-कभी स्वास्थ्य की गड़बड़ी की वजह से भी हम बुरे सपने देखते हैं। चलो उठ जाओ, सुबह हो चुकी है, मैं बढ़िया सी चाय बनाती हूँ।'

'लेकिन छाया यह सपना बिलकुल अलग था, जो उन्हीं रंगों के साथ मेरे मन-पटल पर अंकित हो गया है। कहते हैं इस तरह के सपनों में कुछ न कुछ सच्चाई अवश्य होती है।'

'अरे! कहा न, यह केवल वहम है, भूल जाओ कि तुमने कोई सपना देखा है।'

बात उस समय आई गई हो गई और धीरे-धीरे सुनील सपने की बात भूल गए। दो तीन वर्ष आराम से गुजर गए फिर सुनील के रिटायर होते ही घरेलू परिस्थितियों में बदलाव आने लगा। बच्चे बड़े हो चले थे तो सास-ससुर का दो कमरे और हाल वाला पुश्तैनी मकान छोटा पड़ने लगा था। बेटों की शादी के बाद हम एक-एक कमरा उनको सौंपकर हाल में किसी तरह गुजर कर रहे थे, लेकिन अब बेटों को बढ़ते हुए दो-दो बच्चों के साथ एक-एक कमरे में परेशानी होने लगी थी और हमें भी इस थकी उम्र में एक अलग सुविधाजनक कमरे की आवश्यकता महसूस होने लगी थी।

बेटों की आमदनी बच्चों की पढाई-लिखाई और घर खर्च में ही पूरी हो जाती थी, तो हमने बेटों के साथ मशविरा करके रिटायरमेंट के बाद मिली रकम से मकान की छत पर कमरे बनाने का विचार किया। लेकिन काम शुरू करने से हमें ही परेशानी होती, क्योंकि ऊपर जाने वाली सीढ़ियाँ हाल के अन्दर से ही जाती थीं, सो बड़े बेटे संजय ने सुझाया कि हर साल सरकार की तरफ से एक विशेष सुविधा संपन्न ट्रेन वरिष्ठ नागरिकों के लिए देश के प्रमुख धार्मिक स्थलों के भ्रमण हेतु चलाई जाती है। एक महीने की समय सीमा में अनेक स्थानों पर देवदर्शन के साथ ही दर्शनीय स्थलों का भी आनंद लिया जा सकता है। अगर हम चाहें तो उस गाड़ी में हमारा आरक्षण करवा लिया जाए। मकान का काम एक बार शुरू हो जाए, तो आसपास किसी किराए के मकान में कुछ समय के लिए शिफ्ट हो जाएँगे।

बात सही थी और हम भी एकरसता की जिन्दगी से ऊब गए थे। भ्रमण की बात सुनते ही बदलाव के विचार से हम सहर्ष तैयार हो गए और नियत तिथि पर उत्साहपूर्वक लम्बी यात्रा के लिए निकल पड़े।

गाडी हर पड़ाव पर दो दिन रुकती और हम आराम से घूम-फिरकर गाड़ी में ही सोकर रात गुजारते। गाड़ी का अंतिम पड़ाव यही वृन्दावन था। बेटों से प्रतिदिन मोबाइल पर बातचीत होती रहती थी। काम शुरू हो चुका था, लेकिन किराए का मकान सुविधाजनक न होने से बड़े बेटे संजय ने हमें कुछ समय यहीं विश्राम करने की बात कही और कहा कि यहाँ हम किसी होटल में ठहर जाएँ, वो कल ही यात्री बस से वहाँ पहुँच जाएगा फिर हमारे रहने की व्यवस्था पर विचार करेंगे।

बात ठीक ही थी तो हमने कुछ समय की बात सोचकर सहमति दे दी। अगले दिन देर रात को वो हमारे पास पहुँचा। सुबह होते ही वो होटल से निकल गया और हमारे रहने के लिए एक सरकारी वृद्धाश्रम में फॉर्म भरकर आया। उसके कथनानुसार रहने के अन्य आवास कुछ सुविधाजनक नहीं थे, तो कुछ बहुत महँगे थे, प्राइवेट वृद्धाश्रम में भी लाखों रूपए अग्रिम देने के बाद ही प्रवेश मिलता था। हमारे पास और कोई चारा भी नहीं था। सब्र के साथ मन पर पत्थर रखकर हम वहाँ पहुँच गए और बेटा हमें अपना ध्यान रखने को कहकर वापस चला गया।

कुछ दिनों के बाद ही वहाँ की अव्यवस्थाओं से परिचित होते गए, वृद्धाश्रम के कठोर अनुशासन में हमारा दम घुटने लगा था, सुनील कुछ अस्वस्थ महसूस करने लगे थे। घर और बच्चों की याद अलग से सता रही थी। लेकिन पूछने पर बेटों को अपनी तकलीफ कभी नहीं बताई, हमेशा यहाँ सब अच्छा होने की ही बात कही। हमें खर्च के लिए पेंशन का पैसा मिलता ही था, इसलिए हम समय काटने के लिए भोजन के बाद दिन भर घूमने निकल जाते फिर शाम तक लौट आते।

दिन गुजरते रहे और इस तरह ६ महीने निकल गए। बेटों से फोन पर बात होती रहती थी, संजय ने बताया कि मकान का काम पूरा हो चुका है, बस रंग रोगन होते ही वो हमें लेने आ जाएगा। हम बेसब्री से इंतजार करने लगे। तभी अचानक एक दिन सुनील सुबह उठे तो उनके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था। डर की छाया स्पष्ट झलक रही थी पूछने पर उसने वही मनहूस सपना पुनः देखने की बात बताई और कहा जरूर कुछ अशुभ होने वाला है।

सुनकर मेरा मन भी कुशंकाओं के भँवर में डूबने-उतराने लगा था लेकिन सुनील को मैं कमजोर होते नहीं देखना चाहती थी, अतः मैंने हँसते हुए उनको यह वहम मन से निकाल देने के लिए कहा और बताया कि रात में ही संजय का फोन आया था कि वह कल यहाँ पहुँच रहा है।

(अगले अंक में समाप्त)

(भाग १)

दिव्यांगों के आदर्श - श्री बच्चू सिंह

बच्चू सिंह भरतपुर रियासत के राजकुमार थे। भरतपुर के महाराजा किशन सिंह के यहाँ ३० नवंबर १९२२ को मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी व द्वादशी (गीता जयंती/मत्स्य द्वादशी) के दिन एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम किशन सिंह ने अपनी स्वर्गीय माता गिरराज कौर के नाम पर 'गिर्राज शरण सिंह' रखा। उनको ही प्यार से 'बच्चू सिंह' कहा जाता था।

बच्चू सिंह अपने जन्म से मस्तिष्क पक्षाघात (सीपी) और आत्मकेंद्रित स्पेक्ट्रम विकार (एएसडी) नामक असाध्य बीमारी से पीड़ित थे। मस्तिष्क पक्षाघात होने से सामान्य रोगी का जीवन निष्क्रिय हो जाता है, परन्तु उनके पिता महाराजा किशनसिंह और उनके वफादार समर्थकों द्वारा उनकी गहन आयुर्वेदिक चिकित्सा करायी गयी और क्षत्रियोचित प्रशिक्षण भी दिया गया, जिससे वे शारीरिक रूप से अपने आपको ढालने में समर्थ रहे।

उस समय राजपरिवारों के युवकों के लिए ब्रिटिश सरकार की सेना में शामिल होना सामान्य परम्परा थी। इसलिए ब्रिटिश प्रशासन ने भरतपुर के पूरे राजपरिवार को 'क्षत्रिय' नामक सैन्य शक्ति में शामिल करने के लिए मनाया। लेकिन बच्चूसिंह की विशेष शारीरिक अक्षमता के कारण उनको थलसेना में भेजना संभव नहीं था, परन्तु उनकी उपेक्षा करना भी असंभव था, इसलिए

उन्हें वायुसेना में फ्लाइंग ऑफिसर (पायलट) के रूप में भेजा गया।

१९४३-४४ में जब नेताजी सुभाष चन्द्र की आजाद हिन्द फौज द्वारा उत्तर-पूर्व भारत पर आक्रमण किया गया, तो उसकी प्रतिक्रिया में बच्चूसिंह को आजाद हिन्द फौज पर हमला करने के लिए निर्देश दिया गया। किन्तु इसमें बच्चू सिंह ने पूरी बेरुखी दिखायी, क्योंकि वे पूरे मन से देशभक्त थे और अपने ही देशभक्त देशवासियों पर आक्रमण करना उनको उचित नहीं लगा।

बच्चू सिंह की बेरुखी से नाराज होकर ब्रिटिश शासन ने बच्चू सिंह को चिढ़ाने के लिए उनके ही एक मित्र फ्लाइंग ऑफिसर राजेन्द्र सिंह को बच्चू सिंह के युद्ध विमान हरिकेन-२ से ही आजाद हिन्द फौज पर हमला करने के लिए भेजा। ब्रिटिश शासन समझता था कि बच्चू सिंह कुछ कर नहीं पाएगा और इस हमले पर भरतपुर के राजपरिवार का नाम आ जाने से आंदोलन खराब होगा। लेकिन नाराज बच्चू सिंह ने अपने विमान में खराबी कर दी जिससे हरिकेन-२ सिलचर और इंफाल के बीच दुर्घटनाग्रस्त हो गया। उसमें राजेन्द्र सिंह की मृत्यु हो गई।

बच्चू सिंह को इसका दोषी माना गया, लेकिन ब्रिटिश शासन युद्ध के दौरान एक प्रभावशाली रियासत के विरुद्ध कुछ कार्यवाही नहीं कर सकती थी, न ही इसके लिए दोष देकर आंदोलन का खतरा और बढ़ा सकती थी। बच्चू सिंह ने न खुद आजाद हिन्द सेना पर हमला किया, न अपने किसी साथी को करने दिया। ब्रिटिश सरकार हाथ मलती रह गई।

वास्तव में द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान बच्चू सिंह सर छोटूराम के अधीन आर्य समाज, अजगर और क्षत्रिय आंदोलन से जुड़ गए थे, जो पाकिस्तान की मांग, और जन्म आधारित आरक्षण के विरुद्ध था तथा सयुंक्त भारत और केवल जरूरतमंदों के संरक्षण के लिए प्रयासरत था।

(अगले अंक में जारी)

कहानी

मुफ्त के लड्डू

विजय बाल्याण 'विभोर'

कचहरी में ज्यादातर वकील सारा दिन खाली ही बैठकर चले जाते हैं। उनके पास सामाजिक, राजनैतिक और क्रिकेट की चर्चाओं के सिवा कोई और काम भूले भटके ही आता है। हाँ, कुछ विरले वकील ऐसे भी हैं जिनके पास काम का ढेर लगा रहता है और फिर भी नया काम आता ही रहता है। आज भी कचहरी में कोई खास काम नहीं था। शर्मा जी और अरोड़ा साहब के बीच मलिक साहब को लेकर सामाजिक चर्चा चल पड़ी।

'अरोड़ा साहब! आजकल मलिक साहब के तो 'दोनों हाथों में लड्डू' रहते हैं।

'दोनों हाथों में लड्डू? क्या मतलब है शर्मा जी।'

'अरोड़ा जी आप तो जानते ही हैं, मलिक साहब आजकल के नए-नए प्रेमी-प्रेमिकाओं की कोर्ट मैरिज करवाते हैं। कुछ दिनों बाद उनको पारिवारिक जिम्मेदारियों का 'हाड़ फोड़ खसरा' दिखने लगता है, तो इन आशिकों के सिर से इश्क का भूत उतर जाता है। फिर वह तलाक के लिए मलिक साहब की सेवा में हाजिर हो जाते हैं। क्यूँ हुआ न दोनों हाथों में लड्डू। भाई शादी के लिए भी वही क्लाइंट और तलाक के लिए भी वही।'

'शर्मा जी! यह तो है। परन्तु आप कुछ भी कहो। मुझे पुराने जमाने का कहो। घटिया सोच कहो। जो मर्जी हो कहो। परन्तु मैं इस प्रेम विवाह के विरुद्ध हूँ।'

'विरुद्ध तो मैं भी हूँ अरोड़ा साहब। भाई जी! माँ बाप कितने जतनों से बच्चो को पालते पोसते हैं। उनको अच्छा भविष्य देने के लिए महंगे स्कूलों में पढ़ाते हैं। खुद पंखे की हवा में और बच्चों को पढ़ने के लिए एसी उपलब्ध करवाते हैं। फिर ये बच्चो कालेजों में आकर किताबें खोलने के स्थान पर इश्क का अकाउंट खुलवा लेते हैं। माँ बाप को कानों कान खबर भी नहीं होती।'

'भाई क्या बीतती होगी उन माँ बाप पर जो बच्चे उनका मान सम्मान मिट्टी में मिला कर रख देते हैं। मेरा मानना है ऐसे बच्चे जिस वकील के पास आते हैं उस वकील को उन्हें समझना चाहिए कि अपने माता पिता की रजामंदी से शादी करो। देर सवेर वह तुम्हारे प्यार को स्वीकार कर लेंगे।'

तभी मलिक साहब का आना हुआ, 'साहब बहादुर यदि ऐसे क्लाइंट को समझा-समझाकर छोड़ने लगे तो भूखों मरने की नौबत आ जाएगी।'

'अरे मलिक साहब! आप तो एक्सपर्ट हो चुके तो इस तरह के केसों में। अब तो जिसे देखो वही आपकी तरफ खिंचा चला आता है प्रेम विवाह करवाने के लिए।'

'समझना तो उन माँ बाप को चाहिए जो ऐसे बच्चों का विरोध करते हैं। वैसे भी भई शर्मा जी! हम तो हवा के रुख को देखकर चलते हैं।'

'हाँ हाँ, वह तो दिख ही रहा है। आजकल तुम्हारे दोनों हाथों में लड्डू जो रहते हैं।'

'आज तो फाइलें ही हैं, आज लड्डू वाले नहीं आए हा हा हा।'

'भूल जाओ मलिक साहब आज के नए दौर में कोई दिन ऐसा नहीं जाता, जिस दिन शादी के लड्डू न बटें। आज भी लड्डू बंटने हैं, परन्तु आपके केस के नहीं।'

'रंगा साहब! ऐसे कैसे हो सकता है? मेरे सिवाय प्रेमी जोड़ों की शादी दूसरा कौन करवा रहा है?'

'भाई मालूम नहीं वहाँ स्मिता मैडम की कोर्ट में एक काचा-काचा जोड़ा आया हुआ है शादी करने।'

'हमें तो मुफ्त के लड्डू खाने से मतलब है। चलो यारो चलते हैं स्मिता मैडम की कोर्ट में।'

मलिक साहब के आदेश पर सभी साथी वकील मुफ्त में लड्डू खाने स्मिता मैडम की कोर्ट की तरफ चल दिए।

वहाँ पहुँचकर देखा तो मलिक साहब उस जोड़े को देखकर ठंडे पड़ गए। उनके मुँह से शब्द फूटे, 'मैडम यह शादी मत करवाओ। यह दोनों मेरे बेटा-बेटी हैं।'

हलाला या हलाल?

राजकुमार कांदु

शबाना का शौहर अब्बास जब से बेरोजगार हुआ था मोहल्ले के लम्पट बदमाशों से उसकी दोस्ती गहरी हो गयी थी। उन्हीं में से एक कादिर उसका लंगोटिया यार बन गया था। पढ़ी लिखी शबाना एक फर्म में सहायक मैनेजर के पद पर कार्यरत थी। गृहस्थी की गाड़ी किसी तरह चल रही थी।

कादिर व मोहल्ले के लम्पटों की सोहबत में अब अब्बास को शराब की लत भी लग चुकी थी। मोहल्ले की गलियों से होता हुआ शराब का दौर अब उसके घर में भी चलना शुरू हो गया था। अब कादिर अक्सर उनके घर में ही डेरा जमाए रहता। उसकी भूखी निगाहें शबाना के जिस्म को मानो कुरेदती ही रहती थीं।

शाम को थकी-मांदी शबाना घर आकर अब्बास और कादिर की तीमारदारी में जुट जाती। कादिर की गंदी निगाहों को पहचानते हुए शबाना ने उसे अपने घर पर न लाने की अब्बास से दरख्वास्त भी की, लेकिन दोस्ती और शराब का भूत उसके दिलोदिमाग पर हावी था, सो वह शबाना की बातों पर क्या ध्यान देता? अब इसी मुद्दे को लेकर आये दिन अब्बास और शबाना में तकरार होने लगी जो दिनोंदिन बढ़ती ही गयी।

एक दिन शाम के समय अभी कादिर अब्बास के घर नहीं पहुंचा था कि तभी उसको लेकर ही शबाना और अब्बास के बीच एक बार फिर बहस शुरू हो गयी। रोज-रोज की बहस का अंत कर देने की नीयत से अब्बास ने गुस्से की अधिकता में चिल्लाकर कह दिया, 'तंग आ गया हूँ मैं तुम्हारे इस रोज-रोज के झगड़े से। में तुम्हें तलाक देता हूँ। तलाक! तलाक! तलाक!' इतना कहकर अब्बास जैसे ही मुड़ा उसने सामने कादिर को खड़े पाया, जिसके हाथों में शराब की नई बोतलें चमक रही थीं।

बोतल एक तरफ रखते हुए कादिर ने अब्बास के दोनों कंधों को पकड़कर झिंझोड़ते हुए कहा, 'अब्बास भाई! ये तुमने क्या कर दिया? शबाना भाभी को तलाक दे दिया? अरे इसके पहले कुछ तो सोचा होता। आज उसी की कमाई से तुम्हारा घर चल रहा है और तुमने उसे ही तलाक दे दिया। तौबा करो और उनसे फिर से निकाह कर लो।'

अब अब्बास को हकीकत का भान हुआ। उसका गुस्सा ठंडा पड़ चुका था। दिमाग के किसी कोने से आवाज आई, 'अबे बेवकूफ! तैश में आकर तलाक दे तो दिया है, लेकिन भूल गया कि आज तक तू उसी की कमाई पर ऐश करता आया है। अब किसकी कमाई पर ऐश करेगा?' अपनी स्थिति का भान होते ही अब्बास के चेहरे पर पछतावा स्पष्ट दिखने लगा था। लेकिन अब क्या हो सकता था? अब तो कादिर गवाह भी बन चुका था उनके बीच हुए तलाक के मामले का। यदि वह नहीं होता तो शायद वह आपस में बात करके मामला रफा-दफा भी करा देता, लेकिन अब कादिर को कौन समझायेगा?

थोड़ी ही देर में अब्बास के दिलोदिमाग में ढेर सारी बातें कौंध गयी और अगले ही पल वह मूर्ति सी बनी खड़ी हुई शबाना के कदमों में झुक कर उससे माफी की मांग कर रहा था, 'शबाना! मुझे माफ कर दो शबाना! मैं गुस्से में बहक गया था। तुम भी तो बार-बार कादिर का नाम लेकर मुझे उकसाती रहती हो, जबकि तुम अच्छी तरह जानती हो वह मेरा पक्का यार है। हर घड़ी मेरा साथ निभाता है और तुम उसी की बुराई करती हो। अब देखो न! इतना होने के बाद भी मेरा वही दोस्त तुम्हारी तरफदारी कर रहा है और तुमसे फिर से निकाह करने के लिए कह रहा है। ऐसा करो जो कुछ हुआ उसे भूल जाते हैं। ठीक है? ऐसा मान लेते हैं न मैंने कुछ कहा और ना ही तुमने कुछ सुना। कोई तलाक वलाक नहीं और न ही कोई निकाह! और फिर किसे पता है कि यहां क्या हुआ है?'

तभी उसे टोकते हुए कादिर बोल पड़ा, 'लाहौल विलाकुवत मियां! ये तुम क्या कह रहे हो? अल्लाह के हुक्म से नाफरमानी की तुमने सोची भी कैसे? क्या तुम्हें अल्लाह का बिल्कुल भी खौफ नहीं है? माना कि तुमने गुस्से में आकर शबाना भाभी को तलाक दे दिया और अब अपनी गलती मानते हुए फिर से उनसे निकाह करना चाहते हो लेकिन आखिर शरीयत भी कोई चीज है? और इस्लाम में रहते हुए तुम शरीयत की अनदेखी नहीं कर सकते। अब अगर तुम शबाना भाभी से निकाह करना ही चाहते हो, तो तुम्हें उनका किसी से 'निकाह ए हलाला' करवाना ही पड़ेगा और उसके बाद ही तुम्हारा और भाभी का निकाह जायज माना जायेगा। हाँ! हालात को देखते हुए एक विचार मेरे मन में आ रहा है। अगर तुम चाहो तो मैं अभी इसी वक्त शबाना भाभी से 'निकाह ए हलाला' करने के लिए तैयार हूं। किसी को कानोंकान कोई खबर भी नहीं होगी। समाज में रुसवाई और खर्चे से भी बच जाओगे और तुम्हारा निकाह भी जायज हो जाएगा। अल्लाह के सामने सुर्खरू बने रह पाओगे। बस एक रात की ही तो बात है और उसके बाद शबाना भाभी फिर से हमेशा के लिए तुम्हारी। एक दोस्त के नाते मैं तुम्हारी इतनी मदद करने के लिए तैयार हूं, अगर तुम्हें ऐतराज ना हो तो? नहीं तो फिर जैसे तुम्हारी मर्जी। मुझे क्या?' कहने के बाद कादिर बाहर दरवाजे की तरफ लपका।

आगे बढ़कर अब्बास उसका रास्ता रोकते हुए बोला, 'दोस्त! तू ही बता भी रहा है और तू ही ठुकरा भी रहा है। मुझे फख्र है तेरे जैसे दोस्त पर, जो हर वक्त काम आता है चाहे जैसा भी वक्त हो। अब ज्यादा ना इतरा और शबाना से 'निकाह ए हलाला' कर ले और फिर सुबह उसे तलाक दे देना ताकि में उससे निकाह कर सकूं। यह सारी बात सिर्फ हम तीनों के बीच ही रहेगी। जमाने की रुसवाई से बचने का यही सबसे मुफीद तरीका है। चल अब फटाफट तैयार हो जा! तुम दोनों मियां बीवी और में काजी! बस! और किसी की क्या जरूरत?'

और सामने ही खड़ी बुत बनी पढ़ी-लिखी शबाना कोई फैसला नहीं कर पा रही थी। क्या वह इस मजहबी जुनून हलाला के नाम पर खुद को किसी वहशी दरिंदे के हाथों हलाल हो जाने दे?

■

पुस्तक समीक्षा

'काव्य रंगोली' का मोहक प्रवेशांक

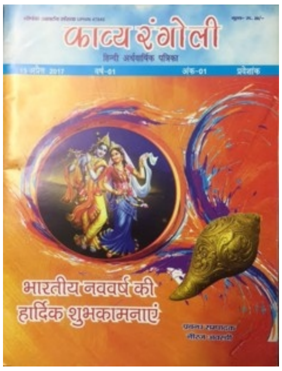

आशुकति नीरज अवस्थी के प्रबंध सम्पादकत्व में हिन्दी की अर्धवार्षिक पत्रिका का प्रवेशांक अपने आप में एक अभिनव प्रयास है। जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है यह मुख्य रूप से काव्य रचनाओं को समर्पित है। किन्तु इसमें छोटे-छोटे लेख और लघुकथाओं को भी सम्मिलित किया गया है।

इसमें जिन रचनाकारों को स्थान दिया गया है उनमें अनेक प्रतिष्ठित रचनाकारों से लेकर कई नवोदित रचनाकार भी सम्मिलित हैं। प्रत्येक रचना के साथ रचनाकार का लघु छायाचित्र और सम्पर्क सूत्र भी दिया गया है।

पत्रिका में प्रकाशित अधिकांश रचनायें स्तरीय हैं। उनमें पर्याप्त विविधता भी है, जिससे पाठक काव्य के अनेक रसों का रसास्वादन कर लेता है। मात्र ३६ छपे हुए पृष्ठों पर शताधिक रचनाकारों की रचनाओं को प्रकाशित कर देना अपने आप में बहुत परिश्रम और दूरदर्शिता का कार्य है। इसमें सम्पादन कुशलता का भी परिचय मिलता है।

पत्रिका का मुखपृष्ठ आकर्षक है, जिस पर राधा-कृष्ण की नृत्यरत मोहक छवि प्रदर्शित है। साथ में नववर्ष का उद्घोष करने वाला शंख भी दिखाया गया है।

पृष्ठ संख्या के अनुसार पत्रिका का मूल्य नाममात्र का ही है, यद्यपि पत्रिका प्रायः निःशुल्क ही प्रेषित की जाती है। कुल मिलाकर पत्रिका का यह अंक बहुत सराहनीय है। पत्रिका का भविष्य उज्ज्वल है इस बात में मुझे कोई संदेह नहीं है।

-- विजय कुमार सिंघल

अर्द्धवार्षिकी : काव्य रंगोली (वर्ष १, अंक १)
प्रबंध सम्पादक : नीरज अवस्थी
पृष्ठ संख्या : ३६, मूल्य : रु. २०

(पहली किस्त)

सात दिन की माँ

नीतू सिंह

भारत देश में सबसे सौभाग्यशाली स्त्री वो होती है जो स्वयं स्त्री होते हुए लड़के को जन्म दे। फिर भागवती को तो चार-चार लड़के थे। भला उससे ज्यादा भाग्यशाली कौन हो सकती है? तिस पर भी अब तक लगता था कि भाग्य की देवी घर में टांग पसारकर लोट गई है, क्योंकि लड़की तो एक नहीं और पहली बहू को भी पहले लड़का ही हुआ। इससे बड़े भाग्य की बात भागमती को क्या हो सकती थी?

पर आदमी का लालच उसका पीछा कहाँ तक नहीं करता? भाग्य की देवी भी अब लेटे-लेटे ऊब गई थी और ऊबती भी कैसे न? आखिर देवी भी तो स्त्री होते हुए केवल लड़कों के आने से ही भाग्य देती थीं। तो वे ऊब गई थीं और इसलिए उठकर चल दीं। राम-भरत-लक्षमण-शत्रुघ्न से लड़के हुए सो हुए अब रामायण को आगे बढ़ाते हुए भागमती उत्तर रामायण में प्रवेश करना चाहती थी और लव के बाद कुश के होने की राह देख रही थी।

प्रसवगृह में विशनपुरावाली जितना कराहती भागमती पोते के लिए उतनी प्रार्थना करती। वैसे उसका नाम विशनपुरावाली नहीं था। किसी लड़की का नाम ऐसा नहीं होता। पर औरतों का तो होता है न, क्योंकि इस गाँव में और आस-पास के सभी गाँव में शादीशुदा औरतों को उनके मायके के नाम से ही जाना जाता है। मायके का मतलब जिस गाँव से लड़की ब्याह कर लाई गई है, उस गांव का नाम ही अब उसका नाम है।

भागमती प्रसवगृह से निकलकर पुरुषों की बैठक की ओर चल दी। देखा तो गंगाधर मड़ैय्या में गाय के अभी-अभी दिए हुए बछड़े को खड़े होने में मदद कर रहे हैं। घंटों से रंभा रही गाय भी अब चुप है।

बछड़े को देखकर भागमती के मुखारविंद से टपका- 'का हो? इहाँ भी...?'

गंगाधर भागमती का मुँह देखकर समझ गए कि बड़ी बहू को अबकी लड़की हुई है। गंगाधर के जीवन में बड़े दिनों बाद ऐसा दुर्भाग्यशाली दिन आया था, दुर्भाग्यशाली क्योंकि गाय ने बछड़ा दिया था, जो किसी काम का नहीं और बहू ने बेटी, जो और भी ज्यादा काम की नहीं। काम की नहीं सो नहीं उल्टे और कर्जा बनकर ही आई समझो, क्योंकि अभी तो ठीक से पैदा भी नहीं हुई कि अभी से जायदाद का एक बड़ा हिस्सा उसकी ससुराल की भेंट चढ़ता नजर आ रहा था।

भागमती इस दुहरी हानि से त्रस्त हो, माथा ठोंककर वहीं मचिया पर बैठ गई। अभी अपने भाग्य को कोसने ही वाली थी कि मड़ैया में शिवबाबू आए और आए भी गाज गिराने।

'अरे गंगा भइया! भोला खातिर लईकी-वईकी देखत हउअ कि ना?'

भागमती बिफर पड़ी। भला भोला के लिए लड़की क्यों देखेंगे? वह तो सबसे छोटा है। जबकि अभी तो बब्बन बाकी है।

भागमती के सारे दर्द आज फूट-फूटकर कराह रहे थे। छग्गन को आज लड़की हो गई और रज्जन तो तीस का हो चला, मगर आठ कुछु नहीं हुआ। पढ़े-लिखे बब्बन को ढूँढ़े लड़की नहीं मिल रही। जो मिलती है, तो घर वाले ठनठन गोपाल या लड़की ही में कोई दोष।

जहाँ कहीं गंगाधर घर-दुआर देखकर रिश्ता कर भी आते तो भागमती लड़की देखने जाती और जाते ही उसे ऐसे तौलती जैसे राजा ऑटोमन के बाजार में दास-दासियां तौली जाती थीं। बेखोट तो कोई लड़की पैदा ही नहीं हुई तो भागमती को मिले कैसे?

छग्गन की शादी में जितना मिला था उससे तो ज्यादा ही मिलना चाहिए बब्बन की शादी में, उसे ज्यादा पढ़ाया-लिखाया गया ही है, इसी बात के लिए।

रज्जन? उसकी तो बात ही मत करो। उसकी तो धोखे से शादी हो गई। जिन्हें मालामाल समझकर ब्याह कराया था, कंगाल निकले, क्योंकि ब्याह के समय खुलकर कुछ मांगा नहीं और ब्याह के बाद पता चला कि दे भी न पावेंगे।

सोचा था लड़की को ताने पड़ेंगे तो अपने आप लछनपुर वाले कुछ न कुछ दे जाएंगे। मगर विशनपुरा वाली का उदाहरण दे-देकर भागमती थक गई। कुछ न आया। आता कैसे? कुछ हो तो आए। जो बढ़िया शादी छग्गन की हुई थी, विशनपुरावालों के यहाँ, वैसी दुबारा न कर पाई। आज भी विशनपुरावाले आते हैं तो कुछ न कुछ बढ़िया ही लाते हैं।

मगर ई मरे लछनपुरवाले खरे बेशर्म के बेशर्म, भैंस की चमड़ी वाले। लडकी को इतना ताना दिया। आते हैं तो भी कोई आव-भगत नहीं, फिर भी कोई असर नहीं। विशनपुरावालों से कुछ नहीं सीखते।

इसलिए इस बार भागमती तय कर चुकी थी कि धोखा नहीं खाएगी। जो माँगना है, माँगकर रहेगी। फालतू की अटकलें नहीं लगाएगी। सब कुछ एकदम साफ। भई जो है सो है। कोई चोरी-डकैती तो है नहीं। देना है तो दो, वरना दूसरा घर देखो। हक है तभी तो माँग रहे हैं। कोई जोर-जबरदस्ती थोड़े न है। करनी है करो, वरना रास्ता नापो।

भागमती के इतने सारे दर्द आज एक साथ उमड़ आए थे। पर उसे पता नहीं था कि शिवबाबू और भी तगड़ी गाज गिराने आए थे। भागमती तो समझी थी कि बब्बन की उम्र का ताना मार रहे हैं। पर वो क्या जाने की बात कुछ और ही है। सो सारे गम एक साथ गलत करती हुई शिव बाबू पर चीख पड़ी, 'अरे हाय हाय! इ का कहत हईं। लड़की खोजात ह। आज न त कल बियाह होई ए जाई।'

शिव बाबू मुस्कुराए। भागमती समझी रतन की शादी में खूब ऐंठे हैं, इसलिए मुसुकरा रहे हैं। जबकि रतन का ही गोइयां बब्बन अभी भी दहेज के लिए भटक रहा है। उसकी मुस्कुराहट भागमती की खिल्ली उड़ा रही थी। मगर तीन-तीन बेटियों वाले शिव बाबू का पलड़ा अभी भी हल्का ही था। एक रतन की शादी करा देने से भारी नहीं हो गया। यही सोचकर दुल्हा ढूँढ़ने का ताना मार दिया, 'आप त अब बैलन क जोड़ी ढूँढीं। उ हो, तीन ठो।'

'अरे भौजी! काहे खुन्सात हईं। हम त तीन ठो खोजबे करब। तोहार छुट्टी भइल बब्बन बो ढूँढला से।'

भागमती को करारा झटका लगा। पिछले कई महीनों से आस-पास के गाँवों में पकड़उआ बिआह की जो घटनाएं हो रही थीं, उसके बारे में भागमती ने सुन तो रखा था, मगर कभी ध्यान नहीं दिया। उसे क्या पता था कि जिस बेटे को सबसे होनहार दूल्हे की उपाधि देकर उसने गर्व से दूल्हों के बाजार में उतारा था, वो बेमोल पकड़उआ बिआह की भेंट चढ़ जाएगा।

शिव बाबू जो गाज गिराने आए थे गिरा के चलते बने। मगर भागमती जो टूट कर गिरीं तो फिर न संभली।

दिनभर दादी ने कुछ नहीं खाया। छोटंकू थाली लेकर जबरदस्ती दादी को खिलाने में लगा था। लछनपुरवाली सब जानती थी। लछनपुरवाली, हाँ उसको भागमती तो लछनपुरवाली ही बुलाती थी। मगर अभी भी उसका पति उसे शांता ही बुलाता। कभी-कभी तो चंचला भी बुला देता था, क्योंकि शांत तो वो बिल्कुल नहीं थी। इसी बात की चिढ़ भागमती को भी थी कि भला इतना क्या प्रेम है इस लड़के को कि सीधा नाम से ही पुकार लेता है। जोरू का गुलाम कहीं का। और नहीं तो क्या, पत्नी से प्रेम का सीधा अर्थ जोरू का गुलाम ही तो होता है। वरना पत्नी प्रेम करने के लिए थोड़े ही न होती है।

तो लछनपुरवाली जानती थी कि उसके कहने से तो उसकी सास खाएगी नहीं और सौर में पड़ी विशनपुरावाली आ नहीं पाएंगी खिलाने, कहीं पोते के खिलाने से ही खा लें। इसलिए छोटंकू को ही समझा-बुझाकर भागमती के पास भेजा उसने।

दादी महारानी ठहरी कठोर पत्थर, अधहन के खौलने से कहाँ गलने वाली थीं। पर फिर भी अभी पसीजने ही वाली थीं कि बर्फ का ठंडा पानी पड़ गया। दरवाजे पर बब्बन मुँह लटकाकर अपनी दुल्हन के साथ खड़ा था।

उनको देखते ही भागमती का पारा आसमान पर पहुँच गया। वह झटके से झनककर उठी और ऐसे चीखकर बोलीं जैसे कोई बिजली का नंगी तार छूकर बोल रहा हो।

'अकेले अईह।' और यह कहते-कहते झटके से दरवाजा दे मारा।

(अगले अंक में जारी)

जिंदगी की घड़ी से/वक्त का एक कोना
काट दिया है मैंने/ठीक वैसे जैसे तेरी यादों का
एक एक कतरा/दर्द के दरिया में/बहा आया हूँ मैं
हाँ मालुम है/तुमने भी कब/याद किया होगा मुझे
तू, तेरा हमसफर/ और शोहरत भरी जिंदगी
इसके शोर में/भीड़ के पिछले क्रम में
हाथ हिलाता मैं/तुझे नजर आ जाऊँ
ये भी तो मुमकिन नहीं/पर मेरी मुश्किल है
तुझे बद्दुआ भी तो/नहीं दे सकता
वरना खुदा से कहता/फलक से कभी तो
तुझे जमीं पर
लेकर आता वो
और तूझे कभी तो
वक्त मिलता कि तू
झार देती गर्द की परत
पुराने उपहारों से

-- अमित कु.अम्बष्ट 'आमिली'

१. घर बाहर/हो रहा घमासान/रो रहे बच्चे
२. भूखे है पेट/माँग रहे है भीख/खाते ठोकर
३. सड़क जाम/आ गया अभिनेता/दबते लोग
४. देश में पैसा/फिर भी मरे लोग/कैसा इंसाफ
५. पीते शराब
नशा सिर चढ़ता
करते दंगा
६. पढ़े हैं लोग
समझदार घर
मन क्रूर क्यों?

-- अशोक बाबू माहौर

सूनसान कंटीली झाड़ी में, गूँज उठी थी जो चित्कार
तेरे हृदय तक पहुँच सकी ना, मेरी दर्द भरी वो पुकार
हाय! विवशता थी ये मेरी, वज्र हृदय का वार था सहना
मिले गर कहीं मेरी माँ तो, हेप्पी मदर्स डे उसको कहना
नौ माह तक कोख में रखकर, पल भर में नाता तोड़ा
जाने किस मजबूरी में या, निज इच्छा से था छोड़ा
फिर भी दुआ करूँगी रब से, जहाँ कहीं हो खुश ही रहना
मिले गर कहीं मेरी माँ तो, हेप्पी मदर्स डे उसको कहना
मेरी दशा पर दया दिखाने, कई पराये आगे आये
मेरी नजरे ढूंढ रही थी
बस तेरी ममता के साये
बोझ नहीं होती है सुन ले,
बेटी है जीवन का गहना
मिले गर कहीं मेरी माँ तो,
हेप्पी मदर्स डे उसको कहना

-- नीतू शर्मा

कपिलों ने इस देश को, दिया बहुत कुछ यार
एक कपिल मुनि हुए थे, जाने ये संसार
जाने ये संसार, कपिल शर्मा को भइया
एक कपिल मिश्रा, अब करते ता-ता थइया
कह सुरेश वो कपिलवस्तु, कपिला, कपि 'लो' में
कपिल देव, सिब्बल कपिल भी हैं कपिलों में
कुत्ते, बिल्ली, लोमड़ी, गदहे, ऊंट सियार
मिलकर के अब करेंगे, एक शेर पर वार
एक शेर पर वार, किए जो चोर घोटाला
एक बड़ा गठबंधन, फिर से होनेवाला
कह सुरेश आता चुनाव तो कूकुर मुत्ते
जैसे लगे दिखाने देखो बिल्ली-कुत्ते

-- सुरेश मिश्र

जानी-पहचानी घर की सीढ़ी
जिसके सोपानों पर नित्य का
मेरी सखी का आना-जाना लगा रहता है
आज यही सीढ़ी उसके लिए बेरहम निकली
वह चढ़ भी न पायी कि वहीं पर गिर गयी
कमर पर पड़ी वक्त की ऐसी मार
खड़ी भी नहीं हो सकती/न लेट सकती है
दर्द के अंगारे, पीड़ाओं की आग
और बेचैनी के भंवर में फंसी जिंदगी से
जैसे उसका खुदा रूठ गया हो
जैसे जीवन की रीढ़ टूट गयी हो
वैरन बनी रात-दिन के दर्दीले दर्द
सोने नहीं देते हैं
कर्मन की गति का बेरहम दर्द को
कोई जन-मन बाँट भी नहीं सकता
जीवन की बहारों को/पीड़ाओं का पतझड़
जीवन को लील रहा/दर्द का दुपट्टा
तन-मन को जकड़ रहा
जीवन की कड़ी परीक्षा में
पीड़ाओं के पहाड़ को
सहनशीलता की कुल्हाड़ी से काट
धैर्य के लिबास में दर्द को ओढ़
वक्त की दी वेदनाओं को
जीवन की लय-ताल के वास्ते
वक्त के दिए दर्दीले जख्म को
सांत्वना के मरहम से पाट

-- मंजु गुप्ता

(पृष्ठ ५ का शेष)

पथरी की समस्या और उपचार

पानी या छाछ में थोड़ी गर्म की हुई फिटकरी घोलकर पी लें। फिटकरी इतनी मात्रा में अवश्य हो कि पानी खारा हो जाये। इससे पथरी आसानी से गलकर निकल जाती है। अगर पथरी पूरी तरह न निकल पाये तो इसे १० दिन बाद फिर से करें।

७. मूली के पत्तों का रस १०० ग्राम दिन में २-३ बार लें। इससे पथरी में बहुत लाभ मिलता है।

८. रोजाना ५ से ६ लीटर पानी पियें। इससे पथरी धीरे-धीरे गलकर निकल जाती है।

९. आयुर्वेद में कुल्थी को पथरीनाशक बताया गया है। इसमें विटामिन ए होता है जो पथरी रोकने में सहायता करता है। यह पथरी बनने के कारण को ही समाप्त कर देती है। इसके सेवन से पथरी छोटे-छोटे टुकड़ों में टूट जाती है। यह मूत्र की मात्रा और वेग भी बढ़ाती है, जिससे पथरी पेशाब के द्वारा शरीर से आसानी से बाहर निकल जाती है।

कुल्थी उड़द की दाल के समान और लाल रंग की होती है। २५० ग्राम कुल्थी को अच्छी तरह साफ करके रात में लगभग ३ लीटर पानी में भिगोकर ढककर रख दें। प्रातः भीगी हुई कुल्थी को उसी पानी में धीमी आग पर चार घंटे तक पकाते रहें। जब तीन लीटर की जगह केवल एक लीटर पानी ही रह जाये तब इसे पकाना बन्द कर दें। इसके बाद ४०-५० ग्राम देशी घी में सेंधा नमक, काली मिर्च, हल्दी, जीरा आदि डालकर इसका छौंक लगायें। इस सूप को दिन में दोपहर को भोजन के स्थान पर पी जायें। या इसे २५०-२५० ग्राम दिन में दो बार पियें। इसके नियमित सेवन से दो सप्ताह में ही बिना ऑपरेशन के गुर्दे और मूत्राशय की पथरी गलकर बाहर निकल जाती है और दोबारा कभी नहीं बनती।

१०. गुड़हल का पाउडर एक चम्मच रात को सोते समय खाना खाने के कम से कम डेढ़ घंटा बाद गर्म पानी के साथ फाँक लें। यह थोड़ा कड़वा होता है। इसके बाद कुछ भी खाना पीना नहीं है। इससे पथरी टूट जाती है। पथरी टूटते समय दर्द भी कर सकती है उसे झेल जायें। ५-७ दिन में गाल ब्लैडर की पथरी पूरी तरह टूटकर निकल जाती है।

परहेज

पथरी के रोगियों को पालक, टमाटर, चुकंदर और भिंडी का सेवन नहीं करना चाहिए। उनको पानी खूब पीना चाहिए और नमक बहुत कम लेना चाहिए। ■

(पृष्ठ ३ का शेष)

उपवास

रहता है जबकि उपवास स्वेच्छा से होता है। अन्न का हमारे विचारों पर बहुत प्रभाव पड़ता है। यूँ ही नहीं कहा गया कि 'जैसा खाओ अन्न वैसा रहे मन'। भीष्म पितामह जैसे ज्ञानी पुरूष ने बाणों की शय्या पर ये स्वीकार किया था कि द्रोपदी पर भरी सभा में हुए अत्याचार का विरोध ना कर सकने का मूल कारण दुर्योधन का दूषित अन्न ग्रहण करना ही था।

उपवास का मूल अर्थ है निकट वास करना। अर्थात भगवान के ध्यान में इतना मग्न हो जाना, उनके इतने समीप होना कि खाने की सुधि ही ना रहे। यदि हम भूखे रहें चाहे अन्न के अभाव में या सामाजिक दबाव में, या किसी धार्मिक प्रभाव में तो हमारा मन खाने के आसपास ही घूमता रहेगा। शरीर तो भूखा रहेगा परंतु मन उस दिन ज्यादा भोजन करेगा क्योंकि पूरा दिन बस खाने के विचार ही आएँगे। ये कोई उपवास नहीं हुआ। उपवास न अभाव से होता है, न दबाव से होता है और न प्रभाव से होता है, उपवास तो केवल भाव से होता है। मेरा आप सबसे विनम्र अनुरोध है कि स्वयं भी भूखे मत रहिए और संभव हो तो किसी अन्य को भी भूखा ना रहने दीजिए लेकिन उपवास अवश्य कीजिए। उपवास आपके तन और मन दोनों को पवित्र कर देता है। ■

बुद्ध के मार्ग पर ही मिलेगी मुक्ति : भंते बोधि रतन

लखनऊ। भारत में मानवता और विश्व कल्याण के लिए दुनिया को बुद्ध का मार्ग दिखाया है। हिंसा, प्रतिहिंसा से किसी भी समस्या का निदान संभव नहीं है। समय की मांग है कि बुद्ध को अंगीकार कर प्राणिमात्र को सुरक्षित किया जाए। ये बातें उ.प्र. इंजीनियर एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष राजेंद्र मोहन सक्सेना ने भगवान बुद्ध जयंती की पूर्व संध्या पर कहीं। वे जियामऊ स्थित अधीश समृति सभागार में सामाजिक समरसता विभाग एवं भारतीय विचार केंद्र, अवध प्रांत के ओर से आयोजित 'भगवान बुद्ध और उनका धम्म' विषयक संगोष्ठी में बोल रहे थे।

मुख्य अतिथि राष्ट्रधर्म प्रकाशन के निदेशक सुरेश चन्द्र द्विवेदी ने कहा कि दीनदयाल के अंत्योदय, विनोबा के सर्वोदय और गांधी के ग्रामोदय से पहले का चिंतन बुद्ध का है। उन्होंने बहुत पहले ही जीव मात्र के कल्याण को धर्म का मूलमंत्र माना था।

संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि भंते बोधि रतन ने कहा कि नरेंद्र मोदी और योगी आदित्यनाथ की जोड़ी ही भारत को विश्वगुरु बनाएगी। उन्होंने कहा कि दिनों ही सरकारें बुद्ध के मार्ग पर दुनिया को आगे ले जाने की कोशिश कर रहे हैं। सामाजिक समरसता विभाग के प्रांतीय संयोजक राजेंद्र ने भगवान बुद्ध के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वह जन्मजात करुणा, दया और अहिंसा की प्रतिमूर्ति रहे।

राष्ट्रधर्म के वरिष्ठ पत्रकार सर्वेश सिंह ने कहा कि दुख की वजह मन है और आत्मा उसका निग्रह। इसलिए आत्मा की आवाज को सुनकर निर्णय लेने की जरूरत है। अन्य वक्ताओं में उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता अमित सिंह सूर्यवंशी और क्षत्रिय महासभा के भानु प्रताप सिंह ने भी अपने विचार रखे। संगोष्ठी का संचालन वरिष्ठ पत्रकार अरुण कुमार सिंह ने किया। ■

मजदूर दिवस पर काव्य निशा

नई दिल्ली। अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस पर लाल कला मंच, नई दिल्ली की ओर से एक काव्य निशा का आयोजन मीठापुर चौक पर किया गया। मुख्य अतिथि वरिष्ठ समाजसेवी का. जगदीश चंद्र शर्मा तथा अध्यक्षता वरिष्ठ समाजसेवी लोक नाथ शुक्ला रहे।

काव्य निशा की शुरुआत लाल बिहारी लाल के सरस्वती वंदना से हुई। तत्पश्चात् के.पी.सिंह कुंवर, मास्टर नानक चंद, गिरीराज गिरीश, असलम जावेद, आकाश पागल, सुरेश मिश्र अपराधी, कृपा शंकर आदि ने काव्यपाठ किया। अन्त में लाल बिहारी लाल को आर्य समाज सभा, पश्चिमी दिल्ली की ओर से पटका एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित भी किया गया। ■

बाल गीत

बन्द हुए स्कूल गली में बच्चे खेले खेल
आगे पीछे दौड़ रहे हैं छुक छुक करती रेल
भरी दुपहरी तपती धरती इनको नहीं सताती
जोर-जोर आवाज लगाकर मम्मी रोज बुलाती
पल पल में झगड़े करते हैं पल में होता मेल
आगे पीछे दौड़ रहे है छुक छुक करती रेल
लूडो कैरम गेम आज कल गुजरे दिन की बात
बन्द हुआ व्यापार सांप-सीढ़ी की क्या औकात
मोबाईल पर गेम खेलते बच्चे रेलमपेल
आगे पीछे दौड़ रहे है छुक-छुक करती रेल
आइस-पाइस खो-खो कोई याद नहीं करता है
हॉकी बालीबाल दौड़ लगता केवल सपना है
गुड्डा-गुड़िया चोर-सिपाही खेल हो गए फेल
आगे पीछे दौड़ रहे है छुक छुक करती रेल

-- आशुकवि नीरज अवस्थी

कार्टून

-- श्याम जगोता

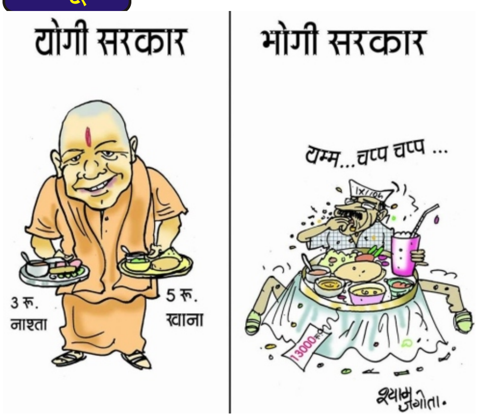

अष्टम साहित्य गरिमा पुरस्कार समारोह संपन्न

हैदराबाद। अष्टम साहित्य गरिमा पुरस्कार समारोह, 'पुष्पक' लोकार्पण तथा कादम्बिनी क्लब की गोष्ठी १६ अप्रैल को तेलंगाना सारस्वत परिषद् सभागार में संपन्न हुई। पुरस्कार समिति की संस्थापिका अध्यक्ष डॉ अहिल्या मिश्र, महासचिव डॉ रमा द्विवेदी तथा कादम्बिनी क्लब की कार्यकारी संयोजिका मीना मुथा ने संयुक्त विज्ञप्ति जारी की।

प्रथम सत्र काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता प्रो ऋषभदेव शर्मा ने की। द्वितीय सत्र में पुरस्कार प्रदान किये गये। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ अहिल्या मिश्र ने की। मुख्य अतिथि एवं उद्घाटनकर्ता श्री आर पी ठाकुर (पुलिस महानिदेशक, आंध्र प्रदेश) रहे। विशेष अतिथि के रूप में श्री राम किशोर उपाध्याय, डॉ रामनिवास साहू, प्रिया चौधरी तथा मानवेन्द्र मिश्र (प्रबध न्यासी, सा ग पु समिति) मंचासीन हुए।

सभी अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया तथा श्रीमती शुभ्रा महंतो ने निराला रचित सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। तत्पश्चात सभी अतिथियों का सम्मान शाल, पुष्प गुच्छ, माला एवं स्मृति चिह्न द्वारा किया गया। मीना मुथा ने कार्यक्रम का संचालन किया और अन्त में प्रवीण प्रणव ने धन्यवाद ज्ञापित किया। ■

जय विजय मासिक
कार्यालय- १००२, कृष्णा हाइट्स, प्लॉट ८, सेक्टर २-ए, कोपरखैरणे, नवी मुंबई-४००७०९ (महा.)
मोबाइल : 09919997596; ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com
वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in
सम्पादक- विजय कुमार सिंघल
'जय विजय' का नेट संस्करण ई-मेल से निःशुल्क भेजा जाता है। रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार सम्बंधित रचनाकारों के हैं। उनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।